

व्यंजना

2018-19



शास्त्रीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्कूलसी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित "A" + ग्रेड की अधिमान्यता प्रदान संस्था

महाविद्यालय पत्रिका समिति 2018–19



डॉ. थानसिंह वर्मा



डॉ. क्ही एस. गोते



डॉ. अनुपमा कश्यप



डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव



डॉ. तरलोचन कौर



डॉ. ज्योति धारकर



डॉ. संजू सिंहा

महाविद्यालय छात्रसंघ पदाधिकारी एवं प्रभारी प्राध्यापक गण 2018-19



बाये से बैठे हुए - डॉ. अजय सिंह, डॉ. अभिनेष सुराना, डॉ. एम.ए. सिद्दकी (प्राचार्य एवं संरक्षक),
डॉ. एस.एन. झा, डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. अनिल कुमार

बायें से ऊपर खड़े हुए - छात्रसंघ सहसचिव कु. देविका, उपाध्यक्ष कु. प्रिया, अध्यक्ष कु. पूजा घोष,
तथा सचिव कु. प्रगति अग्रवाल

महाविद्यालय वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2018-19



प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्धीकी, उच्चशिक्षा मंत्री
श्री उमेश पटेल का स्वागत करते हुए



रजिस्ट्रार श्री आशुतोष साव,
कृषि मंत्री श्री रवीन्द्र चौबे का स्वागत करते हुए



कृषिमंत्री, छ.ग. शासन श्री रवीन्द्र चौबे एवं विधायक दुर्ग
श्री अरूण वोरा पुरस्कार वितरण करते हुए



महाविद्यालय के छात्र एवं छात्रायें समूह गान
प्रस्तुत करते हुए



महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा बस्तरिया नृत्य की प्रस्तुति



महाविद्यालय के छात्राओं द्वारा लोक नृत्य की प्रस्तुति

गतिविधियाँ - 2018-19



कृषि मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन श्री रवीन्द्र चौबे, श्रीमती तामस्कर एवं विधायक दुर्ग श्री अरूण वोरा
महाविद्यालय में सर्वाधिक अंक अर्जित करने हेतु तामस्कर स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान करते हुए



महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति



विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित इंस्पायर इंटर्नशिप साइंस कैम्प का आयोजन
28 अगस्त से 01 सितम्बर 2018 तक महाविद्यालय में किया गया। इसी कैम्प के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2018-19

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

संरक्षक

मो. आरिफ सिद्धिकी
प्राचार्य

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित
'A' + ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संपादक मंडल

डॉ. थानसिंह वर्मा

डॉ. व्ही.एस. गीते

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

डॉ. संजू सिन्हा



यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोटोटाइपिंग विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

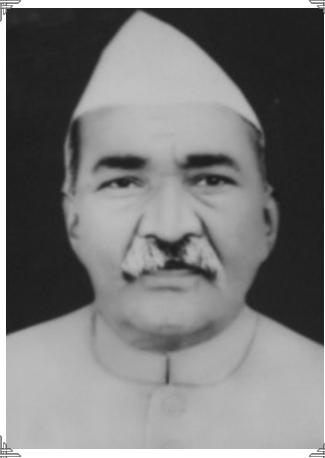
Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

01. विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय	03
02. प्रगति का पथ और हमारा महाविद्यालय - डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव	04
03. आंतरिक गुणवत्ता निश्चयन प्रकोष्ठ (आई क्यू ए सी) - डॉ. जगजीत कौर सलूजा	07
04. जीवन मूल्यों की शिक्षा और नए भारत का निर्माण - कीर्ति कुमार साहू -.....	09
05. बस्तर यात्रा - कांगेर घाटी - कु. वैष्णवी याग्निक	13
06. दक्षिण छत्तीसगढ़ एक नजर - प्रियम वैष्णव -	17
07. मेहंदी (हिना) - रोहित चक्रवर्ती -	23
08. मृतक स्तम्भ - प्रियम वैष्णव -	25
09. वेदों में पर्यावरण रक्षा - प्रो. जैनेन्द्र कुमार दीवान -	27
10. महाविद्यायालयीन छात्र-छात्राओं की कविताएँ -	29
11. Poem in English of college students	42
12. Dark Matter - Pratiksha Tiwari -	50
13. Importance of Life Skills - Anshumala Chandangar -	51
14. दो लेख - 1. संगति - प्रज्जवल ताम्रकार -	52
2. पारिवारिक सौहाद्र कैसे रहे -	55
15. डर को जीतना सीखें (कहानी)- विमल कुमार सिन्हा -	58
16. मुस्कुराहट बचपन की - रविशंकर अरमो -	59
17. महाविद्यालय के विकास में रूसा का योगदान - डॉ. अनुपमा अस्थाना -.....	60
18. सफर बदलते समय का - अविचल शर्मा -	62
19. हिंग्स बोसॉन का असली देवता - सत्येन्द्रनाथ बोस - डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा	67
20. भूमण्डलीय तापमान - प्रो. आई.एस.चन्द्राकर - कु. ऋचा तंवर	69
21. हरित क्रांति का प्रभाव - प्रो. आई. एस. चंद्राकर, कु. अंजली देशमुख	72
23. शताब्दी स्मरण -	76

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय



स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुङ्गारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था। आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये। यहां पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे। इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिस्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये। आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े। नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये। ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नहीं मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया। जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया। तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े। शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये। साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया। ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आखों पर बैठाया था। तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौसिल के चेयरमेन चुन लिये गये। 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक्ट कौसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़े आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी। इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने। म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया। आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुंचाते रहे। शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया। छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुङ्गारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी। ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है।

प्रगति का पथ और हमारा महाविद्यालय

डॉ. प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव (भू-गर्भशास्त्र विभाग)



सत्र 2018-19 मानों हमारे महाविद्यालय के लिए सौगातों एवं उपलब्धियों का वर्ष रहा। अनेक वर्षों से प्रगति के पथ पर अग्रसर हमारा महाविद्यालय इस वर्ष भी प्रगति के अनेक सोपानों को प्राप्त करने में कोई कसर बाकी न रखी। हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग के साथ संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय में 16 वीं छत्तीसगढ़ युवा वैज्ञानिक कांग्रेस का आयोजन किया। छत्तीसगढ़ का कौंसिल ऑफ साइंस टेक्नालॉजी रायपुर द्वारा आयोजित इस युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में विभिन्न विषयों के लगभग 100 से अधिक शोधर्थियों ने हिस्सा लेकर अपने शोध कार्यों की प्रस्तुति दी। विशेषज्ञों द्वारा चयनित शोधर्थियों को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। महाविद्यालय के 04 शोधर्थियों को उनके उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार मिला। सांध्यकालीन सत्र में देश की प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना डॉ. सरिता श्रीवास्तव ने कथक नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति देकर

दर्शकों को आनंदित कर दिया।

इसी सत्र की एक उपलब्धि रही हमारे महाविद्यालय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली के द्वारा प्रायोजित इस्पांयर साइंस इंटरशिप कैंप का आयोजन। इस प्रतिष्ठित कैंप में छत्तीसगढ़ प्रदेश के लगभग 200 शालेय हायर सेकन्डरी स्तर के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। पांच दिनों तक चले इस इस्पांयर कैंप में विद्यार्थियों को देश के ख्याति प्राप्त प्राध्यापकों ने संबोधित किया। विद्यार्थियों को रायपुर स्थित साइंससेंटर तथा भिलाई स्थित मैत्री गार्डन का भ्रमण भी कराया गया। विद्यार्थियों ने महाविद्यालय की उन्नत प्रयोगशालाओं में प्रयोगिक कार्य स्वयं कर विषय से संबंधित नवीनतम जानकारी प्राप्त की।

महाविद्यालय में सत्र 2018-19 में स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अनेक गतिविधियों आयोजित की गई। इनमें अकादमिक, सांस्कृति, बौद्धिक, एवं अनेक विस्तार गतिविधियां शामिल थीं। विद्यार्थियों के



सर्वांगीण विकास एवं भाषा संप्रेषण क्षमता में वृद्धि करने के उद्देश्य से अंग्रेजी विभाग द्वारा एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की गई। नई टेक्स प्रणाली व जीएसटी के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करने हेतु अर्थशास्त्र एवं कामर्स विभाग द्वारा आमंत्रित व्याख्यान भी आयोजित किये गये। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने, सेल्फ डिफेंस तथा ग्रंथालय में उपलब्ध साफ्टवेयर के बेहतर ढंग से उपयोग हेतु कार्यशाला का आयोजन पुस्तकालय एवं सूचना विभाग द्वारा किया गया। महाविद्यालय में खाति प्राप्त साहित्यकारों, वैज्ञानिकों एवं कलाकारों को आमंत्रित कर विद्यार्थियों से सीधा संवाद भी कराया गया।

महाविद्यालय आईक्यूएसी द्वारा दुर्ग जिले के समस्त महाविद्यालय को नई 'नैक मूल्यांकन प्रणाली' से अवगत करने हेतु दुर्ग जिला क्वारीलिटी सर्किल की बैठक भी आयोजित की गई। इसमें दुर्ग जिले के 50 से अधिक निजी एवं शासकीय महाविद्यालयों ने हिस्सा लिया। यूजीसी की विस्तार गतिविधि के अंतर्गत छत्तीसगढ़ अंचल की विकाराल समस्या सिक्ल सेल, एनीमिया से संबंधित

जागरूकता अभियान एवं खत परीक्षण शिविर का संचालन महाविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी एवं समाजशास्त्र विभाग ने किया। प्रयोगशाला तकनीशियनों एवं परिचारकों को नवीनतम उपकरणों की जानकारी देने हेतु दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई। सत्र 2018-19 में महाविद्यालय के 52 नियमित एवं भूतपूर्व विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की नेट/सेट/जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण करने में सफलता प्राप्त की। वहीं रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र व प्राणी शास्त्र की शोध छात्राओं को 'कूमेन्स साइंटिस्ट अवार्ड' भी प्राप्त हुआ।

सामाजिक विज्ञान संकाय के प्राध्यापकों एवं शोध कर्ताओं हेतु 'रिसर्च मेथडोलाजी' पर केन्द्रित तीन दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की गई। इसका आयोजन अर्थशास्त्र, इतिहास एवं समाजशास्त्र विभाग ने संयुक्त रूप से किया। प्रसिद्ध शिक्षाविद स्वर्गीय निर्मलचन्द्र पाठक की स्मृति में महाविद्यालय द्वारा अंतंमहाविद्यालय वादविवाद स्पर्धा आयोजित की गई जिसमें विजेताओं को स्वर्गीय निर्मल चन्द्र पाठक स्मृति ट्राफी प्रदान की गई।

2018-19

2018-19

पावर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से महाविद्यालय में इंटीग्रिटी क्लब का गठन कर विजिलेंस सतकर्ता सप्ताह मनाया गया। महाविद्यालय में आयोजित शिक्षक अभिभावक संघ की बैठक में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने हिस्सा लेकर अपने रचनात्मक सुझाव दिये। मुख्यमंत्री स्वालंबन योजना के अंतर्गत 45 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में 150 से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को भाषा की संप्रेक्षण क्षमता, लेखन क्षमता तथा किसी विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने की विद्यार्थी की दक्षता तथा साक्षात्कार के दौरान ध्यान में रखी जाने वाली बातों का गहन प्रशिक्षण दिया गया।

एनएसएस एंव यूथ रेडक्रास इकाई द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित रक्तदान शिविर में 40 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। इस शिविर का आयोजन एचडीएफसी बैंक तथा पावर ग्रिड कार्पोरेशन के सहयोग से हुआ। स्वच्छता अभिमान के अंतर्गत प्राचार्य ने विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों को स्वच्छता रखने संबंधी शपथ दिलाई। महाविद्यालय परिवार ने समूचे परिसर को स्वच्छ बनाये रखने का संकल्प लिया।

महाविद्यालय के छात्रसंघ में सभी पदों पर मनोनयन के आधार पर छात्राओं ने कब्जा किया। दुर्ग के समीपस्थ ग्राम समोदा में महाविद्यालय का वार्षिक एनएसएस शिविर आयोजित हुआ। इसमें 100 से ज्यादा स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट सेल द्वारा वेदान्ता कंपनी के सहयोग से महाविद्यालय में कैम्पस इंटरव्यू का आयोजन हुआ। इसमें महाविद्यालय के 19

विद्यार्थी चयनित हुए। महाविद्यालय के उदायमान खिलाड़ी गुरप्रीत सिंह ने दक्षिण एशियाई ड्राप रोबॉल चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल कर देश का नाम रोशन किया।

विस्तार गतिविधि के अंतर्गत महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने दुर्ग जिले के 3 ग्रामों करंजा भिलाई, थनोद तथा खम्हरिया में पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता संबंधी जागरूकता अभियान चलाया। छत्तीसगढ़ शासन की संचार क्रांति योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में लगभग 650 विद्यार्थियों को मोबाइल फोन वितरित किये गये। गणित विभाग द्वारा माधवाचार्य गणित प्रतियोगिता तथा मैथस ओलंपियाड का आयोजन किया गया। भूगर्भशास्त्र विभाग में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राध्यापक डॉ. ए.के. शांडिल्य का आमंत्रित व्याख्यान उपलब्धि पूर्ण रहा। बनस्पति शास्त्र तथा प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित विषय विशेषज्ञों के आमंत्रित व्याख्यान विद्यार्थियों को विषय की नवीनतम जानकारी देने में सफल रहे।

महाविद्यालय में स्वीप प्लान के अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इसमें समस्त महाविद्यालय परिवार को वोटिंग मशीन एवं वीवीपैट मशीन संबंधी विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस वर्ष महाविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने नईदिल्ली राजपथ की गणतंत्र दिवस परेड में हिस्सा लिया। वहीं एनएसएस के स्वयं सेवकों ने राष्ट्रीय एकता शिविर में शिरकत की। इस प्रकार अनेक रचनात्मक गितिविधियों एवं विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों से पूर्ण यह सत्र महाविद्यालय की विकास यात्रा में मील का पत्थर सिद्ध होगा, ऐसी आशा है।

**भरोसा भगवान पर है, तो जो लिखा है
तक़दीर में वही पाओगे भरोसा खुद पर
है, तो भगवान वही लिखेगा जो आप
चाहोगे**

आंतरिक गुणवत्ता निश्चयन प्रकोष्ठ (आई क्यू ए सी)

महाविद्यालयों में गुणवत्ता विकास हेतु मुख्य समन्वयक

डॉ. जगजीत कौर सलूजा (समन्वयक आईक्यूएसी)

यूजीसी की स्वायतशासी संस्था नैक, बंगलुरु के निर्देशों के अनुसार नैक द्वाका मूल्यांकित प्रत्येक महाविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता निश्चय प्रकोष्ठ (आई क्यू ए सी) की स्थापना आवश्यक है। इस प्रकोष्ठ का मुख्य दायित्व विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय में आयोजित की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि को गुणवत्ता परक बनाना है।

आई क्यू ए सी सेल की गतिविधियाँ, सांस्कृतिक, खेलकूद, जैसे सभी महत्वपूर्ण घटक शामिल होते हैं यदि हम नैक के दिशा निर्देशों के अनुसार आईक्यूएसी के गठन पर नजर डालें तो प्रत्येक महाविद्यालय में प्राचार्य की अध्यक्षता में गठित होने वाले इस प्रकोष्ठ में वरिष्ठ प्राध्यापक समन्वयक का दायित्व निर्वहन करता है। इसके अतिरिक्त

करना आवश्यक है। प्राचार्य द्वारा गठित आईक्यूएसी का कार्यकाल 2 वर्षों तक रहता है। इसके पश्चात नये आईक्यूएसी का गठन किया जाता है।

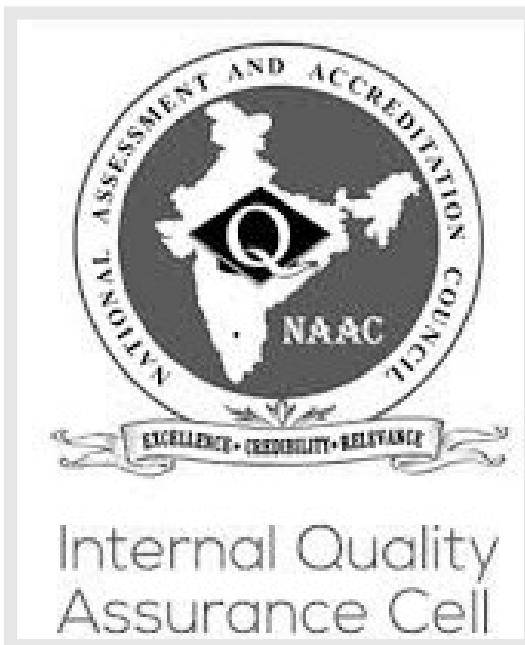
यूजीसी की स्वायतशासी संस्था नैक की स्थापना के पश्चात जब से महाविद्यालयों की ग्रेडिंग हेतु नैक द्वारा मूल्यांकन की प्रक्रिया आरम्भ हुई है तब से महाविद्यालयों में

आपस में नया महाविद्यालय के अंदर विभिन्न विभागों में रचनात्मक प्रतिस्पर्धा में एकाएक इजाफा हुआ है, यह प्रंशसनीय है। महाविद्यालयों के प्राध्यापक, कर्मचारी, प्राचार्य तथा विद्यार्थी नैक मूल्यांकन के दौरान उच्च ग्रेड प्राप्त करने हेतु गुणवत्ता मूलक शिक्षण तथा अन्य गतिविधियों के आयोजन के प्रति सजग हो गये हैं। यही मूल भावना यूजीसी की थी कि नैक द्वारा हम उच्चशिक्षा का उपभोग करने वाले प्रत्येक

महाविद्यालय की दर्ज छात्र-संख्या के अनुसार तीन से लेकर आठ प्राध्यापक सदस्यों के साथ-साथ, स्थानीय समाज, भूतपूर्व छात्र, उद्योग जगत के प्रतिनिधि, छात्र प्रतिनिधि, प्रबंध निकाय के प्रतिनिधि आदि विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधित्व करने वाले लोग भी आईक्यूएसी में शामिल

घटक नियमित विद्यार्थी, अध्यापक, कर्मचारी पालक, भूतपूर्व छात्र स्थानीय समाज सभी के अंदर उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की अवधारणा का बीजारोपण कर सकें।

महाविद्यालयों में प्रथम बार नैक द्वारा मूल्यांकन के पश्चात आईक्यूएसी का गठन अनिवार्य है तथा प्रत्येक



अकादमिक सत्र के अंत में आईक्यूएसी की बैठकों का आयोजन एक अकादमिक वर्ष में 4 बार होना आवश्यक है। इन बैठकों के कार्यवृत्त का विवरण संबंधित महाविद्यालय की वेबसाइट पर भी दृष्टिगत होना चाहिए। महाविद्यालयों की उच्चशिक्षा में गुणवत्ता संबंधी प्रयासों की कुंजी आईक्यूएसी कही जा सकती है। आईक्यूएसी की उल्लेखनीय गतिविधियों में शिक्षकों, शोधार्थियों तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों हेतु सेमीनार/कार्यशालाओं का आयोजन, शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे योग, ध्यान, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, भाषा कार्यशाला आदि का आयोजन, विद्यार्थियों हेतु अकादमिक तथा अन्य पाठ्येतर गतिविधियों का आयोजन विस्तार गतिविधि आयोजित कर विद्यार्थियों को सामाजिक हित के मुद्दों से अवगत कराना, स्वस्थ संबंधी शिविर एवं व्याख्यान का आयोजन, देश-विदेश के ख्याति प्राप्त विद्वानों, वैज्ञानिकों, लेखकों, कलाकारों, खिलाड़ियों के आमंत्रित व्याख्यान आयोजित कर विद्यार्थियों को प्रेरित करना, समय-समय पर वर्तमान पाठ्यक्रमों एवं परीक्षा प्रणाली पर विचार मंथन कर संबंधित एजेन्सियों को रचनात्मक सुझाव देना। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष भूतपूर्व विद्यार्थियों तथा पालकों की बैठक आयोजित कर उनसे सुझाव माँगना तथा इन बहूमूल्य सुझावों को छात्रहित में लागू करना, महाविद्यालय के नियमित विद्यार्थी, शिक्षक पालक भूतपूर्व विद्यार्थी आदि से लिखित फीड बैक प्राप्त कर उनका विश्लेषण करना तथा उस पर प्राचार्य के साथ विचार विमर्श कर सुझावों का क्रियान्वयन करना, प्रत्येक अकादमिक वर्ष में विभागों का अकादमिक ऑडिट करना, तथा विभागों की गतिविधियों में सुधार हेतु रचनात्मक सुझाव देना, आईक्यूएसी तथा विभागों एवं प्राध्यापकों के मध्य समन्वयक की भूमिका निभाना तथा प्राध्यापकों एवं शोध विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय /राष्ट्रीय सेमीनार/संगोष्ठी रिसर्च प्रोजेक्ट/फेलोशिप, छात्रवृत्ति, अवार्ड, शोध पत्रों के प्रकाशन हेतु उच्चस्तरीय शोध पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी

उपलब्ध कराना, महाविद्यालय के विद्यार्थियों को रोजगार उपलब्ध करवाने हेतु विभिन्न प्रतिष्ठानों से संपर्क स्थापित कर कैपंस इंटरव्यू का आयोजन, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास संबंधी कोचिंग, नेट/सेट/यूपीएससी, पीएससी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग तथा अपेक्षाकृत कमज़ोर विद्यार्थियों हेतु रेमेडियल कोचिंग की व्यवस्था कराना प्रमुख है।

इनके अतिरिक्त आईक्यूएसी द्वारा विद्यार्थियों के मन में पर्यावरण संरक्षण की भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से महाविद्यालय का ग्रीन ऑडिट, ऊर्जा खपत में नियंत्रण हेतु एनर्जी ऑडिट कराना भी गतिविधियों में शामिल है। नैक के अनुसार प्रत्येक अकादमिक सत्र के आरम्भ में आईक्यूएसी को महाविद्यालय के अकादमिक कैलेण्डर के साथ-साथ ग्रीन कैलेण्डर भी बनाना अनिवार्य है जिसके अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण से जुड़े विभिन्न दिवस जैसे विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व जल दिवस, ओजोन दिवस, अर्थ डे आदि का समारोह पूर्वक आयोजन किया जाना चाहिए। इन दिवसों के आयोजन से विद्यार्थियों को न केवल नई-नई जानकारी प्राप्त होती है अपितु उसके मन में पर्यावरण संरक्षण की भावना भी उत्पन्न होती है।

अकादमिक सत्र की समाप्ति के पश्चात परीक्षाओं के आयोजन एवं परीक्षा परिणामों का विश्लेषण भी आईक्यूएसी के कर्तव्यों में से एक है। विभागीय स्तर पर परीक्षा परिणामों की प्रत्येक वर्ष समीक्षा तथा उस पर अपने रचनात्मक सुझाव देना तथा अगामी वर्षों में नये पाठ्यक्रम आरम्भ करने संबंधी प्रस्तावों को तैयार करने विभागाध्यक्षों के साथ नियमित बैठक का आयोजन भी आईक्यूएसी की गतिविधियों में शामिल है। इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम देखें तो महाविद्यालयों की अध्ययन अध्यापन व्यवस्था में गुणवत्ता मूलक सुधार तथा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में आईक्यूएसी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जीवन मूल्यों की शिक्षा और नए भारत का निर्माण

कीर्ति कुमार साहू, बीएससी. II (गणित)

मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है स्व-प्रत्यक्षीकरण व व स्व-योग को प्राप्त करना। जब वह जीवन का विश्लेषण और गुण-दोष का विवेचन करता है तो अपने जीवन- मूल्य की तलाश करता है। मनुष्य के जीवन में शारीरिक बल की तुलना में आध्यात्मिक बल अधिक महत्व रखता है और इसी में परम आनंद की प्राप्ति होती है। वेदों और उपनिषदों का आध्यात्मिक सदुपदेश है कि हमें ईमानदार, आशावादी, सच्चा, सशक्त और ऊँचे जीवन-मूल्यों को मानने वाला होना चाहिए। नैतिक तथा जीवन मूल्यों की आवश्यकता काल, स्थान, वातावरण से अपरिवर्तित और शाश्वत रहेगी। इसकी उपादेयता निर्विवाद है। जीवन मूल्य, सार्वकालिक, उत्तम, और प्रासंगिक होने के साथ ही साथ मानव जीवन को व्यवस्थित तथा सकारात्मक बनाते हैं। किसी भी जीवन या मानव मूल्य का तब ही मूल्य है, जब हम वास्तव में उसे मूल्यवान मानेंगे। यदि हम आचारावान नहीं, तब चाहे कितने ही विचारावान हों, मूल्यहीन ही रहेंगे।

जिन मान्यताओं के आधार पर हम अपने को, अपने समाज को न केवल धारण और व्यवस्थित कर पाते हैं, बल्कि दोनों में निहित लोक मांगलिक संभावनाओं को चरितार्थ भी करते हैं, जीवन मूल्य कहलाता है। जीवन मूल्य मानतवता को गरिमा प्रदान करते हैं। जीवन मूल्यों से युक्त व्यक्तित्व ऐसी अमर निधि है, जिसकी प्रतिकृति सुंदर होकर स्वर्णिमता का रूप धारण करती है। इससे जीवन में यश, अर्थ और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मानव जीवन में जीवन मूल्य सर्वोंपरि होना चाहिए, क्योंकि संसार की समस्त उपलब्धियां मानव के लिए हैं, मानव उनके लिए नहीं है। मृत्यु जीवन का यथार्थ है, जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है। जीवन मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण समूह है जिसे अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है, अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

यदि हम गहनता से विचार करें तो पाएंगे कि जो व्यक्ति अपने जीवन मूल्यों पर अडिग रहता है, निडर होकर

जीता है, उसका अंतस आत्मबल से और भी निखर उठता है। जो भी इन जीवन मूल्यों को अपनाता है, उसे कर्तव्य निष्ठा का एहसास होता है। वह निर्भय होकर अपनी बात रखता है, भय उसे नहीं होता क्योंकि उसका कोई स्वार्थ ही नहीं होता। वह हर पल स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है। द्वंद्व से मुक्त रहकर अपना निर्णय लेता है और दुविधा मुक्त हो अपने कार्य का निष्पादन करता है। अगर आप गहराई से समझें तो यही जीवन मूल्य हमारे लिए सुदृढ़ सुरक्षा कवच की तरह काम करते हैं। परिणाम स्वरूप हमें परिस्थितियों से डट कर सामना करने का साहस प्राप्त होता है और हमें लोग सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। जीवन मूल्यों पर डटे रहने से तुच्छ-सी इच्छाएं, आकांक्षाएं, अपेक्षाएं अवश्य ही चूक सकती है, मगर जीवन मूल्यों पर चलकर इच्छाओं और आकांक्षाओं के क्षणिक लाभकारी सुख से लाख गुना श्रेष्ठ सुख शांति, संतुष्टि, प्रेम और स्थायी आदर सहज ही प्राप्त हो सकता है और मानव जीवन के लिए वस्तुतः यही सुख ही श्रेयस्कर है।

जीवन मूल्य मानव जीवन को अधिक से अधिक व्यवस्थित बनाते हैं। मूल्य मानव जीवन में कई प्रकार से कार्यान्वयित होते हैं, जैसे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक आदि। इन जीवन मूल्यों से मानव को सुख शांति मिलती है। वैयक्तिक जीवन मूल्य के अंतर्गत व्यक्ति प्रधान होता है, व्यक्ति की भावनाएं, इच्छाएं प्रमुख होती है ये मूल्य व्यक्ति केंद्रित होते हैं। पारिवारिक जीवन मूल्य के अंतर्गत परिवार को केन्द्र में रखा जाता है। परिवार के सदस्यों, उनकी समस्याओं पर चिंतन मनन किया जाता है। सामाजिक जीवन मूल्य में समाज ही केंद्र बिन्दु होता है इसके अंतर्गत समाज के नीति-नियम, परंपराओं आदि को प्रमुखता दी जाती है। मनुष्य के जीवन में धर्म, श्रद्धा, संस्कार जैसे मूल्य समाहित हैं। धार्मिक मूल्यों के अंतर्गत धर्म, आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों के बारे में विचार विमर्श किया जाता है। समग्रित जीवन मूल्यों में व्यक्ति की वैयक्तिता या पारिवारिकता को महत्व न देकर समाज, राष्ट्र, विश्व मानवता को महत्व दिया जाता है।



मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज से ही उसके अस्तित्व का निर्माण होता है। समाज में रहने के कारण मनुष्य को सामाजिक नीति-नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आकलन उसके जीवन मूल्यों से ही किया जाता है। जीवन की सफलता के लिए यह जरूरी होता है। वैदिक काल से होते हुए गौतम बुद्ध से लेकर और महात्मा गांधी तक अनेक महापुरुष अपने ऊंचे जीवन मूल्यों के कारण ही इतिहास में अमर हो गए। जीवन मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं वे समाज में व्यर्थ माने जाते हैं तथा समाज के लिए बोझ समझे जाते हैं। निठल्ले व्यक्ति कभी भी समाज का उचित मार्ग दर्शन नहीं कर सकते। मूल्यहीन व्यक्ति की जिदंगी पंगु मानी जाती है, जिसमें कोई गति या निरंतरता नहीं होती और सिद्धांतों के अभाव में ऐसे लोग महत्वहीन, अनुपयोगी और परिवार के लिए बोझ स्वरूप होते हैं। सिद्धांत और मूल्य जीवन को ऊर्जा देते हैं। समाज हो, चाहे परिवार सबका संचालन कुछ आदर्शों और सिद्धांतों से होता है। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कुछ मूल्य निर्धारित करने पड़ते हैं। जीवन में कल्याण और सफलता को पाना है तो हमें मूल्य आधारित जीवन का मार्ग चुनना पड़ेगा इसके अभाव में जीवन की सार्थकता सदा संदिग्ध बनी रहेगी।

वर्तमान समय में हमारे जीवन मूल्य भी बदल रहे

हैं क्योंकि नगरीकरण, आधुनिक सभ्यता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि के कारण नई पीढ़ी के लोग सभी पुरातन पंथी विचारधारा से चिपके नहीं रहना चाहते हैं। आज भारत में बहुत से क्षेत्रों का विकास हुआ है, किन्तु यह भी सत्य है कि इस विकास ने व्यक्ति के आदर्श संभवतः छीन लिए हैं। बहुत से लोग इसके लिए पाश्चात्य जीवन शैली की नकल को, तो कई लोग आधुनिक शिक्षा- प्रणाली को दोष देते हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि बच्चों को जीवन मूल्य की शिक्षा देने के लिए न तो आज माता-पिता के पास समय है और न ही विद्यालयों में ऐसा कोई प्रावधान है, क्योंकि हमारा सामाजिक बातावरण ही ऐसा बना हुआ है। आज जो शिक्षा बच्चों को दी रही है उसका उद्देश्य होता है सफलता की अंधी दौड़ में शामिल हो जाना हर कोई बदहास सा चला जा रहा है, वह मशीन बन गया है। बस एक ही भावना-जैसे भी हो दूसरों को पीछे छोड़ना है चाहे उसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े। विद्यालयों में एक विषय सामाजिक अध्ययन के रूप में अवश्य पढ़ाया जाता है पर यह पर्याप्त नहीं है। जहाँ शैक्षणिक स्तर पर अधिकांश बच्चे शत-प्रतिशत के लगभग अंक लेकर उत्तीर्ण हो रहे हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि उनमें जीवन मूल्यों का समावेश हो। मूल्यों के हास होने से समाज में हर प्रकार के अपराध बढ़ रहे हैं। समाज में असंतोष फैल रहा है। छोटे से बड़े नौकरशाह निकम्मेपन और भ्रष्टाचार के अंधकूप में

डुबकियाँ लगा रहे हैं। समाज में आदर्शों का विलुप्त होना, सदाचारों का खंडित होना या नष्ट हो जाना, व्यक्तिगत जीवन मूल्यों का विनाश, नैतिकताओं पर अनास्था तथा सामाजिक चरित्र का पतन मूल्यहीन समाज के ही दुष्परिणाम हैं। निःसंदेह इसमें सुधार की आवश्यकता है, जो व्यक्तिगत और समाज दोनों स्तर पर समानंतर और समान रूप से होना बहुत जरूरी है। शिक्षा में धार्मिक कट्टरता किसी एक धर्म के प्रति आग्रह जैसा भाव नहीं होना चाहिए। सदाचार की वैसी बातें जो सभी धर्मों व सभी संप्रदायों को मान्य हैं, समाहित कर हम नए प्रगतिशील समाज की रचना कर सकते हैं।

मनुष्य के व्यक्तित्व के तीन अंग हैं - आत्मा, मन और शरीर। जब हम तीनों तत्वों को स्वस्थ रखते हैं, तभी सच्चा आनंद प्राप्त करते हैं। मन और शरीर की तुलना में आत्मा का स्थान ऊँचा है। महात्मा गांधी का विश्वास था कि आत्मिक आनंद प्राप्त के लिए मन, वचन और कर्म की निर्मलता आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चारित्रिक विकास कर सकें और वैचारिक सामजस्य स्थापित कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। वास्तव में शिक्षा एक प्रकार की चेतना है और उसकी प्रकृति विकासशील है। देशकाल की परिस्थितियाँ और परम्पराएँ उसे प्रभावित करती हैं। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य होता है मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों, क्षमताओं और योग्यताओं का उचित रूप में परिवर्धन करना, विकास करना, पोषण करना। गीता के अनुसार शिक्षा, समाज व राष्ट्र के नवानिर्माण एवं पुनर्चना का आधार होती है, जिससे व्यक्ति, का सर्वांगीण विकास होता है। शरीर, मन और आत्मा तीनों तत्वों का सामंजस्यपूर्ण विकास, शरीर मन तथा कर्म में निरंतर संयम का अभ्यास करते हुए आत्मानुभूति करने में समर्थ हो पाता है। इस प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों से ही है। कर्म के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है और उत्सुकता को शांत करने वाला ज्ञान ही संस्कार बन जाता है। ज्ञान से हृदय की संस्कृति को सहयोग मिलता है। प्रेम व सत्य का ज्ञान एक दूसरे के पूरक एवं सहयोगी हैं। ऐसे ज्ञान की प्राप्ति के लिए आत्मसंयम तथा इन्द्रिय निग्रह की सलाह दी गई है। क्योंकि नैतिक सिद्धांतों के आधार पर ही सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन की प्रगतिशील पुनर्योजना संभव है। अतः शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि विद्यार्थी सामाजिक बुराइयों को दूर करने में समर्थ हो। अर्थात् चरित्र निर्माण,

नैतिक विकास व हृदय की संस्कृति का निर्माण हो। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य तो मुक्ति है “सा विद्या या विमुक्तये” इसलिए विषयों की उपयोगिता के आधार पर शिक्षा दी जानी चाहिए जो व्यक्ति की मूल-भूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ उसके चरित्र निर्माण में भी सहयोग दे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जीवन मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। जबकि राष्ट्र के नव निर्माण में शिक्षा रीढ़ की हड्डी होती है। यदि हम आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर गहराई से दृष्टिपात करें तो इसकी कमियाँ परिलक्षित हो जाएंगी। हमारे देश के आधे से अधिक शिक्षित व्यक्तियों के सामने कोई लक्ष्य ही नहीं है, उनके सामने अंधेरा ही अंधेरा है। केवल साक्षरता ही शिक्षा नहीं कहलाती, एक अनपढ़ किसान भी जीवन मूल्यों से युक्त हो सकता है। हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर ध्यान देती है, शिक्षार्थी में बोध जागृत नहीं करती, वह जिज्ञासा नहीं जगाती जो स्वयं सत्य को खोजने के लिए प्रेरित करे, आत्मज्ञान की ओर ले जाए जो शिक्षार्थी में जीवन और आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सके। वर्तमान भारतीय में “भारतीयता” की झलक कहीं भी देखने को नहीं मिलती है। विद्यार्थियों को उनके राष्ट्रीय दायित्व से अवगत ही नहीं कराया जाता है। आज का विद्यार्थी महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर, इंजीनियर, नौकरशाह और शिक्षक तो बन रहा है लेकिन जिम्मेदार नागरिक नहीं बन पा रहा है। उसकी सोच में भारतीयता कहीं नहीं झलकती है, राष्ट्र की सेवा का चिंतन भी नहीं है। शिक्षित होकर वह समाज में अपनी भूमिका भी नहीं पहचान पा रहा है उसका शिक्षित होना सिर्फ उसके व्यक्तिगत लाभ तक सीमित रह गया है। समाज को आगे बढ़ाने में उसकी शिक्षा का कोई योगदान नजर नहीं आता क्योंकि जो शिक्षा उसने प्राप्त की है उससे वह न तो समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ समझ पा रहा है और न ही राष्ट्रीय दायित्व का बोध। ऐसे में नए भारत की कल्पना कैसे की जा सकती है? अतः आवश्यक है मूल्य आधारित शिक्षा की, जो मनुष्यों में राष्ट्रीय चेतना पैदा कर सके तभी नए भारत का निर्माण हो पाएगा।

स्वामी विवेकानंद जी बार-बार कहते थे - अपनी अंतरात्मा को प्रकट करने के लिए तैयार करना ही शिक्षा है। अंतरात्मा के प्रति समर्पण से ही विश्व बंधुत्व का भाव जागृत होता है। इससे अपनी माटी के प्रति, समाज के प्रति, देश के प्रति और परिवेश के प्रति समर्पण का भाव भी जाग्रत होता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो प्रत्येक विद्यार्थी को राष्ट्रीय दायित्व का बोध कराए। महज रूपये

कमाने की कला नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाए। विद्यार्थी स्कूल-कॉलेज में भी जीवन मूल्य सीखे। सही मायने में तभी वह शिक्षित होगा।

परिवार तथा समाज बच्चों की प्राथमिक पाठशाला होती है यदि बच्चों के परिवेश में जीवन मूल्यों के तत्व पर्याप्त रूप में उपलब्ध नहीं हैं तो परिवेश में जिन तत्वों की प्रधानता होगी वे उनके जीवन का अंश बन जाएंगे। अतः हर माता पिता को चाहिए कि वे जीवन मूल्यों का पालन करे और अपने बच्चों के अंदर भी जीवन के मूल्यों का समावेश करें। बच्चों के जीवन मूल्यों के विकास में मीडिया के साधनों की अहम भूमिका होती है, इसलिए अभिभावकों की यह जिम्मेदारी है कि अपने पाल्य को मीडिया के साधनों का सरकारात्मक उपयोग सिखाएं, इन साधनों का बच्चे के बालमन पर बहुत जल्दी प्रभाव पढ़ता है।

बच्चों को जीवन मूल्य का पाठ पढ़ाने में पुरस्कार एवं दंड भी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। पुरस्कार से उन्हें प्रोत्साहन मिलता है तथा दंड से उनमें दमन की प्रवृत्ति विकसित होती है। जब बच्चे अच्छा कार्य करें तो उन्हें पुरस्कृत किया जाए, ऐसा करने से वह भविष्य में भी अच्छा कार्य करेगा। इसके ठीक विपरीत जब वह गलत एवं अनुचित कार्य करें तो उसे दंड भी दे। मूल्य पढ़ाये नहीं जाते हैं, अधिग्रहित किये जाते हैं अतः प्रत्यक्ष रूप से विद्यालय का समग्र वातारण मूल्यों के आत्मसातीकरण की प्रेरणा दें, जिसमें विद्यार्थी रहकर उनको ग्रहण करने में समर्थ हो। इस प्रणाली या प्रविधि को समग्र वातावरणीय उपायम कहा जाता है अप्रत्यक्ष प्रणाली में मौन बैठक, प्रार्थनाएं, कथाकथन, नाटक, समूहगान एवं सामूहिक गतिविधियाँ, पात्र-अभिनय खेल, सेवा कार्य देशाटन आदि को रखा जा सकता है। वर्तमान समय में शिक्षक को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए उच्च-शिक्षा में गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए अक्षर एवं पुस्तक ज्ञान के माध्यम के साथ शिक्षा का केवल भौतिक उत्पादन वितरण का साधन न बनाते हुए जीवन मूल्यों से अनुप्राणित कर आत्मसंयम इन्द्रिय निग्रह, प्रलोभनापैक्षा तथा जीवन मूल्यों का केन्द्र बना कर भारतीय समाज, अंतराष्ट्रीय जगत की सुख शांति और समृद्धि को माध्यम तथा साधन बनाया जाए। ऐसी शिक्षा निश्चय ही ‘‘स्वर्ग लोके च कामधुग भवति’’ सिद्ध होगी। कामधेनु बनकर सभी को पूर्ण करने वाली और सुख समृद्धि शांति तथा जीवन मूल्यों का संचार करने वाली होगी। इस प्रकार जीवन मूल्यों की शिक्षा नए

भारत के निर्माण के पथ पर चलने में सहायक होगी।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के अपेक्षित लक्ष्य होने चाहिए। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में अपने जीवन लक्ष्य का बोध आत्मबोध और सर्वांगिण व्यक्तित्व को विकसित करने के साधनों का ज्ञान राष्ट्र की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं का परिचय, उचित साधनों से आजीविका अर्जित करने का क्षमता उत्पन्न करना। यदि जीवन में उच्च आदर्शों, जीवन मूल्यों तथा शिक्षा प्रणाली के अपेक्षित लक्ष्य को महत्व दिया जाए तो परिवार से लेकर राष्ट्र हर क्षेत्र में चहुँमुखी विकास कर सकता है तथा नए भारत का निर्माण निश्चित है।

हमारे देश में चार पुरुषार्थ और चार आश्रमों की व्यवस्था इसलिए की गई है ताकि मानवीय मूल्यों और भावनाओं में संतुलन तथा आचार नियमों में शुद्धि बनी रहे। नैतिकता तथा जीवन मूल्य धारण करना दुष्कर कार्य है जबकि सच्चाई यह है कि सदाचरण जीवात्मा का मूलभूत स्वभाव है। आवश्यकता है हमें जीवन मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करने की ताकि हम समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी बने इसी में हमारी जीवन की सार्थकता है। इसके लिए हमें मूल्य आधारित जीवन जीने के मार्ग का चयन करना पड़ेगा। निःसंदेह मूल्यों का निर्धारण करने में हमारे लिए प्रारंभ में कठिनाइयों आएंगी, हमें जूझना पड़ेगा। जीवन-मूल्य सहज ही निर्धारित नहीं होते इसके लिए त्याग और सेवा के तत्व जरूरी हैं। यदि सबसे पहले पारिवारिक स्तर पर और फिर स्कूल कॉलेज स्तर पर बच्चों को जीवन मूल्य की शिक्षा दी जाए, उनमें दया, त्याग, न्याय जैसी उदात्त भावनाओं को विकसित करने का अवसर प्रदान किया जाए तभी इस प्रकार की समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। इस प्रकार के जीवन मूल्यों की शिक्षा के आधार पर ही सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन की प्रगतिशील पुनर्योजना संभव है। इस लक्ष्य प्राप्ति हेतु सिर्फ विद्यालय स्तर पर ही नहीं अपितु पारिवारिक सामाजिक, राजनीतिक तथा विद्यार्थी को स्वयं के स्तर पर हर संभव प्रयास करने होंगे तभी नए भारत की परिकल्पना मूर्ति रूप ले सकती है और हमारा भारत विश्व गुरु के रूप में स्थापित हो सकेगा।



2018-19

बस्तर यात्रा - कांगेर घाटी

वैष्णवी यागिनिक, एम.ए. II सेमेस्टर (इतिहास)

चित्रकोट का नयनों को ठंडक पहुँचाता जल-प्रताप हो, या तीरथगढ़ का संगीतमय कल-कल बहता झरना, कोटमसर की रहस्यमयी गुफा हो या हरियाली से भरी कांगेर घाटी, माँ दंतेश्वरी की धार्मिक

नगरी दंतेवाडा हो, या शिल्पकला से संपन्न गाँव कोंडागांव हो ये सभी छत्तीसगढ़ की अनूठी पहचान बनाते हैं और छत्तीसगढ़ की नई खोज के लिए पर्यटकों, खोजकर्ताओं, प्रकृतिविदों और इतिहासकारों को आकर्षित करते हैं।

इसी आकर्षण में विज्ञान महाविद्यालय दुर्ग के कुछ विद्यार्थियों व अध्यापकों की टोली निकल पड़ी दक्षिण छत्तीसगढ़ के कुछ अनछुए रहस्यों को छूने, नई खोज करने।

26 फरवरी 2019 की रात में दुर्ग से हमारी यात्रा शुरू हुई और 27 की सुबह हम जगदलपुर में पहुँचकर यहाँ

कुछ देर आराम करने के बाद हम चित्रकोट के लिए रवाना हुए और चित्रकोट के बाद कांगेर पहुँचे।

कांगेर घाटी : कांगेर घाटी जगदलपुर से 30 कि.मी. है। यहाँ तक किसी भी निजी वाहन द्वारा पहुँचा जा सकता है। इसके बाद कांगेर घाटी में प्रवेश के लिए निजी वाहन प्रतिबंध है। घाटी में प्रवेश के लिए 1200/- किराए से सफारी उपलब्ध है, जो हमने ली और घाटी में प्रवेश किया। कांगेर घाटी स्थलाकृति की दृष्टि से अत्यंत संपन्न क्षेत्र है, यहाँ खड़ी ढलान, पठार, घाटी व अनेक जलप्रताप हैं। इसका क्षेत्रविस्तार $18^{\circ}45$ उ. अक्षांश से $82^{\circ}10$ पू. देशांतर के मध्य है व इसका क्षेत्रफल 200 वर्ग कि. मी. है।

इसका विस्तार उत्तर पश्चिम में तीरथगढ़ से, उड़ीसा की सीमा, कोलबा नदी तक है। यहाँ की मुख्य नदी कांगेर नदी है, जो कांगेर उद्यान के बीचों-बीच प्रवाहित

2018-19



होती है। 1982 में इसे कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। यहाँ पर पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों व दुलभ जीव-जंतुओं के कारण इसे 1982 में इसे जैव मंडल रिजर्व घोषित कर दिया गया। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की वन्य प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिसमें वनस्पतियों में सागौन, साल, बीजा, तेंदू, साजा, हल्दु, बांस, कोसम, चार, बेंत, औट प्रमुख हैं। जीवों में यह छत्तीसगढ़ के राज्य पक्षी पहाड़ी मैना का निवास निवास स्थल है। यहाँ पर भृंगराज, उल्लू, वनमुर्गी, जंगली मुर्गा, श्यामा रे केट

ठेल, ढाम्बू, जाइंट स्क्रल भी पाए जाते हैं।

घाटी के अंदर सफारी से भ्रमण करने के लिए किसी भी सड़क को पक्का नहीं किया गया है, सारी सड़कें कच्ची हैं। यहाँ पर दो चैक पोस्ट हैं। दूसरी चैक पोस्ट के समीप मानव बसाहट है, जहाँ हमारी गाड़ी रुकी थी। सफारी के द्वाहर तथा गाइड ने हलबी में बात की थी, जो हमारे लिए अत्यंत नयी व अनोखी बात थी।

यहाँ से हमारी गाड़ी जंगल के कच्चे रास्तों से होते हुए आगे बढ़ी। अलग-अलग पक्षियों को निहाने की उनकी चहचहाहट सुनने की यह सर्वोत्तम जगह है। इसके बाद हम कांगेरघाटी जलप्रताप पर पहुंचे।

कांगेरधारा जलप्रपातः- कांगेर घाटी में होकर गुजरने वाली कांगेर नदी पर स्थित इस जलप्रपात का पानी स्वच्छ रहता है, यही पानी 20 फुट ऊँचाई से गिरता है। यहाँ पहुंचने के लिए उद्यान के द्वार पर स्थित जिला वन कार्यालय की अनुमति और टिकट लेना होता है। कांगेर



घाटी की गोद में होने के नाते इस जलप्रपात की धारा वास्तव में लहराती हुई चट्टानों के बीच कांगेर नदी से निकलती है।

भूवैज्ञानिक मानते हैं कि यह इलाका तलछटी भू-भाग था जिसमें आगे चलकर जलती हुई चट्टाने आ गई जिसकी वजह से इलाका टेढ़ी-मेढ़ी आकृति का हो गया। इसके बाद हम आगे बढ़ते हुए कोटोमसर गुफा पहुंचे।

कोटोमसर गुफा :- यह गुफा 72 मी. गहरी थी, अंधारकारमयी परंतु रहस्यों से भरी। गुफा के अंदर प्रवेश करने का मार्ग अत्यंत संकरा है, परंतु प्रवेश करने के बाद कोई भी व्यक्ति आसानी से भ्रमण सकता है। यहाँ हमारे

प्राचीन काल में लोग मशाल लेकर इन्हें देखने आते थे, जिसके कारण कई पुराने स्टेले कटाइट व स्टेलेगमाईट का रंग काला पड़ गया है। कैलशियम कारबोनेट के ये लाइम स्टोन नए-नए और बनते जा रहे हैं, जो दिखने में काफी सुंदर चमकीले और सफेद होते हैं। आगे हाथी की सूँड की आकृति के चमकीले पथर दिखाई पड़े जो दिखने में काफी सुंदर है, इसके बगल में शेर की आकृति की कैलशियम कार्बोनेट की सरंचना है।

आगे जाने पर टायटैनिक जहाज की आकृति, और शंख की तरह की आकृति दिखाई पड़ती है। गाइड



साथ स्थानीय गाइड भी थे, जिन्होंने जानकारी दी कि कोटमसर गुफा जिसका पुराना नाम गुधानसर गुफा है। इसकी खोज स्थानीय आदिवासियों द्वारा वर्ष 1900 के आस-पास की गई थी। इस गुफा का सन् 1951 में जाने माने जियो ग्राफर डॉ. शंकर तिवारी द्वारा सर्वे किया गया था। इस गुफा की लंबाई 330 मी. है और यह 72 मीटर गहरी है। गुफा में स्टेलेक्टाइट एवं स्टेलेगमाईट चूने की सरंचनायें कई करोड़ वर्ष पुरानी हैं।

ने जानकारी दी कि बरसात के समय यहाँ पानी भर जाता है और एक नाला जो गुफा में बहता है, उसमें बाढ़ आ जाती है जिसके कारण जल से निर्मित कई आकृतियाँ दिखाई पड़ी। गुफा के ऊपर पानी के घुमने के कारण गुंबद की आकृति दिखाई पड़ी है। दो आंखों की आकृति भी दिखाई पड़ी। इसी प्रकार नयी-नयी आकृतियाँ बनती रहती हैं, नये निर्माण प्रकृति के द्वारा होते रहते हैं। यहाँ पर कई प्रकार के जीव जंतु भी पाए जाते हैं। गुफा की

छतपर चमगादड़ बहुत अधिक संख्या में थे। यहाँ पर अंधी मछली भी पाई जाती है। पर्यटकों की सुविधा के लिए गुफा के अंदर सीमेंटीकृत मार्ग का निर्माण किया गया है और रेलिंग भी लगाई गई है।

गुफा के अंदर 300 मीटर का नया कक्ष है। इसकी खोज वर्ष 2011 में की गई। यहाँ पर नई-नई गुफाओं की खोज अभी भी जारी है और अनेक नई-नई गुफाएँ मिल रही हैं। कांगेर घाटी की यह कोटोमसर गुफा अत्यंत सुंदर है। यहाँ का सफर अत्यंत रोमांचकारी रहा, यहाँ जाकर प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर बहुत अच्छा लगा।

तितली पार्क : - तितली जो कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में जगदलपुर से लगभग 35 किमी की दूरी पर स्थित है जो तीरथगढ़ जलप्रताप जाने वाला मार्ग से बायी ओर 1 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। जहाँ तितलियों की कुछ ऐसी प्रजातियां पायी जाती हैं जो विश्व में कहीं नहीं पायी जाती। तितलियों के संरक्षण के लिए विभाग ने सन 2004 में इस इलाके को तितली जोन घोषित किया। पार्क प्रबंधन का दावा



है कि यहाँ तितलियों की कुल 57 प्रजातियां पायी गयी हैं।

तीरथगढ़ जल प्रपात :- यहाँ से तीरथगढ़ की ओर रवाना हुए जिसके कल-कल बहते झरने ने सभी का मन मोह लिया।

तीरथगढ़ के झरने छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में कांगेर घाटी पर स्थित है। ये झरने जगदलपुर की दक्षिण-

पश्चिम दिशा में 35 किमी की दूरी पर स्थित हैं।

“कांगेर घाटी के जादूगर” के नाम से मशहूर तीरथ गढ़ झरने भारत के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में गिना जाता है। यहाँ 300 फुट ऊपर से पानी नीचे गिरता है। कांगेर और उसकी सहायक नदियां ‘मुनगा’ और ‘बहार’ मिलकर इस खुबसूरत जलप्रताप का निर्माण करती हैं। विशाल जलराशि के साथ इतनी भीषण गर्जना के साथ गिरती सफेद रंग की जलधारा यहाँ आए पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव प्रदान करती है।

तीरथगढ़ जलप्रपात को देखने का सबसे अच्छा समय वर्षा के मौसम के साथ-साथ अक्टूबर से अप्रैल तक का है। इस प्रकार बस्तर के जगदलपुर से कांगेरघाटी तक की यात्रा अत्यंत आनंददायी रोमांचकारी व शिक्षाप्रद रही।

दक्षिण छत्तीसगढ़ - एक नज़र

प्रियम वैष्णव, एम.ए. II सेमेस्टर (इतिहास)



मानव सतत् भ्रमण करने वाला प्राणी है। नवीन स्थलों के प्रति उसमें सदैव जिज्ञासा का भाव रहता है। मानव जीवन में सर्वाधिक जिज्ञासु काल विद्यार्थी जीवन है। एक कक्षा में बैठकर वह ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, जो ज्ञान उसे उस स्थल पर स्वयं जाकर होगा। हम इतिहास के विद्यार्थी प्राचीन इतिहास को जानने समझने के लिए सदैव तत्पर रहने वाले लोग हैं। छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य जो अपनी प्राकृति व आदिवासी (वनवासी) संस्कृति से समृद्ध है। हमारे विभाग ने निश्चय किया कि अन्य संस्कृतियों व स्थलों को देखने से पूर्व क्यों ना अपने घर के सबसे प्राचीनतम स्थल को देखें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमने दक्षिण छत्तीसगढ़ के भ्रमण की योजना बनायी।

इस योजना के क्रियान्वयन के लिए हम सब विभागीय सदस्यों ने अथक परिश्रम किया। अंत में 26 फरवरी 2019 दिन मंगलवार को रात्रि में 10:00 बजे हम सब आरामदेय ट्रेवलर में दुर्ग से निकले।

यात्रा का आनंद ही अलग होता है। और अगर यात्रा में मित्रों का साथ हो तो आनंद दोगुना हो जाता है। रात्रि 12 में मौज-मस्ती करते हुए हमने यात्रा प्रारंभ की। रात्रि 12

बजे हमारे मित्र रोहित का जन्मदिन था। सभी प्राध्यापकों व विद्यार्थियों ने मिलकर उसे शुभाशीष व शुभकामनाएं प्रदान की। यात्रा लंबी थी इसलिए हम प्रसिद्ध माकड़ी ढाबा में रुके। कुछ देर विश्राम करने के पश्चात हम जगदलपुर जो बस्तर संभाग का सबसे विकसित शहर है के लिए निकले। सड़कें इतनी अच्छी थी कि हमें आभास भी नहीं हो रहा था कि हम घोर नक्सल प्रभावित कहे जाने वाले क्षेत्र से गुजर रहे हैं। हम प्रसिद्ध केशकाल घाटी पहुंचे। रात्रि का समय था इसलिए घाटी व मोड़ों की भव्यता को हम केवल अनुभव कर सकते थे। मोड़ों के बाद यह घाटी समाप्त होती है।

ब्रह्म मुर्हत प्रातः 4:00 बजे हम जगदलपुर पहुंचे। जैसा सुना था उसके विपरीत यह शहर अत्याधुनिक सुविधाओं से पूर्ण था। हम गोयल धर्मशाला में स्नानादि नित्यकर्म के लिए ठहरे। वहाँ एक नाई की दुकान ने हम सब को प्रभावित किया। वह नाई प्रत्येक दिन प्रातः 5:00 बजे अपनी दुकान खोल देता है। चाहे उसके पास ग्राहक आये या ना आये उसकी अपने कार्य की प्रति लगन व निष्ठा देख हम सब प्रभावित हुए। जगदलपुर से हम प्रातः 7:00 बजे चित्रकूट जलप्रपात के लिए निकले।

चित्रकूट जलप्रताप का मार्ग अत्यंत सुरम्य है। वनवासियों के गांव व उनके घरों की सामान्य परंतु आकर्षित करने वाली बनावट ने सभी को आनंद प्रदान किया। हम प्रातः 10:00 बजे तक मौज मस्ती करते हुए चित्रकूट पहुंचे। जलप्रताप की भव्यता का अंदेशा हमें उसकी ध्वनि से ही हो गया था। जब हमने उस जलप्रपात को देखा तो उसकी भव्यता को देख मुग्ध हो गये। वैसे चित्रकूट आने का सही समय सितंबर-अक्टूबर होता है परंतु फरवरी माह में भी पूर्ण ना सही थोड़ा जलप्रपात तो देखा ही। आगे का कार्य हमारी बुद्धि ने किया हम सब ने विचार किया जब यह जलप्रपात अपने यौवनावस्था में होता होगा तो कितना शानदार व अद्भूत स्वर्गिक आनंद प्रदान करने वाला होता होगा। चित्रकूट जलप्रपात इन्द्रावती नदी पर स्थित है। यह जलप्रपात 95 फीट ऊँचा व 980 फीट चौड़ा है।

यहाँ हम सब ने फोटो खिचवाये। कुछ समय बाद हमारे विभाग्याध्य डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय सर और मैं जलप्रपात के निचले हिस्से में गये। वहाँ से जलप्रपात का दृश्य अद्भूत था। सत्य ही कहा गया है कि ईश्वर ने प्रत्येक वस्तु को बड़ी ही धैर्य व लगन से बनाया है। चित्रकूट में ही हमने दोपहर का भोजन किया। सभी अपने साथ खाने के लिए कुछ ना कुछ सामानी लेकर आये थे। भोजन घर का था व स्वादिष्ट था। वहाँ वन मण्डल का

एक विश्राम गृह भी था परंतु वह केवल विशिष्ट अतिथियों के लिए ही था। शासन द्वारा वहाँ और विश्रामभवनों का निर्माण किया जाना चाहिए। चित्रकूट में वनवासियों द्वारा वन से प्राप्त वस्तुएँ जैसे गोंद, लकड़ी के सजावट की वस्तुएँ, होम, तेंदु आदि बेचने के लिए थी। हम सबने मनमोहक यादों के साथ चित्रकूट को विदाई दी और कांगेर घाटी की ओर बढ़ गये।

‘कांगेर घाटी नेशनल पार्क’ बहुत सी प्राकृतिक सुषमा को समेटे हुए है। यह पहाड़ों व अरण्यों के बीच स्थित है। कांगेर घाटी में हम सबसे पहले प्रसिद्ध कुटुम्बसर की गुफा को देखने वाले थे। इसके लिए वन विभाग को प्रत्येक वाहन का 1400/- रूपए भुगतान कर वहाँ तक पहुँचना होता है। हमने तीन वाहनों का शुल्क अदा किया व गाईड लेकर हम गुफा की ओर निकल पड़े। कुटुम्बसर की गुफा 1327 मीटर लंबी व भूतल से 35 मीटर नीचे स्थित है। इसमें पाँच प्राकृतिक चेम्बर हैं। यह विश्व की दूसरी सबसे बड़ी गुफा है। यह गुफा चूना पत्थर के द्वारा निर्मित है। इसकी खोज वनवासियों द्वारा शिकार करते वक्त अकस्मात् ही हो गयी थी। यहाँ की प्राकृतिक सजावट व भव्यता ने हम सब को आश्चर्य चकित कर दिया। इस गुफा में प्राकृतिक रूप से बैल, मछली, साधु, देवगण, बाध व हाथी की आकृतियां बनी हुई हैं। यह गुफा वास्तव में आद्वितीय है। यहाँ अंधी मछलियाँ भी पाई जाती





है। प्रकाश के अभाव में व वायु की कमी से अंदर का वातावरण बिलकुल भिन्न है। संपूर्ण गुफा के भ्रमण में 1:30 घंटे का समय लगता है। स्थानीय लोगों को रोजगार देने के लिए ही शासन ने इन्हें वाहन चालक व गाईड के रूप में प्रशिक्षित कर नियुक्त किया है। गुफा से बाहर निकलते ही हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हम एक अलग ही दुनिया में आ गये हैं।

यहाँ हममें से कुछ लोगों ने पहली बार तेंदू खाया, जो वहाँ के स्थानीय वासियों के द्वारा बेचा जा रहा था । कुटुम्बसर की गुफा से आते वक्त हमने एक बाड़े में हिरण व नीलगाय देखा। जिसे शासन द्वारा सुरक्षित किया गया था।

कुटुम्बसर की अद्भुत यात्रा के उपरांत हम सब तीरथगढ़ जलप्रपात के लिए निकले। जिसके लिए प्रवेश शुल्क बन विभाग के कार्यालय में जमा करना होता है। कुटुम्बसर से तीरथगढ़ 09 किलोमीटर दूर स्थित है। यहाँ पहुंचकर सर्वप्रथम हमने अपना प्रवेश पत्र वहाँ निरिक्षण अधिकारी को दिखाया उसके बाद हम अंदर प्रवेश कर पाये। तीरथगढ़ जलप्रपात अत्यन्त सुंदर है। जलप्रपात की विशालता देख हम सब उल्लास से भर गये। विशाल जलप्रपात में हम सब ने खूब मौज-मास्ती की व फोटो खिचवाये। यहाँ हम पानी के अंदर भी उतरे। प्राकृतिक जल का जो आनंद व जल के बहाव का जो दबाव हमारे शरीर पर पड़ा वह दिन भर की थकान को मिटाने वाला था। यहाँ का निर्मल स्वच्छ शीतल जल आत्मा को तृप्त करने वाला था। इस जगह की भव्यता से हमें प्रेम हो गया था परंतु हमने इस जगह से बहुत सी सुंदर यादें अपने साथ रखी। और आगे बढ़ गये ।

तीरथगढ़ से आगे हम दंतेवाड़ा के लिए निकले। मार्ग की शांति व प्रकृति का सानिध्य मन को शांत करने वाला था। दंतेवाड़ा से पूर्व 05 कि.मी. में जावंगा नामक स्थल शैक्षणिक हब के रूप में बसाया गया है। हम जावंगा के आदर्श विद्या मंदिर में गये। शाम का समय था और विद्यालय में बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों की अतिरिक्त कक्षाएं संचालित हो रही थी। कन्या छात्रावास के अधीक्षिका से निवेदन करने पर उन्होंने हमें छात्रावास में रहने वाले नक्सल प्रभावित बच्चों से मिलने दिया। उन बच्चों का आत्म विश्वास व रुचि देख हमें अत्यंत प्रशंन्त हुई। वहाँ से हम

दंतेवाड़ा की ओर निकले पड़े। दंतेवाड़ा एक सुव्यवस्थित शहर जैसा दिख रहा था। दंतेवाड़ा रात्रि के 7.00 बजे पहुंचे । हमारे रात्रि विश्राम की व्यवस्था यहीं की गयी थी। हमने दंतेवाड़ा के इण्डियन कॉफी हाऊस में भोजन किया। भोजन सादा परंतु स्वादिष्ट था। हमने रात्रि विश्राम दंतेवाड़ा महाविद्यालय के छात्रावास में किया।

प्रातः: काल 07: 00 बजे तक हम सब स्नानादि नियमों से निवृत होकर माँ दंतेश्वरी के मंदिर जाने के लिए तैयार हो गये। रोचक बात यह है कि हमारे विभागाध्यक्ष छात्रावास से ही भारतीय परिधान में तैयार हो कर निकले। हम सब शक्तिपीठ माँ दंतेश्वरी से मंदिर के लिए निकल पड़े। महाविद्यालय में मंदिर 20 मिनट की दूरी पर स्थित है। मंदिर के प्रवेश द्वार से हम प्रागंण में पहुंचे। मंदिर में स्वच्छता चहुँओर थी। मंदिर का सभा मण्डप लकड़ी का बना हुआ था। मंदिर के प्रवेश द्वार पर गरूड़ स्तंभ स्थित था, जिसकी मान्यता श्रद्धालुओं में बहुत है। दंतेश्वरी मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ सीले हुए कपड़े पहनने की अनुमति नहीं है, इसलिए हम सब ने धोती पहना। अंदर प्रवेश करने पर पाषण निर्मित अनेक छोटे मंदिर जिसमें गणेश, शिव आदि देवी देवताओं के मंदिर स्थित थे। मंदिर के अंदर कई शिलालेख भी स्थित हैं। मुख्य गर्भ गृह में प्रवेश से पूर्व विशाल गणेश की पाषण निर्मित प्रतिमा स्थित है। गर्भगृह के अंदर अष्टभुजा स्वरूप माँ दंतेश्वरी विराजमान है। यहाँ मान्यता है कि सती के भूम्ष होने पर जब विष्णु ने उनके शरीर के टुकड़े किये तो माँ सती का दांत यहाँ गिरा था। इस मंदिर का वातवरण धार्मिकता से परिपूर्ण



था। देवी के दर्शन के पश्चात हम डंकनी-शंखिनी नदी को देखने गये। दोनों नदियां नालों के रूप में परिवर्तित हो गयी थीं। मानव की प्रगति ने प्रकृति को सदैव नुकसान पहुँचाया है। नदी का पानी गंदा व अस्वच्छ था। मंदिर के पृष्ठ भाग में एक उद्यान का निर्माण किया गया है, जो बड़ा ही मनमोहक है। हम सब ने माँ दंतेश्वरी से मंगलमय जीवन व ज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना की।

दंतेश्वरी मंदिर से आगे हम बारसूर पहुंचे। यह दंतेवाड़ा से 29 किसी दूर स्थित है। बारसूर में हमने गणेश मंदिर देखा, जहाँ गणेश जी की दो पाषाण निर्मित प्रतिमाएं स्थापित हैं। गणेशजी का निर्माण कार्य बड़ा ही कुशलता से किया गया है। गणेश मंदिर के प्रांगण में ही मंदिरों के भग्नावेश स्थित है, जिनमें एक शिव मंदिर भी है। गणेश मंदिर के पश्चात 500 मी. की दूरी में स्थित मामा-भांजा मंदिर गये। यह मंदिर काकतीय वंश के समय बनाया गया माना जाता है। इस मंदिर की दीवारों पर तमिल भाषा में लेख लिखे गये हैं। मंदिर के प्रत्येक तल पर विभिन्न फूलों की आकृतियाँ बनी हुई हैं और मंदिर के शीर्ष के चारों ओर 04 देवियों की प्रतिमाएं स्थापित हैं। मंदिर के गर्भगृह से मुख्य देव की प्रतिमा गायब थी। उसके स्थान पर गणेश व नृसिंह पाषण प्रतिमा स्थापित की गयी थी। मंदिर से निकलते वक्त हमने एक स्थानीय व्यक्ति को सलफी के पेड़ से

सल्फी का रस निकालने हुए देखा। हमने जिज्ञासा वश उस रस को चखा भी परंतु उसका स्वाद दही व नारियल पानी के मिश्रण जैसा था, जो मुझे पसंद नहीं आया। वही पर हमने नाश्ता भी किया व स्थानीय बच्चों से बातें भी की। स्वल्पाहार के पश्चात हम बत्तीसा मंदिर की ओर निकले। यह मंदिर 32 खंभों पर स्थित है इसलिए इसे बत्तीसा मंदिर कहते हैं। यहाँ शिव के दो मंदिर हैं व उनके आगे नंदी की बड़ी ही सुंदर प्रतिमा स्थापित की गयी है।

बारसूर से आगे बढ़कर हम गामावाड़ा की ओर बढ़े। गामावाड़ा अपने मृतक स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है। गामावाड़ा तक का मार्ग वृक्षों से आच्छादित है। यह क्षेत्र अतिनक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आता है। परंतु हमें यहाँ किसी भी प्रकार के भय का वातावरण नहीं दिखाई दिया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा मृतक स्तंभों के महत्व को समझते हुए उसे संरक्षित किया गया है। यहाँ सैकड़ों छोटे-बड़े बनवासियों के मृतक स्तंभ स्थित हैं। मृतक स्तंभों को बनवासी संस्कार द्वारा स्थापित किया जाता है और इस पर मृतक के जीवन से संबंधित घटनाओं का लकड़ी के शीर्ष द्वारा वर्णन किया जाता है। इस क्षेत्र में टेसू (पलाश) व महुआ के अनेक पेड़ लगे थे। कई आधुनिककालीन मृतक स्तंभ भी यहाँ स्थित थे। यहाँ से हम कुछ दूर आगे की बादियों को देखकर वापस दंतेवाड़ा लौटे। दंतेवाड़ा में हम



महाविद्यालय गये। जहाँ हमारे भोजन व विश्राम की व्यवस्था करने वाली इतिहास की प्राध्यापिका डॉ. शिखा सरकार को हम सबने हृदय से धन्यवाद दिया। उन्होंने पूरे भ्रमण काल में हमारी सहायता की। हमने उन्हें दुर्ग आने का निमंत्रण भी दिया।

दंतेवाड़ा से निकलकर हम जगदलपुर की ओर लौटे। मार्ग बड़ा ही सुगम था। रास्ते में हमें एक हाट दिखाई दिया। जिजासा वश हम वहाँ रुके और वहाँ की स्थिति व वातावरण का निरीक्षण किया। वहाँ हमने देखा की वनवासी महिलाएं भी अपने बच्चों के साथ ताड़ी का सेवन कर रही थीं। ये यहाँ सामान्य बात है। परिवार के सभी सदस्य प्रत्येक कार्य में ताड़ी आदि द्रव्यों का सेवन करते हैं। वहाँ एक जगह मुर्गों की लड़ाई चल रही थी, जिसे सभी बड़े गौर से देख रहे थे। यह उनके मनोरंजन का साधन था।



जगदलपुर में हमने मानव विज्ञान संग्रहालय का भ्रमण किया। यहाँ विद्यार्थियों वे लिए प्रवेश शुल्क 10/- स्थानीय या सामान्य नागरिकों के लिए 20/- विदेशियों के लिए 250/- प्रवेश शुल्क था। यह संग्रहालय वनवासी संस्कृति को सरलता से प्रदर्शित करता है। इस संग्रहालय में छत्तीसगढ़ की सुंदरतम काष्ठ, शिल्प व वनवासियों के जीवन का प्रदर्शन किया गया है। इस काष्ठ स्तंभ में अब





दीमक लग रहा है। इसलिए इसे संरक्षित करने का प्रयास विशेषज्ञों द्वारा किया जा रहा है। संग्रहालय के अंदर 6 कक्ष हैं, जिनमें संपूर्ण आदिवासी (वनवासी) जीवन को दर्शाया गया है। वनवासियों के अस्त्र-शस्त्र, आभूषण, शिकार करने हथियार, दैनिक उपयोग की सामाग्री, देवी-देवाताओं की प्रतिमा व विभिन्न अनुष्ठानों में काम में आनेवाली वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। यहाँ लकड़ी से निर्मित एक नाव व वनवासियों के अनेक प्रकार के चित्र भी स्थित है। संग्रहालय के बाहरी प्रांगण में घोटूल सहित विभिन्न जनजातियों के घरों की प्रतिकृति भी बनायी गयी है। मानव विज्ञान संग्रहालय के पश्चात् हम बस्तर के राजमहल को देखने गये। राजमहल उतना भव्य नहीं था परंतु लंबे समय से राजनीति का केन्द्र होने के नाते श्रद्धा व आस्था का केन्द्र है। राजमहल के दरबार हाल में प्रवेश की अनुमति है। दरबार हाल में बस्तर के पूर्व राजा व रानियों की तस्वीर रखी गयी है। मुख्य केन्द्र बिंदु स्वर्णिम काष्ठ निर्मित राजसिंहसन थे जो सुंदर दिख रहे थे। राजमहल के प्रवेश द्वार में ही छोटी दंतेश्वरी का मंदिर है। प्रत्येक दशहरे में यहाँ से रथ यात्रा निकलती है, जिसका आयोजन रियासत काल से किया जा रहा है।

जगदलपुर से निकलकर हम कोण्डागांव शिल्पग्राम पहुंचे। जहाँ हमने 'डोकरा कला' से निर्मित वस्तुओं को देखा। हम रात्रि 07:00 बजे कोण्डागांव पहुंचे तब तक कार्यशालाएं बंद हो गयी थीं, परंतु विशेष आग्रह करने पर हमें कार्यशाला का भ्रमण करवाया गया व कलाकृतियों के निर्माण व विभिन्न 12 चरणों के बारे में बताया गया। यह कला वास्तव में अद्भूत है व इसे संरक्षण

व संवर्द्धन की आवश्यकता है। वहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा अब इसे संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। हमने यहाँ बहुत सी कलाकृतियों को खरीदा। कलाकृतियों का मूल्य अधिक था परंतु उसमें लगने वाली मेहनत भी बहुत अधिक थी। हमें डोकरा कला के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कलाकार जयदेव बघेल राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं। उन्होंने हमें इस कला के संरक्षण व संवर्द्धन करने की प्रार्थना की व कार्यशाला में अल्पकालिक कार्य करने वा सीखने के लिए आमंत्रित किया।

कोण्डागांव में हमने रात्रि कालीन भोजन किया, जो अत्यंत स्वादिष्ट था। भोजन के बाद हम रात्रि 10:00 बजे दुर्ग के लिए निकले। मार्गों की निर्माण शैली ने हम सभी के मन को आनंदित किया। हम सब पुनः माकड़ी ढाबा में अल्पकालिक विश्राम के लिए रुके और उसके बाद ब्रह्म मूर्हत प्रातः : 4.00 बजे दुर्ग पहुंच गये।

यह यात्रा अत्यंत ही सुखद व मन को उत्साहित करने वाली थी। बस्तर के बारे में जैसा लोगों से सुना था, बस्तर ठीक उसके विपरीत शांत सुंदर है। वनवासियों की सरलता व सहजता ने हमारे मन को मोह लिया। उनका सरल जीवन व शांत वातावरण हमें हमारे भौतिकता से परिपूर्ण जीवन के समक्ष बहुत बड़ा दिख रहा था। हम अपने आपको उनके जीवन व संस्कृति के प्रति आस्था के समक्ष तुच्छ पा रहे थे। सत्य है कि बस्तर हमें स्वर्णिक आनंद प्रदान करने वाला रहा और हमें पुनः अपने कार्यों में तल्लीनता से लौटने के लिए प्रोत्साहित करने वाला था। शासन को दक्षिण छत्तीसगढ़ में पर्यटन के क्षेत्र में और अधिक कार्य करने चाहिए, अच्छे विश्राम भवनों व होटलों की व्यवस्था करनी चाहिए। हम सब ने यात्रा का भरपूर आनंद लिया। आगे भी इस तरह के शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन किया जाये, इसके लिए विभागाध्यक्ष व प्राध्यपकों से निवेदन किया। सच में दक्षिण छत्तीसगढ़ अद्भूत अविश्वसनीय व अकल्पनीय है। सत्य ही कहा गया है-

अतुल्य ! छत्तीसगढ़ ?



मेहंदी (हिना)

रोहित चक्रवर्ती, एम.ए. II (इतिहास)

मेहंदी का स्वरूप : मेहंदी के पेड़ की पत्तियों की लम्बाई लगभग 1 इंच से डेढ़ इंच की होती है। मेहंदी के पत्तों का आकार अण्डे के जैसे होते हैं। इसके फुल बहुत ही सुगन्धित होते हैं तथा फल मटर के समान गोलाकर होते हैं जिनके भीतर छोटे-छोटे त्रिभुज के आकार के अनेक बीज होते हैं। मेहंदी का वानस्पतिक नाम लासोनिया इनर्मिस है।

मुख्यतः इसके पौधे में हमेशा हरियाली पाई जाती है पर अक्टूबर-नवम्बर में फूल और उसके बाद फल लगते हैं।

मेहंदी के पौधों में पाये जाने वाले गुण :-
मेहंदी की पत्तियों में टैनिन तथा वासोन नामक मुख्य रजक

द्रव्य तरल पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त मौलिक एसिड, ग्लूकोम, मैतिटोल, वसराल और न्यूरिलोन आदि तत्व मेंहंदी में पाये जाते हैं। यह लितेसिई कुल का कांटेदार पौधा है। इससे एक गाढ़े भूरे रंग का सुगन्धित तेल भी प्राप्त होता है।

मेहंदी का अरब व भारत में इस्तेमाल :-
अरब के साथ-साथ भारत में भी धीरे-धीरे मेहंदी का इस्तेमाल बढ़ रहा था। मुगलों में मेहंदी की रीति को देखते हुए ही हिन्दू परिवारों में भी धीरे-धीरे इसका प्रचलन शुरू हो गया। बहुत कम लोग जानते हैं कि मेहंदी तो हजारों वर्ष पहले ही हिन्दू धर्म में अपनी मान्यता प्राप्त कर ली है।

हिन्दू पुराणों में मेहंदी उत्पत्ति :- हिन्दू

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब माँ दुर्गा, देवी काली के रूप में राक्षसों का संहार कर रही थीं, तो क्रोध में देवी को इस बात का अहसास ही नहीं हुआ कि उनका कपाल दैत्यों के रक्त से पूरी तरह भर गया है। और सारे राक्षसों का संहार हो चुका है लेकिन उनका रूप काली भयावह था। देवी के इस रूप को देखकर ऋषि मुनि और अन्य देवता परेशान हो गए। सभी देवराज इंद्र के पास पहुंचे। देवराज ने बातया की माँ काली का क्रोध केवल शिव जी ही शान्त कर सकते हैं। सभी की बात सुनकर माता को कहा की अपका यह रूप देखखर सभी देवता गण भयभीत हो रहे हैं। इस बात को जान कर माँ ने अपनी इच्छा शक्ति, से एक देवी को प्रकट किया जिसका नाम सुर सुंदरी कहलाया और वही माता सुरसुंदरी माँ काली के आदेश से औषधि का रूप लेकर माता के हाथों व पैरों पर सज गई। उत्ती से मेहंदी को औषधि माना जाता है वही ये मेहंदी पौधा पूजा व साधना के लिए आवश्यक अंग बन गया।

मेहंदी औषधि के रूप में :-

(1) खून साफ करने के लिए इसे रात भर साफ पानी में भीगोकर रखे और सुबह इसके पानी को छनकर पीए।

(2) घुटनों या जोड़ों के दर्द में मेहंदी व अंडी के पत्तों को बराबर मात्रा में पीस कर लगाने से समस्या का निवारण होता है।

(3) सिरदर्द या माइग्रेन जैसी परेशानियाँ के लिए उपयोगी है इसे पीस कर सिर पर लगाने से काफी फायदा मिलता है।

(4) जलने पर शरीर के किसी अंग के जल जाने पर मेहंदी के छाल या पत्तों को पीसकर लगाने से राहत मिलती है।

(5) तासीर में ठंडी होने के कारण मेहंदी का उपयोग शरीर में बढ़ी हुई गर्मी को कम करने में किया जाता है। हाथों और पैर के तलवों में मेहंदी लगाने से शरीर की गर्मी कम होती है।

शादी में मेहंदी का महत्व :- इसका रंग जितना खिलता है हमारे घर की खुशिया भी उतनी ही

खिलकर आती है। उत्ती तो हर दुल्हन के हाथ में मेहंदी का रंग को बड़े गौर से देखा जाता है।

प्यार का प्रतीक माना जाता है कि दुल्हन के हाथों की मेहंदी का रंग जितना अच्छा व गढ़ा होगा दामपत्य जीवन भी उतना ही रंगीन व खुख़हाल होगा।

दूल्हा-दुल्हन के हाथों में मेहंदी का रंग जितने ज्यादा दिनों तक रहता है उतना ही दोनों का जीवन खुशियों से भारा रहता है यह शुभ संकेत है।

एक मान्यता यह भी है या लोगों में प्रचलित है कि विवाह या शुभ अवसरों में लगाई गई मेहंदी से बीते हुए अच्छे पलों की सृति की पुष्टि होती है।

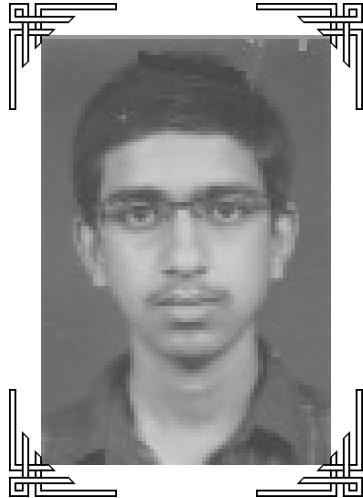
आज कल मेहंदी को अलग-अलग प्रकार के डिजाइनों में लगाया जाता है। चित्र, घोड़े, हाथी, इत्यादि होली, बारात का पूरा दृश्य दुल्हन के हाथों में बनाया जाता है।

मेहंदी रोजगार के रूप में :- मेहंदी के पौधे से औषधि तो बनती है जिससे भी रोजगार प्राप्त होता है। परंतु बदलते समय में महेंदी के प्रचलन ने बेरोजगार युवतियों व युवकों को रोजगार प्रदान किया है। मेहंदी का विभिन्न नामों से लगया जाता है। जैसे मरवाड़ी, जैनी, गुजराती, अरेबीक इत्यादि।



मृतक स्तम्भ

प्रियम वैष्णव, एम.ए. II सेमेस्टर (इतिहास)



संस्कार मानव के जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनुशासित व क्रमबद्ध करती है। आर्यों की सभ्यता में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। वैसे ही वन में रहने वाले वनवासियों में भी संस्कारों का अत्यधिक महत्व है। ये वनवासी वनों में रहकर आज भी अपनी प्राचीन संस्कृति से जुड़े हुए हैं और उसका अनवरत पालन कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ की शस्य श्यामला धरा इस वनवासी संस्कृति व संस्कारों से परिपूर्ण है। छत्तीसगढ़ में 30.62 प्रतिशत वनवासी निवास करते हैं।

जिसमें गोंड जाति 16 प्रतिशत निवासरत है। गोंडों की अपनी संस्कार परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। इसी गोंड जाति की एक उपजाति माड़िया है जिसे एल्विन महोदय ने बस्तर के दण्डामि माड़िया कहा है। इस जनजाति में एक विशेष प्रकार की मृतक संस्कार की परंपरा प्रचलित है, जिसमें जनजाति के लोग अपने मृतकों की स्मृति में मृतक स्तंभों की स्थापना करते हैं।

यह मृतक स्तंभ की परंपरा प्राचीन काल से रही है परंतु आज यह कुछ जाति विशेष में ही जीवित है। इस प्रथा में मृतक के परिवार के सदस्य मृतक की याद में एक स्मृति स्तंभ की स्थापना करते हैं। प्रारंभ में यह स्तंभ विशाल

प्रस्तर खंडों से निर्मित होते थे, जो नीचे से ऊपर की ओर नुकीले होते जाते थे। समय के साथ साथ लकड़ी के प्रयोग का चलन प्रारंभ हुआ। परिवार के सदस्य अपने देव पहाड़ से ही पत्थर या लकड़ी लाते हैं। उस लकड़ी पर मृतक के जीवन से जुड़ी घटनाएं व जानवरों, पशु-पक्षियों का चित्र अंकन किया जाता है। सांप, मेड़क, हाथी, शेर, तेंदुआ आदि व पेड़ों में महुआ, सरई, तेदु, सल्फी आदि का अंकन किया जाता है। इन स्तंभों में मृतक की मृत्यु का कारण भी अंकित



2018-19



2018-19



होता है। कई स्थानों पर प्रस्तर खण्ड के शीर्ष पर लकड़ी का खण्ड लगाया जाता है। जिस पर कलाकृतियों का आंकन किया जाता है। माड़िया जनजाति में मृतक स्तंभों का विशेष महत्व है। उनकी मान्यता है कि अगर लकड़ी के स्तंभ पर घुन लगकर नष्ट हो जाये तो पूर्वज को मोक्ष की प्राप्ति हो गयी है। उसी प्रकार अगर प्रस्तर खण्ड स्वयं से गिर जाये तो मृतक को स्वर्ग की प्राप्ति हो गयी माना जाती है। मृतक का परिवार मृतक स्तंभ की स्थापना के समय गूनिया (पूरोहित) व अपनी जाति के समस्त लोगों के लिए भोजन व महुआ की व्यवस्था करता है।

आजादी के बाद वनों को संरक्षित करने के कारण आदिवासियों ने सीमेट से मृतक स्तंभ बनाने प्रारंभ कर दिये हैं। जिसमें मृतक को धरती से स्वर्ग तक का सफर हवाई जहाज, मोटर गाड़ी आदि में करते हुए दिखाया जाता है। मृतक स्तंभों में चित्रकारी करने का भी प्रयास किया जाता है। छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक मृतक स्तंभ रामाबाड़ा क्षेत्र में प्राप्त होते हैं। ये मृतक स्तंभ सड़कों के किनारे बनाये जाते हैं परंतु आधुनिकता की दौड़ में यह प्रथा भी समाप्त हो रही है। छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक अंलकृत मृतक स्तंभ दंतेवाड़ा के मानवविज्ञान संग्रहालय में संरक्षित रखा गया है।

वेदों में पर्यावरण रक्षा

प्रो. जनेन्द्र कुमार दीवान (सहायक प्राध्यापक)



भारत के ऋषि मुनियों ने प्राचीन काल से ही पर्यावरण पर गहन चिंतन किया है। इस देश की हजारों वर्ष पुरानी संस्कृता में पर्यावरण पर विशेष बल दिया गया है। मानव जाति के कल्याण और सुख के लिए पर्यावरण की रक्षा का सामीप्य तथा उसके प्रति संवेदनशीलता का अनुभव संस्कृत साहित्य में स्पष्ट रूप से दृष्टि गोचर होते हैं। प्राचीन काल में वैदिक ऋषियों ने मंत्रों के माध्यम से पर्यावरण रक्षा का संदेश दिया था जो आज भी प्रासंगिक है। प्रकृति में वायु, जल, आकाश भूमि, अग्नि, पेड़-पौधे तथा सभी जीव जन्म मिलकर ही पर्यावरण की रचना करते हैं। वैदिक साहित्य में पर्यावरण के लिए बहुत से श्लोक हैं जो हमें प्रकृति रक्षा हेतु जागरूक करते हैं। वेद में एक मंत्र आता है जिसे शातिपाठ के नाम से भी जाना जाता है, उसमें प्रकृति के सभी तत्वों के लिए शांति अर्थात् सुखद फल की कामना की गई है -

“द्यौः शान्तिरन्तरिङ्गं शांतिं पृथिवीं शान्तिरापः

शान्तिरोषधयः शान्तिर्विश्वे

देवा शांतिं ब्रह्म शान्तिं”

अर्थात् ओ अंतरिक्ष, जल, औषधि, वायु सभी शान्त और सुखद हो। वेदों में वायु, जल, भोजन, मिट्टी इत्यादि की शुद्धता पर भी बल दिया गया है --

तनुन पाद सुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः ।

पथो अनक्तु मध्वा घृतेन ॥

अर्थात् उत्तम गुणवाले पदार्थों में उत्तम गुणवाला प्रकाश रहित तथा सबको प्राप्त होनेवाला जो वायु शरीर में नहीं गिरता, वह कामना करने योग्य मधुर जल के साथ क्षेत्र आदि मार्ग को प्रकट करें, उसको तुम जानो। इसी प्रकार शुद्ध वायु बहुत से रोगों का नाश करती है। यह निम्न ऋचा में बताया गया है : --

आ त्वागमं शन्ता तिभिरथो अरिष्ट तातिथः।

दक्षं ते भद्रभाभर्षं परा यशमं सुवामि ते॥

(ऋ. 10/137/4)

अर्थात् यह जान लो कि शुद्ध वायु तपेदिक जैसे घातक रोगियों के लिए औषधि रूप है। हे रोगी मनुष्य ! मैं वैद्य तेरे पास सुखकर और अहिंसा कर रक्षण में आया हूँ। तेरे लिए कल्याण कारक बल को शुद्ध वायु के द्वारा लाता हूँ और तेरे जीर्ण रोग को दूर करता हूँ। हृदय रोग, तपेदिक तथा निमोनियां आदि रोगों में वायु को बाहरी साधनों द्वारा लेना जरूरी है, यहाँ यह संकेत है -

वात आ वातु भेषजं शंभु भयोभु नो हृदे।

प्र आयूषि तारिष्ट्

(ऋ. 10/186/1)

याद रखिये शुद्ध ताजी वायु अमूल्य औषधि है, जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान है, आनन्द प्रदायक है। वह उसे प्रदान करता है और हमारी आयु को बढ़ाता है।

इस प्रकार अर्थव्वं वेद में जल शुद्धि पर भी बहुत से सूक्त आते हैं। जल मानव जीवन के लिए शुद्ध और पेय रूप में होना आवश्यक है। संसार में सभी जीवधारी प्राणी जल का उपयोग करते हैं। बिना इसके “जीवन संभव ही नहीं है। जल की आवश्यकता को वेदों में स्पष्ट रूप से महत्व देते हुए एक स्थान पर कहा गया कि मकान के पास ही शुद्ध जल से भरा हुआ जलाशय होना चाहिए-

इमा आपः प्र भराम्ययश्मा यक्ष्मनाशनी :।

गृहानुप प्रर सीदाम्पृतेन सहाग्नि ना।।

(अर्थव्वं 3/12/9)

“अच्छे प्रकार से रोग रहित तथा रोग नाशक इस जल को मैं लाता हूँ। अन्न, धृत, दुग्ध आदि सामग्री तथा आग्नि से सहित घरों में आकर अच्छी तरह बैठता हूँ।”

शुद्ध जल मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। प्राणों का रक्षक होता है तथा कल्याण कारक होता है - इस भाव को निम्न ऋचा में बताया है -

शंन्नो देवीरभिष्ट आपो भवन्तु पीतये।

श्योरभि स्ववन्तु नः:

(ब्रह्म 10/9/4)

सुखमय जल हमारे अभीष्ट की प्राप्ति के लिये तथा रक्षा के लिये कल्याण कारी हो। जल हम पर सुख व समृद्धि की वर्षा करें। जल की महत्ता हमें कृषि कार्य में भी देखने को मिलती है। किसानों के लिए वर्षा जल वरदान

रूप है। कृषक का जीवन वर्षा पर ही आधारित है।

तस्मा अरं गमाय वो यस्य क्षयाय जिन्वथः।

आपो जनयथा च नः:

(ऋ. 10/903)

हे जल ! अन्न की प्राप्ति के लिए उपयोगी हो। तुम पर जीवन तथा नाना प्रकार की औषधियां, वनस्पतियों एवं अन्न आदि पदार्थ तुम पर निर्भर हैं। तुम औषधि रूप हो।

इसी प्रकार मिट्टी के प्रदूषण को भी रोकने के लिए वेदमन्त्रों में विचार किया गया है।

अर्थव्वं वेद में एक मंत्र में पृथ्वी को माता नाम से सम्बोधित किया गया है। जिसमें प्रतीत होता है माँ से उपभोग की वस्तु भले ही लिया जा सकता है परंतु शोषण अथवा दोहन नहीं करना चाहिए।

माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्या :।

नाना प्रकार के फल पुष्प, औषधियां, अनाज व फसलें, पेड़-पौधे सब पृथ्वी अर्थात् मिट्टी से ही उत्पन्न होते हैं, उन पर ही हम सब प्राणी आश्रित हैं। अतः यह धरती हमारी माता के समान है।

आज हम वायु, जल, मिट्टी सभी प्रदूषित कर चुके हैं। अंधाधुंध शहरीकरण, औद्योगिकीकरण के कारण वृक्ष तेजी से काटे जा रहे हैं। जंगल, समाप्त हो रहे हैं। नदियाँ नालों में तब्दील हो रही हैं, जल स्तर निरंतर घटता जा रहा है। रासायनिक खाद्यों के प्रयोग से मिट्टी में जीवंतता समाप्त हो रही है, मिट्टी बांझ हो रही है। सूखा व बाढ़ पर्यावरण की समस्या का भयंकर रूप है। अधिकांश कारखाने नदियों झीलों तथा तालाबों के निकट होते हैं जनसंख्या वृद्धि के कारण मल-मूत्र नदियों में बहा दिया जाता है, पानी प्रायः एक बड़े नाले के रूप में नदियों तालाबों में आ मिलता है। समुद्र में परमाणु विस्फोट से भी जल प्रदूषित हो रहा है।

अतः मानव को विवेक से काम लेते हुए प्रकृतिकी सुरक्षा का ध्यान रखना ही होगा। इसके लिए हमें वेद के इस भाव को अपनाते हुए प्रकृति के अत्यधिक दोहन से बचना होगा। तेन त्यक्तेन भुजीथा: ।

कविताएँ

लोकांक्षा सुकतेल, एम.एससी. (भौतिक शास्त्र)

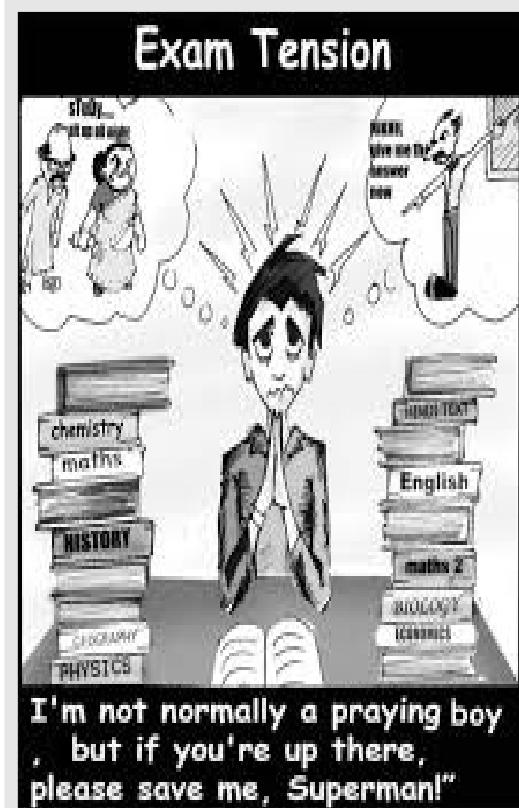
मैं और मेरी किताबें

किताबें आज मुझसे झगड़ रही थी,
या यूं कहो बेवजह ही अकड़ रही थीं।

कहती है, आज कैसे तुझे मेरी याद आयी है,
अच्छा, फिर तेरे मतलब की बात आयी है।
लगता है, परीक्षा की घड़ी पास आयी है।

मैने भी कह दिया, यूं तू बेवजह न अकड़
बेवजह मुझसे न तू झगड़।

आजकल डिजिटल का जमाना है
यूं तो मैं मोबाइल लौर लैपटाप से
भी पढ़ सकती हूँ
पर तेरे पन्नों की बो सुगंध मुझे
तेरे पास खींच लायी है।
याद आती है, मुझे तेरे शब्दों में
घुली प्यारी सी मिठास।
तुझे साथ लेकर सोने में होने
वाली बो अपना सा एहसास।



सच कहूँ तो मुझे भी तेरी याद आती है
तेरे पन्नों के अपनेपन की
सुगंध मुझे तेरे पास खींच लाती है।

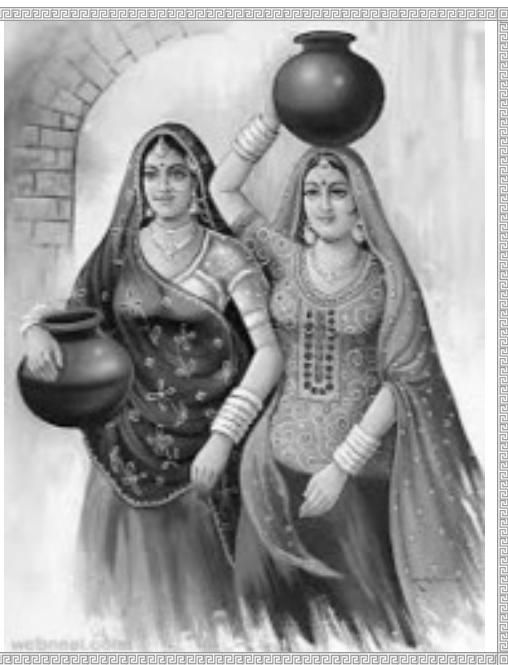
तो मुझे भी तेरी याद आती है
तेरे पन्नों के अपनेपन की सुगंध मुझे तेरे पास
खींच लाती है।

नारी, रिश्ता, सबकुछ तुम्हारे हाथ में है

वैष्णवी याग्निक, एम.ए. II सेमेस्टर (इतिहास)

1. नारी

मुझे समझने वाले की सखी हूँ सहेली हूँ
 अगर कोई ना समझे तो अनसुलझी पहेली हूँ।
 जीवन जीने का ढंग हूँ,
 उस ढंग में बसने वाला रंग हूँ,
 हर कोई समझ न पाता मुझे,
 जो समझ लेता कहता ‘खुली किताब’ हूँ,
 लोग कहते हैं ‘मुझे समझना मुश्किल’
 मगर लोगों को समझाए कौन ?
 सागर से मोती चुनने और दलदल से कमल लाने
 गहराईयों में जाना होता है।



2. रिश्ता

माँ बाप को बुरा

लगा जब

बच्चों के रिस्तों में

स्वार्थ नज़र आया,

जिन बच्चों को खून-पसीने से सींचकर बड़ा
किया

वे आज उन्हें पानी के लिए भी तरसा रहे हैं।

जिस कंपनी को अपने खून पसीने से सींचकर
बड़ा किया व उनके नाम किया,

आज वे ही उन्हें बाहर का रास्ता दिखाकर,

पैसे-पैसे को मोहताज किए जा रहे हैं।

जिसके थोड़े से रोने पर रात-रात भर जागकर
जिसे सुलाया

वे अब हमारे खांसने पर भी पांबंदी लगा रहे
हैं।

जो बच्चे आज बूढ़े माँ बाप को वृद्धाश्रम
छोड़ने की सोच रहे हैं,

यदि माँ बाप में स्वार्थ होता तो,

बच्चे आज ऊंचे पदों पर नहीं,
कहीं अनाथालय में पड़े होते।

(3)

सब कुछ तुम्हारे हाथ है

सब कुछ तम्हारे हाथ है, बस चाहने की देर है

छू सकते हो गगन यह मानने की देर है

लांघ सकते हो पर्वत बस सोचने की देर है।

इन फूलों को देखो इन्होंने खिलकर हँसना सीखा
है।

उनकों नहीं चिंता कि मुरझा जायेंगे ये शाम को

उन तारों को देखो जरा जो जगमाते रात भर

उनको नहीं फिक्र कि बेनूर होंगे वो सुबह।

उन छोटी-छोटी ओस की बूदों को देखो,

जिन्हें नहीं चिंता कि सूर्य की रोशनी में खो
जायेंगी वे सुबह।

फिर तुम भला क्यूँ सोचते हो

“उस अंत को निश्चित है जो”

भरपूर जी लो जिंदगी, चाहे चार दिन की

क्यूँ न हो।

तुम खोल दो ये मुटिरयाँ और दिल में जितना

प्यार है,

भर-भर के बांटो हाथ से, ये जिंदगी का सार है।

दुगुना मिलेगा तुम्हें वापस बस मांगने की देर है।

सब-कुछ तुम्हारे हाथ है, बस चाहने की देर है।

कभी सोचा है कि सूर्य वह जो सह के जितनी

भी जलन देता हमें हैं रोशनी,

क्यूँ रहता है खुद भी मग्न?

चाहा है? तुमने स्वयं उस माँ को, जो चाहे तुम्हारे
हित है,

जिसकी सारी जिंदगी तुम्हारे सुख में निहित है।

तुम भी दूसरों के लिए, जी के देखो तो सहीं,

फिर पाओ कितनी खुशनुमा है जिंदगी ।

क्यूँ तुम्हे अपनी ही चिंता खाती देर सबेर है?

सब कुछ तुम्हारे हाथ है, बस चाहने की देर है।

...



2018-19

2018-19

प्रकृति संरक्षक और माँ तुल्य है

अंबिका मरकाम, एम.एससी. II सेमेस्टर (भौतिक शास्त्र)



कैसे हम भूलें उपकार ये प्रकृति की,
सामने तुच्छ हैं हम, इसकी कृति की ॥

जब हम माँ के गर्भ में थे,
माँ और प्रकृति करते संरक्षण थे॥

जब हम संसार में आये, तब थे अनजान,
सबसे पहले हुई माँ और प्रकृति से पहचान ॥

जब आया बाल्यावस्था का वो पल,
गोद में इनके मिट्टी से सने, खड़े हुए और
लिखा हमारा कल ॥

सिखा गये हर युवा को, पेड़ों से
अड़िग रहना,
नदियों से सीखा निरंतर कर्मपथ
पर डटे रहना॥

प्रकृति ने दिया जीवन का अनमोल रत्न,
जो है अन्न, जल, थल, समीर और जतन करो
प्रकृति की जतन,

तब दिन या रात हो खुश कर देती है सब
का मन,
शीतऋतु में रात्रि का चांद, और वो तारे
गम भूला देती और भावविभोर हो जाती पल
हमारे॥

जनम जनम से प्रकृति है, साथी हमारी,
मरते पल भी साथ निभाती हमारी॥

आप सभी से है मेरा निवेदन,
सुनो सभी प्रकृति की क्रंदन ॥

प्रकृति, पेड़, जल, थल और नभ बचाओ,
कर्तव्यपरायण हो के खुद का मान बढ़ाओ॥

हे जन ! प्रकृति के प्रति कर्तव्य परायणता को
बढ़ाओ,
प्रकृति का कम से कम कर्ज तो उतारो॥

प्रकृति है हमारी सजन और स्वर्गमय,
संरक्षण में कदम उठाओ होकर तुम अभय॥

यूं हार के बैठने से क्या होगा ...तू और मेहनत कर..

नेहा साहू, एम.एससी. (भौतिक शास्त्र)

यूं उदास बैठने से क्या होगा...
तू खुद पर विश्वास कर, और आगे बढ़

अभी तो कितनी ही चुनौतियों का
सामना करना है तुझे
अभी तो कितनों की तक़दीर बदलनी है तुझे...



क्या हुआ गर ... कोई साथ नहीं तेरे...
ईश्वर तो हर पल करीब है तेरे ...

इसलिये
यूं हार के बैठने से क्या होगा
हिम्मत कर, और आगे बढ़
और आगे बढ़

जीवन से हारना क्यों ?



एक कविता हर माँ के नाम

राहुल चौरसिया, बीएस.सी. III सेमेस्टर



सबसे प्यारी सबसे न्यारी
कितनी भोली भाली माँ

सबसे प्यारी, सबसे न्यारी
कितनी भोली भाली माँ
तपती दोपहरी में जैसे,
शीतल छैया वाली माँ
मुझको देख-देख मुस्काती,
मेरे आँसू सह न पाती माँ
मेरे सुख के बदले अपने
सुख की बलि चढ़ाती माँ।
इसकी ममता की पावन
मीठी बोली है मन भावन,
काँटों की बगिया में सुन्दर
फूलों को बिखराती माँ।
इसकी आँचल निर्मल, उज्जवल
जिसमें है, नभ जल-थल
अपने शुभ आशीषों से



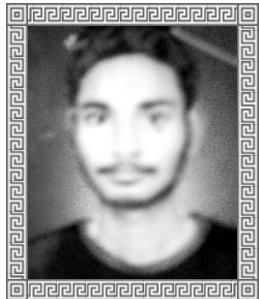
हमको सहलाती माँ।

माँ का मन न कभी दुखाना
हरदम इसको शीश झुकाना
इस धरती पर माता बनकर
ईश कृपा बरसाती माँ।
प्रेमभाव से मिलकर रहना
आदर सभी बड़ों का करना
सेवा, सृजन, सत्संग वाली,
सच्ची राह दिखाती माँ।
सबसे भोली सबसे प्यारी
सबसे न्यारी मेरी माँ।

संकल्प थामें आगे बढ़

आकर्षित बरनवाल बीएस.सी II सेमेस्टर (पीसीएम)

2018-19



कुछ कह गए, कुछ रह गए
जो रह गए, वो कह रहे ।
अपनों का छोटा सा घर,
जिसमें गुजरा पुलिकित जीवन ।
इस जीवन में भी कुछ अनमोल
कह गए कुछ रह गए,
जो रह गए वो कह रहे॥

जाने कितनी जगमग रातें,
कुछ बीती है, कुछ बताती हैं,
न जाने क्यूँ कुछ याद दिलाती है?
मानो कह रही हो मुझसे
नादान है तू नादानी कर,
चंचल बन, उजियारी कर ॥

रोके तुझको कितनी राहें
धमकाएं कितनी भी बाधाएँ ,
पर तू संकल्प को थामे आगे बढ़
ज्यादा कुछ तो नहीं,
बस काबिल बन, काबिल बन।

इंसान बन, नवनिर्माण कर
ऐसी अनबूझ बाते न जाने
कितने कह गए और कह रहे।
कुछ कह गए कुछ रह गए
जो रह गए, वो कह रहे॥



2018-19

संकल्प से सृजन की ओर - दुर्ग साइंस कालेज

डॉ. अनुपमा कश्यप, सहायक प्राध्यापक, रसायन शास्त्र विभाग

1. दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।
 'ए प्लस' लेकर इसने बढ़ाया मान है।
 सेंटर फॉर एक्सीलेंस बन,
 कॉलेज विथ पोटेशियल फॉर एक्सीलेंस से,
 देश में बनी पहचान है।
 हर युवा यहाँ का, इसकी जान है।
 युवाओं के सर्वांगीण विकास में इसका ध्यान है।
 स्वशासी है, गरिमा से इसकी, नहीं कोई अनजान है।
 सृजता शक्ति, श्रम प्रखरता का आव्हान है।
 दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।

2. रूसा और यूजीसी की सौगातें, हर तरफ शोध की ही बातें,
 सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन लैब के जरिये, युवा को नई तकनीक बताता,
 'इंस्पायर' का आयोजन कर, बच्चों की प्रतिभा निखारता,
 बेसिक साइंस को प्रोत्साहित कर, आत्मदीप बनना सिखलाता,
 गणतंत्र दिवस दिल्ली में नेतृत्व छात्रों का श्रृंगार है।
 दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।

3. यहाँ की गुरुसत्ता प्रेरक बन सबको, देती, जीवन ज्ञान,
 चुनौती से सिखाती लड़ना, बताती नवाचार का विज्ञान,
 रेबोट नहीं, इंसान बनाती, समग्र शिक्षा का पाठ पढ़ती,
 संकल्प, उत्साह, विश्वास का सबको, देती संबल, सद्ज्ञान,
 पुरस्कारों से अलंकृत गुरुजन यहाँ का अभिमान हैं।
 दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।

4. गांवों को गोद लेकर यह कॉलेज, जागरूक करता, स्वच्छ बनाता,
 जन उन्नयन सामाजिक संस्था से, संवेदना जगा, सेवा सिखलाता,
 व्यक्तित्व विकास के आयोजनों से, युवाओं को प्रतिभावान बनाता,
 न यहाँ रैगिंग, न अपराध, समान लिंग व समर्थम का व्यवहार,
 मानव मूल्यों का निर्माण इस कॉलेज की अजान है।
 दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।



5. एनसीसी, एनएसएस सिखाते अनुशासन, यूथ रेडक्रास से सेवा और रक्तदान, हेल्पडेस्क से मिलता मार्गदर्शन, प्लेसमेंट सेल से रोजगार धन अर्जन, सांस्कृतिक साहित्यिक गतिविधियां यहाँ, संस्कृति का दिया जाता ज्ञान, खेलकूद में इसका देश विदेश में नाम है। हर विभाग की अपनी एक पहचान है। ऑफिस और स्टाफ के सहयोग से इसका विकास है।
दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।
6. इनू व पं. सुन्दर लाल शर्मा वि.वि. यहाँ, शोध के आधुनिक सेंटर यहाँ, हॉस्टल, कैंटीन, कई बड़े हॉल, सोलर प्लांट से सौर उर्जा यहाँ, रेनवाटर हावेंस्टिंग से धरती सिंचित, गार्डन, औषधि पौधों से सुशोभित, कैम्पस, सुन्दर पेड़ों से आच्छादित, हरियाली और पर्यावरण, जागरूकता का अभियान है। नवल उत्थान के लिये प्रतिबद्ध, यह कॉलेज महान है।
दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।
- 7- यंग साइंटिस्ट, संतोषी माँझी, गुंडाधुर आदि, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार यहाँ, पोस्ट डॉक्टरेट, फुलब्राईट फेलोशिप वीमन साइंटिस्ट अवार्ड यहाँ, स्मार्ट क्लास, स्मार्ट लाईब्रेरी, मैथ्स ओलंपियाड, स्मार्ट भारत की पहचान है। नेशनल हायर एजुकेशन क्वालिफिकेशन में, FIST व STAR योजना में चयन यहाँ का सम्मान है। गोद में इसकी सौंगतें, अनुदान राशि की बरसातें, कई सोपान सफलता के, उपलब्धियों का जहान है।
दुर्ग साइंस कॉलेज छत्तीसगढ़ की शान है।



हिन्दी, तकलीफ

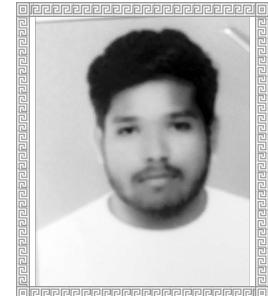
रोहित चक्रवर्ती, एम.ए. II सेमेस्टर (इतिहास)

1. हिन्दी

जितनी सरल उतनी मासूम,
माथे पर है बिन्दी
देश की है राष्ट्रभाषा,
नाम है उसका हिन्दी ।
इतनी महान भी है,
कि सबको खुद में समेटे है
गर्व है हमें कि हम हिन्दी के बेटे हैं॥

है ये पुरानी जरूर, पर बेगानी नहीं है,
थोड़ी सी कठिन सही, पर अनजानी नहीं है
जिस ज्ञान पर गर्व है
इसने ही वो ज्ञान दिया है ।
धर्म हो मेरा, या देश हो मेरा...
इसी ने उन्हें सम्मान दिया है ॥

मेहरबानी के तेरे सब गुण गाये,
सारे जग में जाये पैगाम जिसने दी।
मेरे देश को पहचान,
हिन्दी तुझे सलाम ।



2. तकलीफ

अभी अभी तो तकलीफों से वाकिफ़
हुआ हूँ
अभी तो उनका याराना बाकी है।

कुछ ही दिनों में अपने से लग गए
अभी उससे दिल लगाना बाकी है ।

अभी अभी तो निकला हूँ घर से
अभी तो सारा ज़माना बाकी है

अभी तो शून्य से भी नीचे हूँ
अभी उसके साथ नाम कमाना बाकी है



आधुनिक विज्ञान

चन्द्रकांत धनकर, बी.एससी. II सेमेस्टर (माइक्रो बायोलॉजी)

2018-19

तिनका तिनका जुड़ जाता है
जुड़ के भी वो डड़ जाता है
जुड़ना जिस से सीखे थे
वो ज्ञान बड़ा महान है
शोधकर्ता जिसे ढूँढते
वो कल्युग का विज्ञान है ।
हाइट्रोजन और ऑक्सीजन की
एक अपनी अलग पहचान है
छिपे ज्ञान को बाहर निकालो
पानी का प्रमाण है ।
हर मिस्ट्री की केमिस्ट्री को

भौतिकी से ज्योतिषी को
भूगोल से खगोल को
जंगल से मंगल तक
हर क्षेत्र में भरा गुमान है ।
मानो या ना मानो
ये आधुनिक विज्ञान है ।



2018-19

जियो हिन्दुस्तान के लिए

प्रिंस कुमार कुशवाहा, बी.एससी.-II (पीसीएम)

हिन्दू के लिये, न मुसलमान के लिए
जीना है तो जियो हिन्दुस्तान के लिए ।
आपसी मतभेद हमें जीने नहीं देगी,
देश न रहा तो हम कैसे रहेंगे
सोचना है अब हमें इंसान के लिए ।
जीना है तो जियो हिन्दुस्तान के लिए ॥

जाति पंथ का आओ झगड़े मिटाएँ ,
एक है हम एक यहाँ बन के दिखाएँ।
एक है लहू का रंग पहचान के लिए,
जीना है तो जियो हिन्दुस्तान के लिए ॥

योग का दीप आओ मिलकर जलाएँ
देश और समाज को स्वस्थ बनाएँ
गीता के लिये, न कुरान के लिए
जीना है तो जियो हिन्दुस्तान के लिए ॥



मन की व्यथा, हिन्द है पुकारता

राहुल कुमावत, एम.ए. (इतिहास) तृतीय सेमेस्टर

1.

मन की व्यथा

अब कैसे मिलेगी गाँवों में
वो पीपल की छाव
देखो उड़ गए पंछी सारे
तोता कोयल कांव
धरती बोले सूरज से
कम करो यह ताप
बेचैनी से देखो
तड़प रही मेरी संतान
सूरज बोले कैसी ये संतान
घरों में बैठकर पब-जी खेले
कूलर में ऐशो आराम
धरती कटी कटी-सी
कटे हुए हैं वृक्ष
आखिर कब लगाएगा?
एक वृक्ष यह शैतान

2.

हिन्द है पुकारता

हिन्द है पुकारता
हिन्द है पखारता
मेरी बोली मेरी भाषा
मेरी माँ की ये अभिलाषा
बिम्ब-सी प्रतिबिम्ब ये
हिम-सी दुध धवल ये
सर्वव्याप कंठ कंठ कोकिला
खण्ड खण्ड वेदना
अखण्ड हो रही चेतना
हृदय जागृति का
दावाग्नि प्रचंड वेग
ये स्वर्णिम गहना
नयनभिराम बिंदी
शिखर सुमन हिंदी



A Train Journey,

Naman Thakkar, B.Sc. III (Microbiology)



1.

Breeze coming through windows
Refreshed every atom of my skin

Passing by shallow meadows
Focus with a smile and grin

Soothingly piercing through inner me unbiased
Ejecting out characters I shouldn't weary

From sunrise to sunsets
Some lets upsets resets

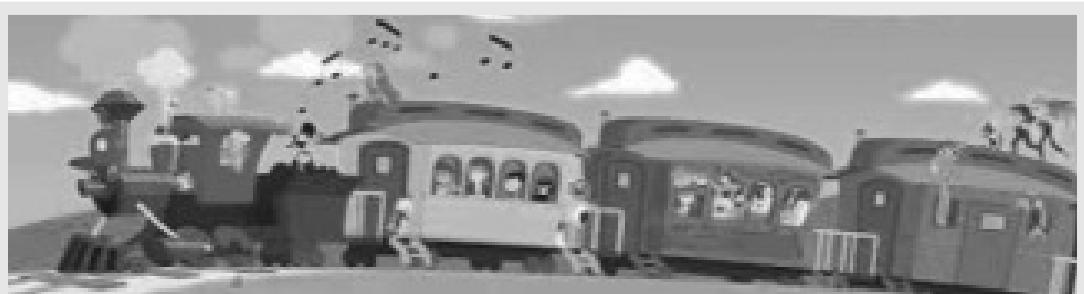
Flourishing thoughts, nurturing
Inducing spirit of eternal win

Stops, Moves, blows horn, hanks
Some times early sometimes late

Soothing with a zing
Reaching to every ones fate

Many things to learn form nature
And every form of creature

Fabulous is the journey in a train
It adds a lot to our brain



Breeze

2.

It passed by abysmally
Trembled me momentarily

Wasn't strong enough to isolate a vine
But shaked me with endless internal whines

Eddying thought mumbled over every impasse
Excuses in the name of optimism tress passed

Anecdote of egoistic retrieve
Jusco in mind didn't want to leave

Intellections suggested me Truculent
But kindness inside ordered to be in oblivion.

Regretted being the Apricity for everyone
Cause I was the one who was always forsaken

Nature and beauties were benevolent
and my majme nature was coherent

All those regrets were ethereal
As and I was satisfied for being real

Forgiving gesture always ran through my\veins
And if was time now to look aside from pain.

2018-19

2018-19

Once again it passed but soothingly
Because this time I was thinking differently

Thought about every good movement
Thanked for every second and happiness
That I have in abundant.

Situation was filled with a junction a thought
what I selected, resulted in what I got.

Thought, Kindness, optimism pray
And generosity are some nice way

To give my best shot everyday
As one day I was simply going to be a day.

And at the moment I don't expect anything form anyone.
Just a word from inside that this life was the best one.



It's better to become a poet than to store your tales in torment

Monal Saha, M.A. (English)

1.

I can't explain the way it senses.

It goes through massive ups and downs.

It gets pierced into my skin.

When every of to do down such fearless steps

I am asked to empathies the unseen pathos.

I have been the wisest fool till

then trusting the magician for the boxed so magic

Like a poet hidden in the light of thoughts,

I ornamented my page with the unsaid utterances.

Or believe when you go numb, it's better to become

A poet than to store your tales in torment.

2018-19

2018-19

She

Who gives a life to the newborn.

She pays a big price to be a woman,

she bleeds every

Month for her entire life so that

one day she could give birth to a new life.

She's the most natural thing this world could have,

may be the creator.

She's the symbol of sacrifice,

dedication and peace.

She can make you as well as

can back you when

She wants,

she's the one to define you.

At times she can make a war happen with

a blink and end with her footstep.

She can walk into fire just for the sake of society.

A woman lifts the weight of the whole world.



3. FEAR

2018-19

I no longer fear the lonely nights.
All the thoughts and the shining lights.
I was scared of the time, the distance and the night.
Not any more, now I just move with the faithful time.

I no longer fear the incomplete endings,
All the stories and their promises pending.
It had all the likes and the wises.
But I never found my happy slices.

I have no fear of broken promises.
All those false words and fallacious dramatics.
I once care too much of the swear and vows.
It was nothing but worthless words that bows.



2018-19

"The Nature's Gift"

Shubhangi Jha , M.A. (English)

The view Seemed incredible
As each sesame kissed the shore
Beautifying its surroundings
Compelling me to ask for more.

The sun then descended
Like the crown of the sea
It gave cut out its light.
Nothing the seagulls dance in glee.

I stood there awe struck
As if in a fantasy movie

It presented me with happiness
And helped me sourceless nature's beauty

Unable to think of anything else,
Caught up by the perfection
Over whelmed with emotions
I experienced perpetual satisfaction

A steam was approaching
Therefore, forcing me to leave
To get back in the real world
Away from this beautiful dream.

I turned around to move
And walked as slow as a snail,
As the harsh reality hit me,
It was the end of my fairytale

I thanked god for the present
For the beautiful gift he gave me.
That provided me with peace of mind
And soul satisfying tranquility



2. To be a Girl....!

2018-19



To be a girl is not an easy thing for in
every state there is gender discrimination.
Why are girls not liked by nation?

They hurt her every inch
Yet they chose her womb to come to this world.
Do you think it doesn't pinch?

Mother said he is everything to us
You are a great load to us

They made her work day and night
Meanwhile he was trained to be a knight.

After growing up he left them alone,
with pain in full
That was the time she gave her best trial.

Then too they pushed her aside.
She smiled and gave her fears a best hide.

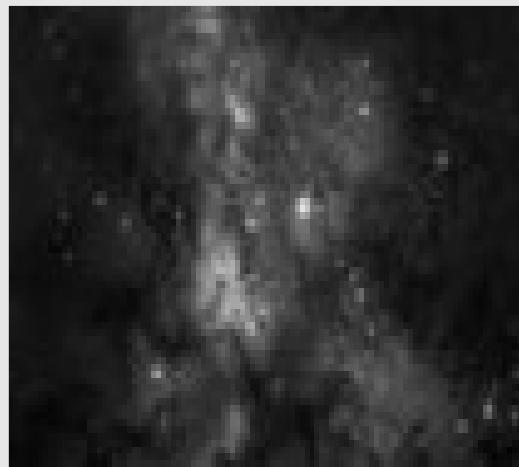
She is innocent don't lose the precious pearl.
Why it's a punishment to be a girl?



2018-19

DARK MATTER

Pratiksha Tiwari, M.Sc. Final (Physics)



Although the first evidence for dark matter was discovered in the 1930s, it was in the early 1980s that astronomers became convinced that most of the mass holding galaxies and clusters of galaxies together were invisible for two decades, theories were proposed and challenged, but it wasn't until the beginning of 21st century that the 'Double dark' standard cosmological model was accepted, cold dark matter - non-atomic matter different form that which makes up the planets, stars and us plus dark energy together up (95%) of the cosmic density. The challenge now is to understand underlying physics.

If universe would be neutrino - dominate with the neutrino mass ($m=10\text{eV}$). Neutrino gas does not interact with radiation thus perturbation in the neutrino gas could develop much earlier than in the

Baryon dominated universe and could have the necessary amplitude. Baryon gas is bound to radiation and has smaller density fluctuations, after decoupling it simply flows to gravitational closure wells formed in the neutrino gas.

Thus in the neutrino dominated universe one has low baryon density $-0.1 = 0.01-0.1$ while total density is close to the closure one

The formation of structure of in a neutrino dominated universe is essentially an adiabatic scenario the initial ratio of baryon to neutrinos is the same everywhere.

(a) Most of the universe is invisible stuff called "non - baryonic dark matter" (25%) and "dark energy" 970%)

(b) Everything that we can see makes up only $\frac{1}{2} \%$ of the cosmic density and invisible atoms about (4%). The earth and its inhabitants are made of rarest stuff of all heavy elements (0.01%)

(C) The cold dark matter Double Dark theory based on the this appears to be able to account for all the large scale features of observable universe . (d) There is still whole lot to discover.



Importance of Life Skills

Dr. Anshumala Chandangar, Asstt. Prof. (Economics)

Any personal ability that helps a person to deal effectively with the problem with people, salutations or stress is called life skills. Every individual whether at school, at work or in personal life face problems in his/her day to day life. It is the life skills that helps him/her to overcome these problems. Life skills include adoptability, creativity, critical Thinking, decision making, emotional Intelligence ability to Communicate effectively, negotiations self awareness etc. to name a few.

With the constant changing environment and fast changing technology, it is very important for the students to cope up with the incising pressure to perform better in this competitive world. Life skill help the students to manage stress due to studies, help them to develop their critical thinking solve any problem and analyse the things properly and most importantly it develops greater sense of self awareness among students. In India increasing unemployment among youth is making them restlessness and depressed and to deal with this they need to learn self management and people management. When these student get the job they need the life skill for life decision making and negoti-

ation. Students must be taught about external intelligence for personal and professional success.)

World Health Organization study highlights the critical role of life skills for improving health hygiene and safety, According to WHO, young age is the appropriate time to learn life skills. At every point of life we need to apply life skills like a student needs to learn study skills, for purchasing a house negotiation skills is required, for getting employment one needs to have employment skills etc.

In India it was the family and society that used to impart life skills and values to the children at the early stages of their life but at present the scenario has completely changed, students are taking education, getting a job and are running only money. The culture of importing life skill by family and society is vanishing, youth of India is forgetting their values and life skills. The result is, increasing tendency of suicide and crimes among the youth. In stead of family and society, training centres are being opened to make them learn the life skills which is a matter of concern.

दो लेख

प्रज्वल ताम्रकार, बी.एस.सी II (कम्प्यूटर साईंस)

संगति

(1)

हितोपदेश में बहुत उत्कृष्ट बात कही गई है -

हीयते हि मतिस्तात्, हीनैः सह समागगतात् ।

समैस्च समतामेति, विशिष्टैश्च विशिष्टितम् ॥१

अर्थात् हीन लोगों की संगति से अपनी भी बुद्धि हीन हो जाती है, समान लोगों के साथ रहने से समान बनी रहती है और विशिष्ट लोगों की संगति से विशिष्ट हो जाती है।

इस प्रकार हमें अपनी संगति के विषय में अत्यन्त सावधान होना चाहिए। आइए इस विषय पर विचार करें - एक मधुमक्खी की मित्रता एक गोबर के कीड़े के साथ थी और उसे सुगंध से भरे फूलों के देश में भ्रमण के लिए आमंत्रित किया करती थी, पर गोबर का कीड़ा हँसकर उसकी बात टाल दिया करता था। वह कहा करता था कि सुगंध से भरा क्या कोई देश हो सकता है? ऐसा संभव नहीं है। पर ऐसा संभव है। पर मधुमक्खी सदैव उससे सुगंध के देश की बात कहती थी। कई दिन इसी प्रकार बीत गए। मधुमक्खी के बारंबार कहने पर गोबर के कीड़े ने फूलों के देश में जाने की सोची। मधुमक्खी बहुत प्रसन्न हुई। मधुमक्खी एक दिन गोबर के कीड़े को लेकर फूलों के बगीचे पहुँची। उसने गोबर के कीड़े को ले जाकर एक गुलाब फूल के अंदर छोड़ दिया और अत्यन्त आनन्द के साथ वह बगीचे में घूमने लगी। कुछ समय पश्चात वह वापस आकर मित्र से पूछती है कि उसे संगठ कैसी लग रही है? तब मित्र ने कहा कि यहाँ भी वैसी ही दुर्गंध है।



मधुमक्खी

को बहुत आश्र्य हुआ। वह उसके पास गई तो सब समझ गई। गोबर का कीड़ा आने के समय अपने शरीर पर गोबर लपेटकर आया था। तब मधुमक्खी ने कहा - मित्र

तुम्हें सुंगथ पाने के लिये गंगा स्नान करना होगा और वह उसे लेकर गंगा नदी में ले गई। गंगा में ढूबते ही कीड़े के शरीर पर लिपटे हुए सारे गोबर धुल गए। तब मधुमक्खी ने अपने मित्र को एक कमल के फूल के अंदर ले जाकर छोड़ दिया। अब कीड़े की सुन्दर सुरभि का आनन्द मिलने लगा। तब मधुमक्खी ने मित्र से कहा कि मित्र अब तुम इस फूल के अंदर स्थित मधु का पान करो। कीड़ा गोबर खा खाकर अपने दांत कमजोर कर बैठा था। उसे मधुपान के लिए बड़ा कठिन परिश्रम करना पड़ रहा था पर मधुमक्खी उसे प्रोत्साहित किए जा रही थी। काफी प्रयास करने के बाद कीड़े ने एक छोटा सा छेद कर दिया और कमल के भीतर से निकलने वाले मधु को पीकर आनन्द विभोर हो गया। उसके आनन्द की सीमा नहीं रही और वह मूर्छित हो गया। आनन्द से वह बाह्य ज्ञान रहित हो गया। मधुमक्खी यह देखकर बहुत आनंदित हुई और वह बगीचे में घूमने लगी। दिन व्यतीत हो गया और कमल की पंखुड़ियाँ बंद हो गईं। प्रातः काल मंदिर के पुजारी ने उस कमल को अनजाने में



तोड़ दिया और भीतर ना देख कर उस कमल को शिव के मस्तक पर अर्पित कर दिया । वह कीड़े अब भी मूर्छित था । दोपहर के समय उसे होश आया तब उसने देखा कि वह शिव के मस्तक पर सुशोभित है । यह देखकर वह मन ही मन अपने मित्र की स्मरण करके अत्यन्त आनंदित हो रहा था । वह सोच रहा था कि वह कहाँ गोबर में पड़ा हुआ था और मित्र का संग पाकर आज वह भगवान शिव के मस्तक पर सुशोभित है । इस प्रकार संध्या हो गई और पुजारी ने कमल के फूल को ऊंठाकर गंगा में विसर्जित कर दिया । दूसरी ओर मधुमक्खी अपने मित्र को खोज रही थी । वह चारों ओर पुकार-पुकार कर पूछ रही थी कि मित्र कहाँ हो, मित्र कहा हो? ऐसे समय में गोबर के कीड़े ने मधुमक्खी को पुकारा और बताया कि वह गंगा में बह रहे कमल में स्थित है । अब मधुमक्खी ने उससे वापस जाने की बात की । तब गोबर का कीड़ा बोला नहीं मित्र! अब मैं वापस नहीं जाना चाहता । कहाँ मैं गोबर की दुर्गंध में पड़ा हुआ था

और तुम्हरे संग मैं आकर मैं गंगा स्नान करके मधुपान कर सका और शिव के मस्तक पर अर्पित हुआ । आज मैं आनन्द समुद्र की हिलोरों ले रहा हूँ । अब मुझे तुम मत रोको । अब मैं वापस नहीं जाना चाहता और इस प्रकार गोबर का कीड़ा अपनी अनन्त यात्रा के लिए प्रस्थान कर गया ।

जिस प्रकार मधुमक्खी के बारंबार फूलों के देश में सुगंध की बात को गोबर का कीड़ा स्वीकार नहीं करता था । उसी प्रकार जब हमें कोई साधु संग, सत्संग या अच्छी संगति मिले तो वे सदैव हमारा सतपथ का मार्ग दर्शन करते हैं, परन्तु हम अपने संस्कारवश उसे स्वीकार नहीं करना चाहते । परन्तु इस अच्छी संगति के बारंबार मिलते रहने पर कभी हमें उस मार्ग पर चलने की इच्छा हो जाती है, जिस प्रकार गोबर के कीड़े को हुई थी । परन्तु फिर भी हम उस गोबर के कीड़े की भाँति अपने पुराने संस्कारों को अपने साथ रखकर उस मार्ग पर चलते हैं और हमें उस मार्ग में भी वैसी ही बुगड़ीयां दृष्टिगत होती हैं । परन्तु जिस प्रकार गोबर का कीड़ा गंगा नदी में स्नान करके पवित्र हो जाता है उसी प्रकार सत्संग के प्रभाव से हम भी गंगा स्नान की तरह पवित्र होते जाते हैं और उसके पाश्चात हम उस सत्संग का ठीक ठीक मर्म समझ पाते हैं जैसे गोबर के कीड़े ने कमल के फूल में जाकर समझा । हम अपने पुराने संस्कारों के कारण उस मार्ग को सरलता से प्राप्त नहीं कर सकते, जैसे गोबर के कीड़े को कमल में छिद्र करने में लगा था परन्तु सत्संग हमें प्रोत्साहित करते रहता है । जिस प्रकार गोबर के कीड़े ने एक दिन कमल में छिद्र करके मधुरस का पान किया था उसी प्रकार हम भी सत्संग के प्रभाव से एक न एक दिन आनन्द जगत में प्रवेश करते हैं और तभी हम समाज को, राष्ट्र को, मानवता को या ईश्वर को समर्पित होने के योग्य बन पाते हैं, जैसा की गोबर के कीड़े ने अपने पुराने संस्कारों की ओर न जाकर अनन्त की यात्रा की थी । ठीक उसी प्रकार हम भी सत्संग के प्रभाव से अपने पुराने संस्कारों की ओर

पुनः वापस न जाकर अनन्द की यात्रा की ओर प्रस्थान करते हैं।

अधिकांशतः: ऐसा देखा गया है कि ग्राम के सरल युवक नगर के महाविद्यालयों में पढ़ने आते हैं, उनमें से कुछ सामान्य स्तर से उठकर बहुत निपुण विद्यार्थी बनकर उभरते हैं और भविष्य में सफल होते हैं जबकि कुछ गलत रास्ते पर चले जाते हैं। यदि हम इस तथ्य की गवेषणा करें तो देखेंगे इसका प्रमुख कारण संगति थी। कुछ युवक अच्छी संगति में आकर पढ़ाई में दक्षता प्राप्त करते हैं। वे वरिष्ठ विद्यार्थियों की पढ़ाई, सोच और तैयारी से प्रभावित होकर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। वे सीखते हैं कि किस प्रकार प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी करनी चाहिए। इस प्रकार भविष्य में वे सफलता प्राप्त करते हैं। वही दूसरी ओर कुछ युवक बुरी संगति में पड़ जाते हैं। पहले पहले तो उनके मित्र मुफ्त में सिगरेट पिलाते हैं, शराब पिलाते हैं, मौज मस्ती करते हैं। बाद में उसे इसकी लत लग जाती

है और वह स्वयं इन सब पर पैसे और समय खर्च करने लग जाता है। यदि उसके पास आर्थिक क्षमता ना हो तो अपनी लत को पूरी करने के लिये चोरी आदि बुरे कार्य करने लग जाता है। इस प्रकार वह अपने समय और धन का अपव्यय करके अपने भविष्य को अंधकारमय कर डालता है। जब उसे अपनी भूल का भान होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। कभी-कभी तो स्थिति इतनी भयावह हो जाती है कि उसे अपनी भूल की चेतना भी नहीं होती, पर जो लोग उसे देखते हैं वे समझ जाते हैं, कि वह अपना जीवन चौपट कर चुका है। इस कारण स्वामी विवेकानन्द जी हमें उपदेश देते हुए कहते हैं, “कुसंग छोड़ दो; क्योंकि पुराने घाव के चिह्न अभी भी तुममें बने हुए हैं, उन पर कुसंग की गर्मी लगने भर की देर है कि बस, वे फिर से ताजे हो उठेंगे। ठीक इसी प्रकार हम लोगों में जो उत्तम संस्कार हैं, वे भले ही अभी अव्यक्त हों, पर सत्संग से वे फिर जाग्रत-व्यक्त हो जाएंगे।



(2) पारिवारिक सौहार्द कैसे रहे?

समग्र विश्व विभिन्न गण्डों में बँटा है, गण्ड की इकाई हैं शहर और ग्राम और इनकी अंतिम इकाई है परिवार। परिवार का अर्थ है - जहाँ माता-पिता, पुत्र-पुत्रियाँ, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची वगैरह एक साथ रहते हैं। एक का सुख, सबका सुख और एक का दुख सबका दुख होता है। सभी सदस्य केवल अपने ही लिए नहीं परिवार के लिये जीते हैं। परिवार ही बालक के लिए सर्वप्रथम पाठशाला है जहाँ वह प्रेम, सहयोग, स्नेह संस्कार सभी का अनुभव करता है। एक अकेला व्यक्ति निरपेक्ष जीवन जीता है। किसी भी, परिवार के सदस्य जब मिलकर रहते हैं, उसका आधार होता है पारिवारिक सौहार्द। सौहार्द का अर्थ है स्नेह-संपूर्ण मैत्री भाव।

आज सौहार्द की नौका भौतिकवादी मूल्यहीन सभ्यता के सागर में डूब रही है। यह स्थिति चिन्तनीय है, सोचनीय है, इससे मानव जीवन की मुस्कान फीकी होती जा रही है, जीवन आज तनावग्रस्त और बोझिल होता जा रहा है। संयुक्त परिवार का जीवन हो चाहे एकल परिवार का, सुखमय जीवन का मूल बिन्दु तो वही सौहार्द है। जहाँ स्नेह नहीं, सहानुभूति नहीं, त्याग नहीं, सहनशीलता नहीं अर्थात् जिस परिवार में स्नेहिल मैत्री भाव नहीं वहाँ प्रेम की सुख शांति की सरिता नहीं बह सकती।

पूर्वकाल में पारिवारिक सौहार्द की समस्या इतनी जटिल नहीं थी। सौहार्द सहज था। क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या पर सहज संयम का अंकुश निष्पक्ष था एवं दृढ़ व्यक्तित्व वाले मुखिया के संचालन में परिवार सहज गति से चलता था। परिवार के सैकड़ों सदस्य भी एक साथ रहते थे और सुविधा तथा गैरव का अनुभव करते थे। परिवार में नीति निर्धारण, योजना, गृहस्थी का संचालन, विवाह, शिक्षा, रोजगार, सभी की व्यवस्था परिवार के बुजुर्गों पर होती थी। युवापीढ़ी निश्चिंत होकर काम करती थी। परिवार का संचालन उनकी समस्या नहीं थी। वृद्धजनों के स्नेह-संरक्षण में नई पौध विकास की गति पर सहजरूप से बढ़ती चलती थी। क्योंकि वे सब एक-दूसरे को अपनाना जानते थे, रिश्तों को हृदय से स्वीकारते थे। सहिष्णुता के अभाव में तो सौ क्या

दो व्यक्ति भी साथ जीवन निर्वाह नहीं कर सकते।

एक बादशाह ने अपने बजीर के बारे में सुना कि उसके परिवार में लगभग सौ व्यक्ति एक चूल्हे पर भोजन करते हैं, साथ रहते हैं, सब सुखी है, परिवार में कोई विवाद नहीं, झगड़ा नहीं। बादशाह स्वयं उस परिवार की स्थिति का जायजा लेने बजीर के घर पहुँचे। वहाँ जो कुछ सुना था उससे भी अधिक व्यवस्था अनुशासन, शांति और सबके चेहरों पर प्रसन्नता का भाव देखकर बादशाह को आश्र्य हुआ और उसने पूछा आप इतने लोग एक साथ रहते हैं क्या कभी आपस में झगड़ा नहीं होता? आप लोगों के मन में कोई ईर्ष्या, द्वेष, मनमुटाव नहीं है? क्या कोई कठिनाई नहीं आती? सब प्रश्नों का नकारात्मक उत्तर पाकर बादशाह ने पूछा - “आखिर इस पारिवारिक शांति और सुख का करण क्या है?” परिवार के मुखिया ने गम्भीर भाव से कहा - हम एक दूसरे को सहना जानते हैं। इसलिए स्नेहिल मैत्रीभाव से रहते हैं। पारिवारिक सौहार्द के लिये सहिष्णुता ही आधार तत्व है। सहिष्णुता अहिंसा की जननी है और अहिंसा का अर्थ है किसी को भी मन, वचन, कर्म से कष्ट नहीं पहुँचाना।

आज सब ओर व्याप्त अशांति का मूल कारण ही असहिष्णुता है जो अलगाववाद को जन्म देती है और रिश्तों में रिसाव तथा सम्बन्धों में सिसक पैदा करती है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति सहज मैत्री भाव नहीं ख पाता तभी तो विवाद पैदा हो जाते हैं और अशांति व्याप्त हो जाती है। भारत में परिवारों के टूटने का जो सिलसिला बना है वह चौंकाने वाला है। पश्चिमी देशों में बहुत पहले ही यह व्यवस्था भंग हो चुकी है। वहाँ तो सहिष्णुता नाम मात्र भी नहीं होती है। लोग छोटे-छोटे विवाद को लेकर ही न्यायालय पहुँच जाते हैं। आये दिन तलाक होते रहते हैं। भारतीय पारिवारिक संस्कृति में यह परिवर्तन पश्चिम की देन है। जीवन को जीने का ढंग ही बदल गया है। लाइफ स्टाइल में आये परिवर्तन, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति, औद्योगीकरण, मकान की समस्या इत्यादि कई कारण हैं जिनसे परिवारों में निकटता का भाव कम होता जा रहा है, बिखरण बढ़ रहा है। परिवार में सौहार्द की कमी आती जा रही है। भले ही



व्यावसायिक कारणों से परिवार से दूर रह कर भी सौहार्द के सेतु जुड़ा रहे तो नई उभरने वाली समस्याओं को रोका जा सकता है और परिवार की सुखद एकता बनी रह सकती है।

परिवार छोटा हो या बड़ा, धनी हो या निर्धन, शिक्षित हो या अशिक्षित यदि स्नेह-संपूरित भाव अर्थात् सौहार्द न हो तो सुख शांति प्रेम का स्रोत सूख जाता है और परिवार का विघटन होकर ही रहता है। जो परिवार के झगड़ों के कारण अलग रहने का निर्णय लेते हैं, उन्हें स्थान बदलने की बजाय स्वभाव एवं दृष्टिकोण बदलने की बात सोचनी चाहिए।

एकल परिवार की अपनी समस्यायें हैं। पति के कार्यवश बाहर जाने पर पत्नी व बच्चों को असुरक्षा रहती है। अस्पताल में भर्ती होने पर कौन अस्पताल में मरीज के साथ रहेगा और घर पर कौन रहेगा यह भी समस्या होती है, जबकि संयुक्त परिवार में सभी मिलजुल कर किसी भी समस्या का समाधान कर लेते हैं। एकल परिवार में छोटे बच्चों को दादा-दादी की गोद की स्वेहिल ऊष्मा भला कहाँ मिल पाती है और यदि पति-पत्नी में झगड़ा हो जाये तो बच्चों का जीवन असहज एवं दुखमय हो जाता है।

परिवार में विघटन के मुख्य कारण व निवारण :

1. किसी भी प्रकार का पक्षपात भाव होना। जैसे

कि अपने पति या बच्चों में और अन्य बच्चों में भेदभाव करना।

2. परिवार के सभी सदस्यों की आय समान हो ही नहीं सकती है। इस स्थिति को जैसी ही वैसी ही स्वीकारनी होगी। कम आय वाले को सहयोग स्नेह के साथ अधिक उपार्जन हेतु दी गई प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता के परिणाम सुखद होते हैं।

3. स्वच्छन्दता की चाह। वैसे यह कोई अस्वाभाविक चाह नहीं है, मानवीय प्रवृत्ति है, किन्तु परिवार के सदस्य पर्याप्त पारस्परिक स्वतंत्रता को स्वीकार लें, पचा लें तो विवाद नहीं होंगे।

4. यथासंभव भोजन पर सभी लोग साथ बैठे, प्रार्थना भी साथ करें। ताने, कटाक्ष एवं गलतफहमी मन में न पालें, व्यंग्य की बातें या उपेक्षा न करें। स्नेह और प्रोत्साहन एवं प्रशंसा के स्रोत को बहता रखें।

5. घर के मुखिया का सम्मान करें, आज्ञापालन करें। अपना दृष्टिकोण जो भी हो स्पष्ट करें एवं पारिवारिक एकता, प्रेम व मैत्री भाव हेतु मन में गलत धारणा न बनायें। यदि पिता स्वयं अपने माता-पिता व पूज्यजनों को प्रणाम करता है तो उन्हें देखकर बच्चे भी प्रणाम सीख जायेंगे।

परिवारिक जीवन में संयम आवश्यक है। संयम

वह कुंजी है जो शांति और आनन्द का द्वार खोलती है। एक अनुरोध मैं बुजुर्ग लोगों से करना चाहता हूँ कि उन्हें अपने जीवन को प्रेममय बनाना चाहिए परिस्थितियों व समय के अनुसार अपने विचारों में भी परिवर्तन करना चाहिए। घर परिवार की जिम्मेदारी को छोड़कर अपने नाती पोतों के साथ खूब प्यार करें, आपोद-प्रमोद करें। प्रतिदिन उनके साथ प्रेम पूर्वक ईश्वर की प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि करें और हँसते मुस्कुराते अपने जीवन के शेष दिनों को प्रेम से व्यतीत करें।

सासुओं को अपनी बहुओं के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह अपनी बोटियों के साथ करती हैं। बहू से कोई गलती हो जावे तो उन्हें डांटने के बजाय उसे प्रेमपूर्वक समझना चाहिए तथा बहुओं को भी सास को अपनी माता के समान समझना चाहिए तथा उनके साथ मिल-जुलकर सभी कार्य संपन्न करना चाहिए। परिवार में बालकों को शुरू से अच्छे संस्कार देने के लिए माता-पिता को उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सिखानी चाहिए और स्वयं के आचरण को भी अच्छा बनाये रखना चाहिए।

सहनशीलता एक ऐसा गुण है जिसे आप अपना लेंगे तो परिवार में कभी लड़ाई -झगड़ा होगा ही नहीं। यदि आपका कभी कोई अपमान करे या आपको आर्थिक नुकसान पहुँचाये तो आप उसे सहन करके क्षमा कर देवें। उसके प्रति क्रोध या बदले की भावना नहीं रखेंगे तो अपमान कर्ता या हानि पहुँचाने वाले को कुछ समय पश्चात अपनी गलती का स्वतः ही अहसास हो जायेगा और वह अपने मन के सारे मैल धोकर आपसे क्षमा याचना करेगा। फिर देखिए कितना प्रसन्न होगा आपका मन, चित्त को कितनी शांति व आनन्द मिलेगा। इसलिए अपने हृदय के भीतरी हिस्से से एक-दूसरे के प्रति गलत विचारों को निकालकर दूर फेंक देना चाहिए। जैसे

सबेरे सबेरे हम अपने घर को झाड़ पौछकर स्वच्छ बनाते हैं झाड़ने के बाद जो कचरा होता है उसे बाहर फेंक देते हैं, उसी तरह क्रोध द्वेष की बातें, झगड़े फसाद की बातें, ईर्ष्या द्वेष की बातें रूपी कचरे को भी मन में नहीं रखना चाहिए।

परिवार में एक दूसरे की सेवा करना अपना प्रथम कर्तव्य समझना चाहिए। परमात्मा ने हमें जो शरीर प्रदान किया है। उससे हम परिवार, समाज की कुछ सेवा कर सकें तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। आजकल एक नई प्रथा समाज सेवा (सोशल सर्विस) भी प्रचलित हो गई है। वस्तुतः समाज सेवा अच्छी बात है किन्तु परिवार की उपेक्षा करके समाज सेवा करना कहाँ तक उचित है। किसी कलब या संगठन के माध्यम से आप अस्पताल में जाकर रोगियों की मदद करते हैं यह खुशी की बात है, किन्तु उसी समय आपके परिवार में बुजुर्ग दादा-दादी, माता-पिता बीमार हों और उन्हें दवा दिलाना आप भूल जाते हैं तो सेवा को केवल प्रदर्शन ही कहा जायेगा। सिर्फ नाम के लिए, प्रतिष्ठा के लिये, सम्मान के लिये समाज सेवा करना शोभनीय नहीं है।

सारांश यही है कि पारिवर्क सौहार्द के लिए परिवार के सभी व्यक्तियों में सहनशीलता, सेवा, क्षमा व संयम की भावना होना चाहिए। यदि सभी अपने अहं भाव को त्याग कर सकारात्मक सोच से एक दूसरे के प्रति प्रेम व विश्वास रखेंगे तो परिवार स्वर्ग बन जायेगा। हम अपने घर को मंदिर बनाएं। प्रतिदिन शाम को घर में सत्संग प्रार्थना करें। टी.वी. के अशलील कार्यक्रम तथा अश्लील साहित्य से बच्चों को दूर रखें अच्छे संस्कारों के लिये सत्संग नित्य करें। हमारी यही भावना होना चाहिए कि मेरा घर स्वर्ग समान हो, मुझे अपने परिवार को सुखी बनाना है।



डर को जीतना सीख

विमल कुमार सिन्हा, बी.एस.सी. II सेमेस्टर

कहानी

कदम चूम लेती है, खुद आके मंजिल,

अगर मुसाफिर अपनी हिम्मत ना होरे।

एक बंदर अपने बच्चे के साथ वृक्ष की डाली पर बैठा था। नहें बंदर को भूख लगी तो उसने अपने पिता से कहा - मुझे कुछ खाने की इच्छा हो रही है क्या आप मुझे कुछ अच्छी पत्तियाँ तोड़ कर दे सकते हैं । यह सुनकर बंदर मुस्कुराया और बोला - “मैं दे तो सकता हूँ किन्तु बेहतर होगा कि तुम खुद ही अपने लिए पत्तियाँ तोड़ लो।” बच्चे ने कहा - “लेकिन मुझे अच्छी पत्तियों की पहचान नहीं है ।” तब बंदर ने उसे समझाते हुए कहा - तुम्हारे पास एक विकल्प है । इस पूरे वृक्षे को गौर से देखो तुम चाहो तो नीचे की डालियों से पुरानी कड़ी पत्तियाँ चुन सकते हो या ऊपर की पतली डालियों पर ऊंगी ताजी - नरम पत्तियाँ तोड़ कर खा सकते हो । बच्चा बोला - ये ठीक नहीं है ? भला ये अच्छी-अच्छी पत्तियाँ नीचे क्यों नहीं उग सकती, ताकि हमारे जैसे सभी प्राणी आसानी से उन्हें खा सकें? उनकी बात सुनकर बंदर हँसा और बोला - “यही तो बात है । अगर वे सबकी पहुँच में होती तो उनकी उपलब्धता कहाँ हो पाती । उनके बढ़ने के पहले ही उन्हें तोड़ कर खा लिया जाता ।”

लेकिन पतली डालियों पर चढ़ना खतरनाक हो सकता है । डाल टूट सकती है, मेरा पैर फिसल सकता है, मैं नीचे गिरकर चोटिल हो सकता हूँ । बच्चे ने चिन्ता जताई । तब बंदर ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा - सुनो बेटा, एक बात हमेशा याद रखना । हम अपने दिमाग में खतरे की जो तस्वीर बनाते हैं अक्सर खतरा उससे कहीं कम होता है । इस दुनिया में ज्यादातर लोगों को डरकर जीने की आदत पड़ चुकी है लिहाजा उन्हें कमतर या औसत चीजें पाकर ही संतोष करना पड़ता है,



पर वे कभी खतरा उठा कर वो पाने की कोशिश नहीं करते जो सचमुच पाना चाहते हैं । परन्तु तुम ऐसा मत करना । ये जंगल तमाम संभावनाओं से भरा हुआ है । अपने डर को जीतो और ऐसे जिन्दगी जीओ, जो तुम सचमुच जीना चाहते हो । बच्चा समझ चुका था उसे क्या करना है । तुरन्त डर को पीछे छोड़ा और वृक्ष की डालियों पर चढ़ते हुए ताजी नरम पत्तियों से अपनी भूख मिटायी । हमें भी इस बात को समझना होगा कि :-

“हम अपने दिमाग में खतरे की जो तस्वीर बनाते हैं, अक्सर खतरा उससे कहीं कम होता है । अगर आप वाकई कुछ बड़ा हासिल करना चाहते हैं तो जोखिम उठायें और आगे बढ़े । आपकी हिम्मत ही मनचाही जिन्दगी दे सकता है, डरकर बैठे रहना नहीं ।”

मुस्कुराहट बचपन की

रविशंकर अरमो, एम.एससी. II सेमेस्टर

बचपन का नाम सुनते ही हमारे मन में कल्पना की फूहार सी लग जाती है, वो सारी यादें ताजा हो जाती है, माई की वो आंचल जिसमें लिपटे, मुँह से चाबे रहते। बिना उनके रहना मुश्किल होता। पापा की पीठ जिनमें धोड़े की सवारी का सपना पूरा होता। आपकी ऊँगली पकड़कर ही चलना सीखा। नानी का घर हमारा सपना होता, दादी की लोरी के बिना तो नींद न आए, दादा की कान खींचाई तो हमें आज भी याद है और नाना की कंधा तो हमेशा याद रहेगा। उस समय लड्डू और चाकलेट खाने की तो हमारी इच्छा कभी पूरी नहीं हुई क्योंकि दांत जो सड़ते थे।

बचपन में सबसे अमीर हम ही थे। हमारे पास तीन पहिया वाली लग्जरी गाड़ी, पानी में नाव जो हमारे ही थे। हवाई जहाज तो फिर था ही। पढ़ाई लिखाई का कोई झांझट नहीं था जब बात स्कूल जाने की आई तो मुँह फूला लेते, फिर भी गए। क्योंकि अच्छे जो बनना था। पढ़ाई की तो पता नहीं पर खेल में सबसे आगे हम ही थे। अटकन-

बटकन की खेल तो पसंदीदा था ही, पर आदा-पादा और चिड़िया उड़ कभी रास नहीं आया क्योंकि फंसते हमेशा हम ही थे। झूठ और बहानों के सरदार थे, चाक-मिट्टी चोरी कर ऐसे खा जाते कि किसी को हवा न लगता। हमें आज भी याद है कि घरौंदों के खेल में हम राजा हुआ करते, तितली के पूँछ में रस्सी बाँध कर उड़ाना तो कोई हमसे सीखें। मजा तो तब औरआया जब रात भर होती हुई बारिश सबेरे छोड़ दी और स्कूल जाना पड़ा, वो लम्बे चुटिया वाले आचार्य कभी पसन्द नहीं आये क्योंकि होमवर्क न करने पर कान और बोट्टी (नाभी) खींचते। भूतों से डर तो हमें बहुत लगता फिर भी टीवी देखते क्योंकि बोतलों की जादुई धनुष जो चाहिए थी। शक्तिमान तो कभी बन न सके, ना ही वो पेंसिल मिला जिससे उसका चित्र बनाकर प्राप्त किया जा सकता।

वाह रे बचपन क्या बात थी तुझमें।



महाविद्यालय के विकास में यूजीसी एवं रूसा का योगदान

डॉ. अनुपमा अस्थाना, संयोजक, यूजीसी सेल

यूजीसी द्वारा प्रदत्त 2 एफ एवं 12 बी संबंधी मान्यता प्राप्त प्रत्येक महाविद्यालय की विकास यात्रा में यूजीसी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यूजीसी द्वारा प्रति पाँच वर्ष में प्रदान की जाने वाली राशि काफी हद तक महाविद्यालयों में अधोसंरचना विकास तथा पाठ्येतर एवं सह पाठ्येतर गतिविधियों को एक नई दिशा प्रदान करती है। केन्द्र सरकार की एक अन्य योजना राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) के अन्तर्गत प्राप्त राशि से भी लगभग सभी महाविद्यालयों में आरामदायक एवं पर्याप्त साइंज वाले व्याख्यान कक्षों का निर्माण संभव हो पाया है।

यूजीसी द्वारा हमारे महाविद्यालय को 12वीं पंचवर्षीय योजना में जनरल डेव्हलपमेंट स्कीम के अतिरिक्त महाविद्यालय को यूजीसी की प्रतिष्ठित “कालेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस सीपीई” के तृतीय चरण में भी शामिल किया गया है। समूचे छत्तीसगढ़ प्रदेश में यह उपलब्धि प्राप्त करने वाला यह एक मात्र महाविद्यालय है। सीपीई फेस 3 के अंतर्गत प्राप्त राशि से महाविद्यालय में कम्प्यूटर फेस-3 के अंतर्गत प्राप्त राशि से महाविद्यालय में कम्प्यूटर लैब, एकैडेमिक एक्सीलेंस, मेटेनेंस ऑफ इक्यूपमेंट्स, लैग्वेज लैब तथा प्रयोगशालओं के अन्तर्यन स्मार्ट क्लास रूप जैसे महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इन सभी कार्यों से छात्र-छात्राओं अकादमिक क्षेत्र में उपलब्ध सुविधाओं में निश्चित रूप से इजाफा हुआ है। इन मदों के अतिरिक्त महाविद्यालयों के प्राध्यापकों ने शोध क्षेत्रों में



अपनी दक्षता सिद्ध करते हुए अनेक माइनर एवं मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट यूजीसी द्वारा प्राप्त किये हैं। महाविद्यालय में वर्तमान में शोधरत् शोधार्थी भी निरन्तर यूजीसी की विभिन्न योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। सत्र 2017-18 में महाविद्यालय के 12 शोधार्थियों ने नेट, जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण कर छात्रवृत्ति प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। इसी श्रृंखला में महाविद्यालय के भौतिक, रसायन एवं बायोटेक्नोलॉजी विभाग की शोध छात्राओं को यूजीसी का ‘वूमेन्स सार्विस्ट अवार्ड’ प्राप्त हुआ है।

उपरोक्त राष्ट्रीय स्तर की सफलताओं के अतिरिक्त महाविद्यालय की छात्राओं ने सिंगल गर्ल्स चाईल्ड फेलोशिप, यूजीसी की मौलाना आजाद फेलोशिप, राजीव गांधी फेलोशिप आदि हासिल करने में भी बड़ी संख्या में सफलता प्राप्त की है। इस प्रकार यूजीसी की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित होकर महाविद्यालय प्रगति



के पथ पर अग्रसर है।

रूसा के अन्तर्गत हमारे महाविद्यालय में 8 नये व्याख्यान कक्षों का निर्माण हुआ है। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत 6 नये व्याख्यान कक्षों का निर्माण मिलाकर कुल 14 नये व्याख्यान कक्ष निर्मित हो चुके हैं। विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन में ये नये व्याख्यान- कक्ष मील का पथर सिद्ध हो रहे हैं। अगामी वर्षों में रूसा 2.0 के अन्तर्गत महाविद्यालय को 5.60 करोड़ रुपये प्राप्ति की आशा है।

रूसा के अन्तर्गत भविष्य में प्राप्त होने वाली राशि से अधोसंरचना निर्माण के साथ-साथ विभिन्न अकादमिक एवं शैक्षणेत्तर गतिविधियों में और तेजी आयेगी ऐसी आशा है। महाविद्यालय ग्रंथालय में नये शोध जर्नल्स का क्रय, ई-लाइब्रेरी, डिजीटल लेबोरेटरी आदि अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें रूसा में महत्व दिया गया है।

महाविद्यालय परिसर में यूजीसी द्वारा स्वीकृत राशि से 50 मीटर कन्या छात्रावास का निर्माण पूर्णता की ओर है। शीघ्र ही इसके महाविद्यालय को स्थानातिरित हो जाने पर दूरस्थल अंचल की छात्राएँ इसमें निवास कर

महाविद्यालय में अध्ययन कर सकेंगी। यूजीसी की पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत महाविद्यालय में अध्ययन कर सकेंगी। यूजीसी की पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत महाविद्यालय में पिछले एक दशक में 15 से अधिक राष्ट्रीय सेमीनारों/संगोष्ठियों कार्यशालाओं का आयोजन हुआ है। इसके अतिरिक्त विभिन्न राष्ट्रीय सेमीनार में महाविद्यालय के प्राध्यापकों को हिस्सा लेने हेतु यात्रा भत्ता एवं पंजीकरण शुल्क का भुगतान यूजीसी का शोध कार्य को बढ़ावा देने हेतु महत्वपूर्ण कदम है। महाविद्यालय ग्रंथालय में यूजीसी का (SOUL) साफ्टवेयर का नियमित प्रयोग विद्यार्थियों को लाइब्रेरी में सुविधा प्रदान करता है।

इस प्रकार यूजीसी एवं रूसा से प्राप्त राशि से छात्रहित में अनेक कार्य महाविद्यालय में संपादित हुए हैं। इसकी मदद से विद्यार्थियों को पठन-पाठन में नई तकनीकों एवं प्रयोगशालाओं की सामग्री में वृद्धि हुई है। महाविद्यालय प्रगति के पथ पर इसी प्रकार अग्रसर रहे यही हमारी शुभकामना है।

सफर बदलते समय का

अविचल शर्मा एम.ए. II (अर्थशास्त्र) समेस्टर

महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के तृतीय समेस्टर के छात्र अविचल शर्मा को चीन की “बाको टोस्ट” कंपनी द्वारा चीन के पाँच मुख्य शहरों - शंघाई, फूजौ, बीजिंग, हांगजो तथा शिआन में बातचीत और स्वाद का आदान प्रदान से संबंधित प्रेजेन्टेशन हेतु आंमत्रित किया गया ।

‘बाको टोस्ट’ चीन की कंपनी है, जो कि फूड कॉर्पोरेशन से संबंधित है एवं इस कम्पनी की शाखाएँ चीन के शहरों में मौजूद हैं । ‘बाको टोस्ट’ विदेशियों को बातचीत और स्वाद का आदान प्रदान (Interaction and exchange of taste) के तहत चीन आंमत्रित करती है । जून 2018 तक 22 दिवसीय चीन यात्रा के दौरान भारत व चीन के सांस्कृतिक एवं पारस्परिक समानता को समझने व जानने का प्रयास किया है ।

लिखना आदत नहीं, पर बनाना चाहता हूँ
खुद के शब्द सबसे कहना चाहता हूँ
यह कहानी नहीं, किसी जीत की ...

यह बस बात है मेरी ... समय के साथ बदलाव की ।

शुरूआत मेरी एक हिन्दी माध्यम के स्कूल से हुई, जहाँ मैं शुरू से ही अच्छा करता रहा । किन्तु छोटा स्कूल होने की वजह से कभी अनावरण का कोई मौका नहीं मिला । बचपन का पहला चैलेंज मुझे कक्षा छठवीं में मिला, जब मैंने केन्द्रीय विद्यालय में प्रवेश लिया और यही से, एक नये सफर की शुरूआत हुई ।

केन्द्रीय विद्यालय किसी भी छात्र के चौतरफा विकास के लिये बेहतरीन था । मैंने भी प्रवेश परीक्षा में अच्छे अंक हासिल किए, परन्तु प्रवेश के बाद अंग्रेजी में बहुत पेरशानी झेलनी पड़ी । समय के साथ इसमें कुछ पकड़ जरूर बनी, पर कक्षा में कभी भी शुरू के तीन स्थानों पर नहीं आ सका । किन्तु बाकी क्षेत्रों, जैसे खेल, विज्ञान प्रदर्शनी या सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी में अच्छा करता रहा । कक्षा ग्यारहवीं में मैंने पहली बार राष्ट्रीय स्तर की खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लिया । कक्षा 11वीं और 12वीं में

सबसे ज्यादा प्रेशानी गणित और रसायन शास्त्र के शिक्षक विद्यालय में न होने की वजह से हुई । 2013 में मैंने औसत अंकों के साथ बारहवीं पास किया ।

बारहवीं के बाद मेरे सारे दोस्त तरह-तरह की परीक्षा देकर विभिन्न कॉलेजों में एडमिशन की कोशिश में लग गए और मैं एन.डी.ए. कोचिंग के लिए देहरादून चला गया । कोचिंग ज्वाइन करने के एक महीने बाद 16 जून 2013 को केदरनाथ सहित पूरे उत्तराखण्ड में बढ़ आ गयी और कोचिंग कुछ दिनों के लिए बंद हो गया । 20 जून को मैं घर वापस आ गया, वापस आने के कुछ समय पश्चात साईंस कॉलेज दुर्ग में एडमिशन लेने के बाद मैंने विभिन्न खेलों में भाग लिया तथा महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का नेतृत्व किया, परन्तु बाकी के क्षेत्रों में कुछ भी खास न कर सका । बी.एस.सी. प्रथम वर्ष मैंने प्रथम श्रेणी में ठीक-ठाक अंकों से उत्तीर्ण किया ।

द्वितीय वर्ष के प्रारम्भ में भी मैंने खेलों के प्रति ही ध्यान दिया । नवम्बर 2014 में मैं वायुसेना गरूड़ कमांडो के लिये चयनित हो गया, परन्तु जनवरी 15 में मैं मेडिकल टेस्ट में फेल हो गया । पुनः मेडिकल के लिये मुझे



दिल्ली जाना पड़ा, जिसका सीधा प्रभाव मेरे द्वितीय वर्ष की परीक्षा पर पड़ा, परीक्षा के मध्य में भी मुझे कई बार दिल्ली जाना पड़ा और अंततः द्वितीय वर्ष मैंने द्वितीय श्रेणी में किसी तरह उत्तीर्ण किया।

जुलाई 2015 में मैंने वायुसेना ज्वाइन कर लिया। शुरूआत काफी अच्छी थी, बेसिक ट्रेनिंग मैंने शानदार तरीके से पूर्ण किया था। फिर फरवरी 2016 में मुझे कमांडो ट्रेनिंग के लिये गाजियाबाद चला गया।

कमांडो ट्रेनिंग में आने के बाद कुछ परेशानियों झेलनी पड़ी। 17 महिने की ट्रेनिंग के बाद मैंने वायुसेना छोड़ दिया। (Volunteer Discharge), दिसम्बर 2016 में मैं वापस दुर्ग आ गया। यह समय जिन्दगी के कुछ कठिन समय में से एक था। ये वह वक्त था जब सवाल बहुत ज्यादा थे और उसके उत्तर बहुत कम। लोग निजी कारणों या धार्मिक कारणों को जल्दी समझते नहीं थे या तो समझना नहीं चाहते थे तथा वायुसेना छोड़ने के मेरे फैसले पर अलग-अलग तरह के सवाल करते थे।

दिसम्बर 2016 में आने के बाद मुझे तृतीय वर्ष की परीक्षा के पूर्व 2 माह का समय मिला। मैंने मार्च 2017

में बी.एससी. तृतीय वर्ष की परीक्षा दी तथा तीनों वर्षों में अंतिम वर्ष ही मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ रहा तथा बी.एससी. मैंने प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया।

अप्रैल 2017 में मुझे बाको टोस्ट (Bako Toast) के बारे में पता चला। ‘बाको टोस्ट’ चीन की कंपनी है, जो कि फूड कार्पोरेशन से संबंधित है एवं इस कंपनी की शाखा चीन के की शहरों में मौजूद है। बाको टोस्ट विदेशियों को ‘बातचीत और स्वाद का अदान-प्रदान (Interaction and exchange of taste)’ के तहत चीन में आंमत्रित करती है।

अप्रैल माह के ही अंत में मैंने बाको टोस्ट कंपनी का साक्षात्कार भोपाल में दिया, इसके कुछ दिनों बाद ही कंपनी ने मुझे चीन बुलाया। इसी बीच 2017 जुलाई में मैंने एम.ए. (अर्थशास्त्र) में प्रवेश लिया तथा पुनः सामान्य जिन्दगी जीने लगा। मई 2017 में भी MYSY मुख्यमंत्री युवा स्वालंबन योजना के तहत हुए AMCAT की परीक्षा में मैं महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जनवरी 2018 में मुझे बाको टोस्ट की ओर से पुष्टिकरण मेल प्राप्त हुआ तथा मई माह में मुझे चीन बुलाया गया।

मेरा अनुभव

“नी हाओ””

इतना बड़ा नहीं कि खुद के अनुभव यहाँ कह सकूँ, पर बस मैं अपनी बात सबसे कहना चाहता हूँ

बस बताना चाहता हूँ कुछ अच्छे पलों के अच्छे विचारों को ।

जी हाँ ! उस समय को जो मैंने हमारे पड़ोसी देश चीन में बिताए ।

चीन में मुझे बाको टोस्ट कंपनी की ओर से पाँच शहरों में प्रेजेटेशन देना था । जिनमें चीन के पाँच मुख्य शहर - शंधाई, फूज़ौ, बीजिंग, हांगजोऊ, शिआन शामिल थे।

मैं रायपुर से 25 मई 2018 को दिल्ली के लिये निकला और रात की फ्लाइट से गुआंगजौ के लिये अग्रसर हो गया। 26 मई की सुबह 7 बजे मैं गुआंगजौ पहुँचा, गुआंगजौ में आप्रवासन प्रक्रिया के उपरांत मैं फूज़ौ के लिये निकल गया । जहाँ मुझे ‘बाको टोस्ट’ के व्यक्ति ने



रिसीव किया । उन्होंने मुझे दो दिन का समय अपना प्रेजेटेशन तैयार करने के लिए दिया ।

30 मई को मैंने अपना पहला प्रेजेटेशन फूज़ौ में दिया । इस बीच मैं अपने कुछ दोस्तों से भी मिला एवं उनमें से कुछ जैसे यान बिन, ली और आंटी शिआन के परिवारों ने मुझे डिनर के लिए आमंत्रित भी किया। उनसे या उनके परिवारजनों से मिलते समय बिल्कुल भी ऐसा नहीं लगा कि हम पहली बार मिले हैं, मिलते समय या उस पूरे समय में सभी के चेहरे पर एक शानदार मुस्कान थी और उनकी बातों का मेरी बातों को लेकर एक झुकाव।

30 मई की शाम में शंधाई के लिए रवाना हुआ। वहाँ भी मुझे दो दिन रुकना था। एक दिन मैंने मनोरंजन को दिया और कुछ अच्छी जगह धूमने गया जैसे डिज़नीलैंड शंधाई, रिसॉर्ट आदि । वहाँ की ऊँची इमारतों को देखने के लिये मैं IFC (International financial Centre) गया, जिसकी ऊँचाई 492 मी. (1614 फीट) है। मैंने अपना दूसरा प्रेजेटेशन 1 जून को शंधाई में दिया ।

2 जून को मैं चीन की राजधानी बीजिंग गया, वहाँ भी मैं ग्रेट वॉल ऑफ चाइना, प्रेसीडेंट हाउस, कैरमल स्कवायर, समर पैलेस आदि धूमने गया । 5 जून को मैंने अपना तीसरा प्रेजेटेशन बीजिंग में दिया । 5 जून की शाम मैं शिआन (xian) रवाना हो गया । शिआन में मैं टेरा कोटा वारियर संग्राहलय, हुआ शान पर्वत, हुआ चिंग हॉट स्प्रिंग धूमने गया । 07 जून को मैंने अपना चौथा प्रेजेटेशन दिया तथा 8 जून को हांगजो (Hangzhou) को निकल गया । वहाँ मैं मोणान पर्वत वेस्ट लेक, डचिंग रिसॉर्ट गया । 10 जून को मैंने अपना अखिरी प्रेजेटेशन हांगजो में दिया ।

11 जून की सुबह मैं शिआन निकल गया । शिआन समुद्र किनारे बसा बहुत सुन्दर शहर है, जहाँ सबसे ज्यादा भारतीय रहते हैं । 13 जून को मैं वापस फूज़ौ तथा 15 जून को मैं दिल्ली के लिए रवाना हुआ । 16 जून को मैं रायपुर वापस आ चुका था । 22 दिन की यात्रा में बहुत-सी नई चीजें देखी एवं बहुत-सी नई चीजें सीखीं ।

चीन के लोगों का अपने देश के प्रति समर्पण

अतुलनीय है। 1950 में चीन भारत का ही सांस्कृतिक प्रतिबिंब लिया हुआ चीन, हमसे काफी आगे निकल चुका है और शायद इसका एक कारण - लोगों का देश के प्रति समर्पण। अगर सफाई की बात करें तो मैं एक घटना वहाँ की आप लोगों को बताना चाहूँगा।

फूजौ में जब मैं ली (दोस्त) के साथ घूम रहा था, उस समय मेरे दोस्त के शर्ट से एक धागा निकला। ली ने उस धागे को करीब आधे घंटे तक हाथ में ही रखा और डस्टबिन दिखने पर उसे डस्टबिन में डाला। इसके बाद मेरे मन में एक ही सवाल था, कि अगर वह उस धागे को फेक देता तो शायद वह दिखता नहीं रोड पर परन्तु उसका मानना था कि वह छोटा धागा भी एक कचरे का ही रूप था। यह बात उसकी बहुत प्रभावित करने वाली थी। शायद आप वहाँ जब जाएँ तो आप से पहले से कोई बात न करे, परन्तु अगर कहीं आपको मदद की जरूरत पड़े तो दस हाथ एक साथ आगे आ जायेंगे। वहाँ ट्रैफिक नियम कोई नहीं तोड़ता, फिर चाहे वो शाम के सात बजे हों या रात के दो बजे खाली रोड। वहाँ के लोग अपनी भाषा को तब्जो देते हैं, शायद 10 प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी बोल या समझ पाते हैं। वहाँ के मोबाइल फोन भी चीनी भाषा (mandarin) में उपयोग किए जाते हैं। पिछले कुछ समय में भारत के रिश्ते चीन के साथ उतने खास नहीं रहे हैं, पर वहाँ की सरकार का किया गया हर कार्य उन्हें प्रगति की ओर अग्रसर करता है। इतने दिनों की यात्रा में मुझे

कहीं भी एक भी चौराहा जाम नहीं दिखा। वहाँ का ड्रेनेज सिस्टम भी पूरी तरह अंडर ग्रांउड हैं। वहाँ की हाईस्पीड ट्रेन 260 कि.मी. प्रति घंटा की गति से चलती है जो शायद ही कभी 1 मिनट भी लेट होती होगी।

परन्तु जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह चीन की अगर कुछ खासियत है तो कुछ ऐसी बातें भी हैं जो वहाँ के लोगों को स्वतंत्रता की पूर्ण अनुभूति नहीं होने देती।

चीन कम्युनिस्ट देश है जो वहाँ की जनता को अपनी बात कहने का पूरा मौका नहीं देता, वहाँ की सरकार तानाशाही का ही छोटा रूप है। चीन के लोगों का मानना है कि वे लोग सरकार के खिलाफ किसी भी तरह का केस दायर नहीं कर सकते। तानाशाही की कई घटनायें वहाँ हो चुकी हैं जिनमें कैरमल स्कवायर पर हुई घटना जगजाहिर है। वर्तमान में वहाँ व्हाटसएप, फेसबुक तथा इंस्टाग्राम जैसी सामाजिक साइटें पूरी तरह से प्रतिबंधित हैं।

आधुनिकता का परिवेश होते हुए भी चीन आज भी परम्परागत सोच वाला है। आर्थिक स्थिति भले ही चीन की भारत से बेहतर है, परन्तु वहाँ के लोगों की सोच भारत की ही तरह पुरुषवादी है। मिंग (दोस्त) के परिवार की एक घटना आपको बताना चाहूँगा, मिंग अपने घर में सबसे बड़ी है, उससे छोटे एक भाई और बहन है। मिंग की छोटी बहन को बचपन में ही परिवार से अलग कर दिया गया तथा परिवार का व्यवहार हमेशा मिंग के लिये भी बहुत बुरा रहा।



2018-19



वर्तमान में भी वहाँ बेटों को, बेटियों से ज्यादा तबज्जों दिया जाता है। मिंग के परिवार जैसे स्थिति वहाँ कुछ परिवारों में भी देखी जा सकती है, वहाँ के सामाजिक हालात् आज भी हमारे देश से कुछ हद तक मेल खाते हैं। वापस आते हुए मेरे मन में एक ही सवाल था कि सांस्कृतिक या पारम्परिक पृष्ठभूमि लगभग समान होते हुए भी, हम कब और कैसे उनसे इतना पिछड़ गए। सोचने पर एक ही उत्तर मन में आता है, शायद वहाँ

के लोगों में देश प्रेम की भावना कुछ ज्यादा है या देशप्रेम के मायने उनके लिये कुछ अलग है। देशप्रेम दिखाने के लिये सैनिक होना आवश्यक नहीं है हम अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान तथा सजग रहकर स्वच्छता के प्रति जागरूक रहकर भी देशप्रेम प्रकट कर सकते हैं। उम्मीद करता हूँ कि आने वाले समय में हम देशप्रेम के मामले में भी उनसे प्रतियोगिता कर आगे आकर एक सुदृढ़ भारत का निर्माण कर सकेंगे।

2018-19



हिंग्स बोसान का असली देवता

सत्येन्द्रनाथ बोस

डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा (सहायक प्राध्यापक भौतिक)

विज्ञान के क्षेत्र में सत्येन्द्र नाथ बोस का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने आधुनिक भौतिकी की आधारशिला रखी। आधुनिक भौतिकी में बोस आइंस्टीन स्टेटिस्टिक्स और बोस आइंस्टीन कंडनसेशन का विशेष योगदान है। जैसा कि हम जानते हैं - भौतिक शास्त्र में दो प्रकार के अणु होते हैं एक बोसान तथा दूसरा फर्मिअन। बोसान महान भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस के नाम को भौतिकी में

अमिट रखने के लिए दिया गया है जिनके योगदान से आधुनिक भौतिकी को एक नयी दिशा प्राप्त हुई। इनकी प्रतिभा के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन भी कायल थे। पर अफसोस इस बात का है कि इनकी विद्वता की

चर्चा के बावजूद उनको उनकी योग्यता के अनुरूप सम्मान प्राप्त नहीं हुआ। उनके द्वारा खोजे गये बोसान कणों पर काम करने के लिये कई वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है पर खुद सत्येन्द्र नाथ बोस को बोसान कणों की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार नहीं दिया गया।

सन् 2012 में एक नया कण जिसका द्रव्यमान (125 GeV) है, खोजा गया और बाद में इसका नाम हिंग्सबोसान दिया गया। इस खोज के लिये दो भौतिक शास्त्री पीटर हिंग और फ्रेंकोइस डेगलर्ट को दिसम्बर 2013 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। निःसंदेह यह भौतिक विज्ञान की बहुत महत्वपूर्ण घटना थी जिसके कारण

पूरी दुनिया रोमांचित थी। लेकिन भारत में इस खोज को लेकर जो रोमांच देखने को मिल रहा है उसकी एक बजह यह थी कि हिंग्स बोसान के साथ गॉड पाटिकल या ईश्वरीय कण का नाम जुड़ा होना। पीटर हिंग्स ने सन् 1964 के आस पास यह परिकल्पना रखी थी कि हिंग्स फील्ड सारी दुनिया में व्याप्त है और किसी भी ऊर्जा क्षेत्र में उर्जा के पुंज



रहता है। पीटर हिंग्स के अनुसार कोई कण जितने हिंग्स बोसान को जुटा लेता है उसका उतना ही वजन हो जाता है। इसीलिये सारी दुनिया में जो भी वजन है वह हिंग्स बोसान के कारण है। भले ही हिंग्स बोसान की परिकल्पना पीटर हिंग्स ने की थी पर हिंग्स बोसान का असली देवता सत्येन्द्र नाथ बसु थे जिन्होंने इस अति सूक्ष्मकण की असली पहचान की थी।

सत्येन्द्र नाथ बोस का जन्म 1 जनवरी सन् 1894 में श्री सुरेन्द्र नाथ बोस और श्रीमती अमोदिनी राय चौधुरी के घर कलकत्ता (भारत) में हुआ था। ये अपने सात भाइयों एवं बहनों में सबसे बड़े थे, इनकी प्रारम्भिक शिक्षा एक सामान्य स्कूल में हुई उसके बाद इन्होंने न्यू इंडियन स्कूल और हिन्दू स्कूल में दाखिला लिया। ये गणित में बहुत कुशल थे, एक बार की बात है कि इनकी गणित के शिक्षक इतने प्रभावित हुए कि उनकी 100 अंकों में से 110 अंक दिये। क्योंकि बोस ने सभी सवालों का हल करने के साथ-साथ कुछ सवालों को एक से ज्यादा तरीके

से हल कर दिया था। इसके बाद उन्होंने प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश लिया जहाँ पर श्री जगदीश चंद्र बोस और आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय जैसे शिक्षक अध्यापन करते थे। सत्येन्द्र नाथ बोस ने सन् 1915 में एम.एस्सी. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

सन् 1916 से 1921 तक सत्येन्द्र नाथ बोस ने भौतिकी के प्राध्यापक पद पर कार्य किया। इसके पश्चात् सन् 1921 में ढाका विश्वविद्यालय में रीडर नियुक्त हुए। यहाँ उन्होंने गणित एवं भौतिकी के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य किये। इस समय सत्येन्द्र नाथ बोस जर्मन भौतिक शास्त्री मैक्स प्लॉक के क्वांटम सिद्धान्त एवं अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धान्त पर अध्ययन और अनुसंधान कर रहे थे।

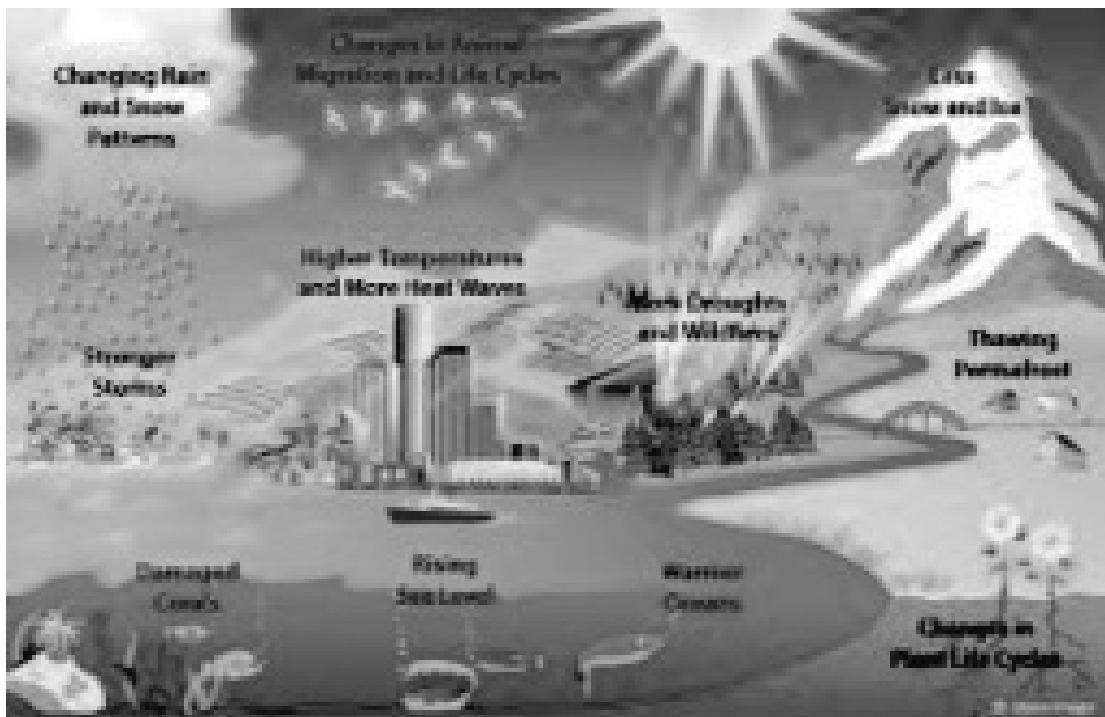
सत्येन्द्र नाथ बोस ने एक शोध पत्र लिखा जिसमें फोटान जैसे कणों पर मैक्सवेल वोल्टज मैन नियम लागू करने पर त्रुटि की ओर संकेत किया था, इस शोध पत्र को फिजिक्स जर्नल में प्रकाशनार्थ भेजा और जर्नल ने इसे शीघ्र प्रकाशित नहीं किया। इस शोध पत्र की आइंस्टीन के पास भेज गया और आइंस्टीन ने इसमें कुछ और शोध जोड़कर संयुक्त रूप से जीट फार फिजिक्स में प्रकाशित कराया। इस शोध पत्र ने आधुनिक भौतिकी में बोस आइंस्टीन सांख्यिकी नाम की एक नई शाखा की बुनियाद डाली।

सत्येन्द्र नाथ बोस के सहपाठी मेघनाथ साहा और प्रशांतचंद्र महालनोविस थे जिसमें मेघनाथ साहा बी.एस्सी. और एम.एस्सी. की पढ़ाई साथ में की थी। बोस कक्षा में प्रथम आते थे जबकि मेघनाथ साहा द्वितीय स्थान पर आते थे।

सन् 1924 में आइंस्टीन के साथ मिलकर बोस ने जर्मन जर्नल प्लेकेस गेसेट्ज लिफ्ट क्वॉर्ड हाइपीथिसिस शीर्षक से प्रकाशित हुआ जबकि अंग्रेजी में उस लेख का शीर्षक प्लॉक्स ला एंड लाइट क्वांटम हाइपीथिसिस रखा गया था। इस लेख के साथ आइंस्टीन की एक टिप्पणी भी प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने बोस के निष्कर्षों का सराहा और भविष्य में उसे दर्शाने का वचन दिया था जिसे आज हम सब बोस आइंस्टीन सिद्धान्त के नाम से जानते हैं। यही

सिद्धान्त आधुनिक भौतिकी का मूल आधार बना। ज्यादातर वैज्ञानिकों का मानना है कि भौतिक विज्ञान पर जितना असर बोस आइंस्टीन सांख्यिकी का पड़ा है उतना असर तो आने वाले समय में हिंग्स बोसान का भी न हो। सन् 1924 से 1926 तक विश्वविद्यालय से अवकाश लेकर यूरोप के दौरे पर रहे जहाँ मेरीक्यूरी पौली, हाइजन्वर्ग और प्लॉक जैसे दिग्जों के साथ कार्य किया और बर्लिन में आइंस्टीन से भी मिले। इसके बाद उन्होंने आईंस्टीन द्वारा प्रशंसापत्र लेकर प्रोफेसर के पद पर ढाका विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए। यहाँ बोस ने सन् 1945 तक कार्य किया। इसके पश्चात् कोलकाता वापस आकर कलकत्ता विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुए। सन् 1956 में सेवानिवृत्त होकर बोस रविन्द्र नाथ टैगोर के द्वारा स्थापित शांति निकेतन चले गये। टैगोर ने अपनी पुस्तक विश्व परिचय भी बोस को समर्पित की थी। सन् 1958 में रायल सोसायटी का फैलो चुना गया और राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त किया गया। भारत सरकार ने इनकी उपलब्धियाँ को ध्यान में रखते हुए इन्हें पदमभूषण से सम्मानित किया। सन् 1974 में बोस के सम्मान में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने एक अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें देश-विदेश से कई वैज्ञानिक सम्मिलत हुए। इस अवसर पर सत्येन्द्र नाथ बोस ने कहा --“यदि एक व्यक्ति अपने जीवन के अनेक वर्ष संघर्ष में व्यतीत कर देता है और अंत में लगता है कि उसके कार्य की सराहा जा रहा है तो फिर वह व्यक्ति सोचता है कि अब उसे और जीने की आवश्यकता नहीं हैं।” कुछ दिनों बाद 4 फरवरी 1974 को हृदयगति रूप जाने से इस महान वैज्ञानिक का निधन हो गया। सत्येन्द्र नाथ बोस को नोबल पुरस्कार न दिया जाना सचमुच आश्चर्यजनक है क्योंकि जिस व्यक्ति की मेघा को आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक ने न सिर्फ स्वीकारा बल्कि उसके साथ अपना नाम भी जोड़ा। बोस आइंस्टीन सांख्यिकी पर आधारित नई वैज्ञानिक खोजों के लिए अब तक दुनिया भर के 21 वैज्ञानिकों को भौतिकी का नोबल पुरस्कार दिया जा चुका है।

संदर्भ - साइटिफिक वर्ल्ड ISSN 23943734



भूमण्डलीय तापन

कु. ऋचा तंवर (एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (भूगोल))

वायुमण्डल में मानव जनित कार्बन डाइआक्साइड के आरबण प्रभाव के कारण पृथ्वी की सतह के प्रगामी तापन को हरित गृह प्रभाव कहते हैं।

- आक्सफोर्ड शब्द कोश

विगत दो शताब्दियों में वायु मण्डल में कार्बन डाइआक्साइड की भारी वृद्धि हुई है। वर्तमान में वैज्ञानिक इस बात से चिन्तित है कि कार्बन डाइआक्साइड और अन्य गैसों की मात्रा में हो रही वृद्धि से पृथ्वी की जलवायु भी बदल सकती है। सामान्यतः सूर्यताप की जितनी मात्रा वायुमण्डल में प्रवेश करती है, भू-पृष्ठीय ऊर्जा के रूप में पुनः विकरित होती है और अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाती है। किन्तु कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा में वृद्धि होने से वायुमण्डल में एक मोटा गैसीय आवरण विकसित हो जाता है, जिससे सौर ऊर्जा का अधिकांश अंश वायुमण्डल में प्रवेश

कर जाता है, परन्तु पार्थिव विकिरण, वायुमण्डल में विद्यमान गैसीय आवरण के द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है।

वायुमण्डल में कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वायुमण्डल का तापमान बढ़ते जाता है, इसे वायुमण्डल तापन या हरित गृह प्रभाव की संज्ञा दी जाती है।

शीत प्रदेशों में जहाँ पर सदी में पर्याप्त सूर्यताप का अभाव होता है, खासकर फलों एवं सब्जी के पौधों के लिये हरित गृह का प्रयोग किया जाता है। इन हरित गृहों के शीर्षों इस तरह के होते हैं कि उनसे होकर सौर्यिक प्रकाश अन्दर पहुँच जाता है, परन्तु इन गृहों से दीर्घ तरंगे बाहर निकल नहीं पाती है। इस कारण से हरित गृह में उष्मा का लगातार संचय होता रहता है। इस समस्त प्रक्रिया के परिणाम को हरित गृह प्रभाव कहते हैं।

भू-मण्डलीय तापन के प्रमुख स्रोत :

कार्बन डाइऑक्साइड सर्वाधिक महत्वपूर्ण हरित गैस गृह गैस है। मनुष्य द्वारा विभिन्न उद्देश्यों के लिये कोयला, खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैसों के जलाये जाने पर कार्बन डाइऑक्साइड का वायुमण्डल में प्रवेश होता है। फलतः वायुमण्डल में भण्डारण होने से कार्बन डाइऑक्साइड का सान्द्रण बढ़ता जाता है। छत्तीसगढ़ के कोरबा में ताप विघुत गृह से विसर्जित, कार्बनडाई आक्साइड गैसों से, वायुमण्डल में सान्द्रण बढ़ रहा है।

विकसित एवं विकासमान राष्ट्रों में असंख्य कल-कारखानों में कोयला एवं खनिज तेल के उपयोग से, मानव जनित ज्वालामुखी का जनन होता है, इन चिमनियों से, भारी मात्रा में कार्बनडाई-आक्साइड वायुमण्डल को प्राप्त होता है।

कोयले एवं डीजल से चलित रेलें, ट्रक, मोटरकार, स्कूटर, मोटर साईकिल, पेट्रोल चलित वायुयानों, डीजल चलित कृषि वाहनों तथा उपकरणों से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा वायुमण्डल में प्रवेश करती है।

कार्बन डाइऑक्साइड का चौथा प्रमुख स्रोत घरेलू उपयोग हेतु ईंधन के लिये जलाई जाने वाली लकड़ियाँ हैं? वन विनाश से वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जाती है।

वनों एवं मिट्टियों में अनुमानतः 3000 बिलियन टन कार्बन भंडार है। पौधों के विघटन से तथा पौधों को जलाने पर पौधों में निहित कार्बनडाई-आक्साइड गैसें नियुक्त होती है। यह उल्लेखनीय है कि वनस्पतियाँ कार्बन-डाइऑक्साइड गैस का अवशोषण भारी मात्रा में करती है। वनस्पतियाँ अपना आहार प्रकाश संश्लेषण क्रिया से करती हैं। यदि कृषि क्षेत्रों में विस्तार, नहर एवं उद्योगों का विस्तार, व्यापारिक एवं आर्थिक उद्देश्यों के लिये वनों की वृहद स्तर पर बेतहासा कराई की जाती है तो वायु मण्डल में कार्बन डाइ-आक्साइड की मात्रा बढ़ती जायेगी।

1860 ई. से वर्तमान समय तक कोयला, खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैस के उपयोग से 150 से 180 बिलियन टन कार्बन वायु-मण्डल में गैसीय रूप में पहुँच चुकी है।

क्लोरोफ्लूरोकार्बन गौण हरितगृह व गैसे हैं, इन गैसों का वायुमण्डल में प्रवेश -- रेफ्रीजरेटर, वातानुकूलक, अग्नि शामक उपकरणों, प्रसाधन सामग्रियों, प्लास्टिक फोमों के उपयोग से होता है।

1860 ई. के पूर्व वायुमण्डल में कार्बन डाइ-आक्साइड का सांद्रण 280 से 290 भाग प्रति मिलियन था। 1860 से 1988 के मध्य वायुमण्डल में इसकी मात्रा बढ़कर 350 से, 360 भाग प्रति मिलियन हो गया। इस तरह 1860 से 1980 तक वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। कार्बन डाइ-ऑक्साइड की यह वृद्धि मानव जनित स्रोतों से हुई है।

विश्व में जीवाश्म ईंधनों के उपयोग की प्रवृत्तियाँ -

1. संयुक्त राज्य अमेरिका के टेनेसी प्रान्त में स्थित ऑक्सिजनेशनल लेबोरेटरी की रपट :-

संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, एकीकृत जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस और जापान आदि देश सर्वाधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड गैस वायुमण्डल में उत्सर्जन करते हैं। विश्व स्तर पर कार्बन डाइ-ऑक्साइड के उत्सर्जन में 1950 तक विकासमान राष्ट्रों का योगदान नगण्य था। क्योंकि इन देशों में औद्योगिकरण की रफ्तार अत्यन्त मंद है। 1950 ई. तक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन करने वाले राष्ट्रों में भारत का स्थान 13 वाँ था।

2. विकासमान राष्ट्रों में 1950 ई. के बाद से औद्योगिकरण की प्रक्रिया में तेजी आयी है और 1986 के बाद कार्बन-डाइऑक्साइड गैस के उत्सर्जन प्ररूपों में भारी परिवर्तन हुआ है। जीवाश्म ईंधनों के जलने से उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड की कुल मात्रा में अतिविकसित औद्योगीकृत देशों के सापेक्ष योगदान में हास हुआ है, परन्तु विकासमान राष्ट्रों के सापेक्ष योगदान में वृद्धि हुई है।

भूमण्डलीय तापन का प्रभाव तथा जलवायु परिवर्तन :

भूतल पर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि से उष्मा असंतुलित हो जाती है, परिणामतः जलवायु परिवर्तन की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। कार्बन डाइ-आक्साइड प्रवेशी सौर्यिक विकिरण को धरातल तक आने देती है, परन्तु पार्थिव बर्हिंगामी दीर्घ तरंग को अवशोषित कर

लेती है, परिणामतः धरातल तथा सम्यकीय वायुमण्डल गर्म हो जाता है। यह उल्लेखनीय है कि जीवाश्म ईंधनों के जलने से उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड की कुल मात्रा का 50 प्रतिशत, सागर तथा महासागरों के द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है और शेष 50 प्रतिशत का भण्डारण वायुमण्डल में होता रहता है, परिणामतः हरित गृह प्रभावी हो जाता है।

ए.बी. पिटोक (1972) के अनुसार गृह प्रभाव के कारण विश्व स्तर पर औसत तापमान में कुछ अंश सेन्टीग्रेड की वृद्धि होने से मानव समुदाय तथा कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

तापमान में वृद्धि के कारण वर्षण तथा मृदा में नमी की कमी होगी, परिणामतः विकासमान राष्ट्रों की कृषि व्यवस्था प्रभावित होगी, यद्यपि पौधे, जीव-जन्तु परिवर्तित जलवायुगत दशाओं के साथ समायोजन कर सकते हैं, परन्तु समस्त पारिस्थितिक तंत्रों को बहुत अधिक नुकसान होगा।

महासागरीय जल की अम्लता बढ़ जायेगी जिस कारण सागरीय पारिस्थितिक तंत्र की उष्मापादकता में भारी कमी होगी।

हरित गृह प्रभाव के कारण तापमान में वृद्धि होने से सागर तल में 2050 ई. तक एक मीटर की वृद्धि होगी। सागर तल में इस वृद्धि के कारण बंगलादेश के डेल्टाई प्रदेश

का एक बड़ाभाग जलमान हो जायेगा, परिणामतः एक करोड़ लोगों को अपने कृषि क्षेत्रों एवं घरों से हाथ धोना पड़ेगा।

यदि वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड का सान्द्रण अधिक बढ़ जायेगा तो वायुमण्डलीय दाब में भी वृद्धि हो जायेगी।

यह विश्वास किया जाता है कि हरित गृह प्रभाव के कारण समताप मण्डलीय ओजोन में क्षय तथा अल्पता की प्रक्रियायें और तेज हो जायेगी।

यह विश्वास किया जाता है कि हरित गृह प्रभाव के कारण समताप मण्डलीय ओजोन में क्षय तथा अल्पता की प्रक्रियायें और तेज हो जायेगी।

सुरक्षा के उपाय :

हरित गृह गैसों में वृद्धि के कारण हरित गृह प्रभाव में वृद्धि तथा उससे होने वाले तापमान में वृद्धि से बचने के लिये निम्नांकितक उपाय को अतिशीघ्र अमल में लाया जाना चाहिए।

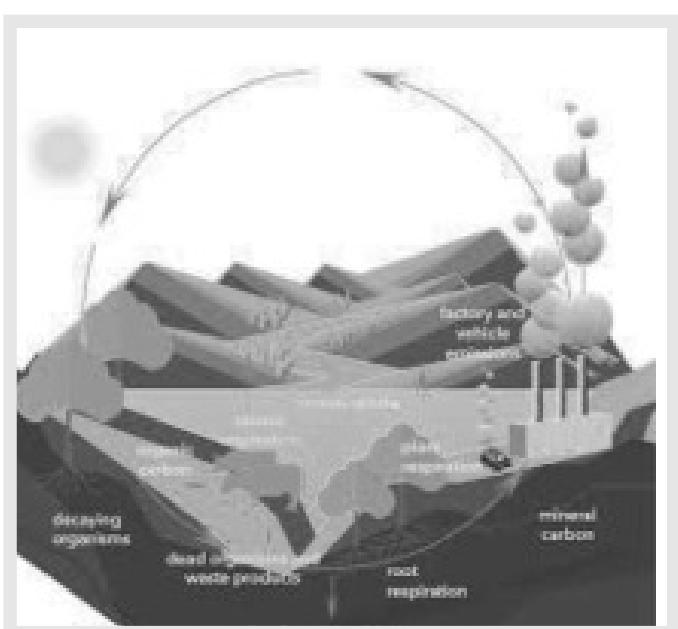
विश्व के विकसित एवं अति औद्योगिकृत देशों में जीवाश्म ईंधनों के उपयोग में भारी कटौती की जानी चाहिए। टोरेन्टो विश्व सम्मेलन में 2005 ई. तक कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में 50 प्रतिशत कटौती करने के लिये आग्रह किया गया था।

जीवाश्म ईंधनों के प्रतिस्थापना की शीघ्र खोज की जानी चाहिए।

वर्तमान प्रौद्योगिकी के स्थान पर अति विकसित प्रौद्योगिकी का विकास किया जाना चाहिए। जिससे जीवाश्म ईंधनों के अधिकतम ऊर्जा की प्राप्ति हो सके।

उष्ण एवं उपोष्ण कटिबन्धीय देशों में सौरिक्य ऊर्जा को परम्परागत जीवाश्म ईंधन के स्थान पर वैकल्पिक ऊर्जा के रूप में वृहद पैमाने पर विकसित किया जाना चाहिए।

वृहद पैमाने पर वृक्षारोपण द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड के हरित गृह प्रभाव में कमी आयेगी।





हरित क्रांति का प्रभाव

प्रो. आई. एस. चंद्राकर, (प्राध्यापक भूगोल),

कु. अंजली देशमुख, (एम.ए. तृतीय सेमेस्टर)

पृष्ठ भूमि :

भारत में हरित क्रान्ति का आरम्भ 1960 में हुआ। यह विपुल उत्पादन देने वाले बीजों के साथ आरम्भ हुआ। उस समय देश की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी। प्रमुख उद्योग मंदी के शिकार हो गए थे, बेरोजगारी बहुत बढ़ गई थी, देश खाद्यान्नों के आधात के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका पर बहुत ही निर्भर हो गया था। जिसके लिए उसे राजनयिक कीमत चुकानी पड़ती थी। विश्व में भी अनिश्चितता का वातावरण था। खाद्यान्न-अधिक्य वाले देश, खाद्यान्न कमी वाले देशों की आवश्यकता को कहाँ तक पूरा कर सकते थे। उसी समय पाठाक बंधुओं का यह विचार भी प्रकाशित हुआ कि सन् 1975 तक विश्व के विभिन्न भागों में भयंकर अकाल आ सकते हैं

और इन लोगों ने भारत को सबसे अधिक प्रभावित होने वाले देशों की सूची में रखा। फलतः विश्व बाजार में स्थितियाँ भारत के प्रतिकूल हो गई। ऐसी दशा में भारत को खाद्य वस्तुओं के उत्पादन में आत्म निर्भरता प्राप्त करने का प्रयास करने के अलावा कोई भी विकल्प नहीं रहा। खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के दो रस्ते हो सकते थे। एक खाद्यान्नों के अन्तर्गत क्षेत्रफल बढ़ाकर अथवा प्रति हेक्टेयर उपज बढ़ाकर, क्षेत्र विस्तार की संभावनाएं क्षीण थी क्योंकि सभी कृषि योग्य भूमि पर कृषि का विस्तार हो चुका था, और तीन चौथाई से अधिक कृषित भूमि खाद्यान्नों के अंतर्गत थी, इस कारण केवल एक ही विकल्प रह जाता था कि भूमि की उत्पादकता बढ़ाई जाये। इस पृष्ठभूमि में भारत में हरित क्रान्ति का शुभारम्भ किया गया।

सर्वप्रथम प्रयोग :

हरित क्रांति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अमेरिकी विद्वान डॉ. विलियम गाड ने किया था। भारत में कृषि क्रान्ति का आशय पारम्परिक कृषि व्यवस्था के स्थान पर वैज्ञानिक कृषि व्यवस्था का प्रतिस्थापन है। इसका आधार शैक्ष-पेलर फाउण्डेशन (मेक्सिको) के विद्वानों ने रखा। 1950 ई. में गेहूँ के विपुल उत्पादन देने वाले बीजों को विकसित करना था और जो चिरसम्मत उत्पादन के स्थान पर विपुल उत्पादन प्राप्त हो सके। नए बीज ऋतुगत परिवर्तनों को बर्दाशत कर सकते थे। फसले तैयार हो जाती थी और रासायनिक उर्वरकों को ग्रहण कर सकते हैं। इस योगदान के कारण

जो इस कार्यक्रम के निर्देशक थे, उन्हें

1970 ई. में नोबल पुरस्कार से

नवाजा गया। 1960 ई. के दौरान

रॉकपेलर फाउण्डेशन -

अन्तर्राष्ट्रीय चावल शोध

संस्थान, मनीला,

(फिलीपाइन्स) ने चावल

का विकसित बीज इजाद

किया। चावल का यह

नाल इण्डोनेशिया और

ताइवान किस्मों के संयोग से

तैयार किया गया। गेहूँ एवं

चावल के विपुल उत्पादन देने

वाले बीज हरित क्रान्ति के पथ

प्रदर्शक बन गए।

भारत में हरित क्रान्ति :

भारत में विपुल उत्पादन करने वाले बीजों की किस्मों का शुभारम्भ 1966-67 में हुआ गेहूँ के बीज मेक्सिको में विकसित किये गए थे, जो कि बौना प्रजाति के थे, सर्वप्रथम 1959 में फोर्ड राउण्डेशन के कृषि विशेषज्ञों के समूहों को आंमत्रित किया गया, जिन्होंने भारतीय कृषि की दशा सुधारने अप्रैल 1959 में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। परिणामतः देश के सात जिलों में सघन कृषि कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। आंध्रप्रदेश में पश्चिमी गोदावरी। बिहार में शाहाबाद, मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़ में रायपुर, तमिलनाडू में तनजाऊर, पंजाब में लुधियाना, राजस्थान में पाली एवं उत्तरप्रदेश में अलीगढ़ जिले के सघन कृषि कार्यक्रम के द्वारा खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए पैकेज कार्यक्रम रखा गया। किसानों को उन्नत किस्म के बीज, रासायनिक खाद, कृषि

औजार खरीदने के लिये, कृषि ऋण की सुविधा दी गई, यह कार्यक्रम की चुनिन्दा जिलों में प्रारम्भ कर देश के अन्य क्षेत्रों को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लाना था।

भारत में हरित-क्रान्ति पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गेहूँ उगाने वाले क्षेत्रों में प्रारम्भ हुआ, परन्तु 1983 ई. तक इस कार्यक्रम के अन्तर्गत - बिहार, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडू राज्यों को सम्मिलित किया गया।

हरित क्रान्ति के प्रभाव से गेहूँ का उत्पादन 123 लाख टन (1964-65) रसे 470.5 लाख टन (1985-86) तथा 551.3 लाख टन (1990-91), वर्तमान (1999-2000) उत्पादन 675.6 लाख टन हो गया।

यह उत्पादन गेहूँ के प्रति हेक्टेयर अतिरिक्त

उत्पादन का प्रतिफल था। 1964-65

में गेहूँ का प्रति हेक्टर उत्पादन 916 कि.ग्रा. था जो 1990-91 में बढ़कर 2281 कि.ग्रा./हेक्टेयर (149 प्रतिशत वृद्धि हो गया। पंजाब में गेहूँ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन राष्ट्रीय उत्पादन की तुलना में अधिक है। (2046 कि.ग्रा/हे. 1985-86)

1966-67 में विपुल

उत्पादन के अन्तर्गत देश के सिर्फ

4.2 प्रतिशत गेहूँ के क्षेत्र सम्मिलित थे।

1970-71 में इसके अन्तर्गत क्षेत्र बढ़कर 35

प्रतिशत 1973-74 में 57 प्रतिशत, 1985-86 में 82.7 प्रतिशत, 1990-91 में 84.7 प्रतिशत और 1995-96 में 90.6 प्रतिशत क्षेत्र इसके अन्तर्गत सम्मिलित हो गया। 1965-66 से 1998 से 1998-99 के मध्य गेहूँ के उत्पादन में छः गुण वृद्धि के लिये विपुल उत्पादन वाले बीजों की मुख्य भूमिका रही है।

गेहूँ खाद्यान्न के पश्चात हरित क्रान्ति का प्रभाव चावल की कृषि क्षेत्रों में देखा गया। 1966-67 में चावल के कुल क्षेत्रफल में सिर्फ 2.5 प्रतिशत क्षेत्र, विपुल उत्पादन के अन्तर्गत लाया गया। यह क्षेत्र बढ़कर 1970-71 में 14.9 प्रतिशत, 1980-81 में 45.4 प्रतिशत, 1990-91 में 64.2 प्रतिशत तथा 1995-96 में 77.4 प्रतिशत हो गया। परिणामतः चावल का उत्पादन 1965-66 में 306



लाख टन से बढ़कर 1980-81 में 536 लाख टन तथा 1998-99 में 860 लाख टन हो गया। 33 वर्षों में 18 प्रतिशत की वृद्धि लिपिबद्ध की गई। इसी तरह 1965-66 में चावल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 862 कि.ग्राम से बढ़कर 1998-99 में 1747 कि.ग्रा. हो गया। 33 वर्षों में यह 103 प्रतिशत वृद्धि प्रदर्शित करता है।

हरित क्रान्ति मोटे अनाज के क्षेत्रों में कम प्रभावशील हैं 1970-71 ई. में मक्का के अन्तर्गत 8.5 प्रतिशत क्षेत्र, ज्वार के अन्तर्गत 4.6 प्रतिशत क्षेत्र, बाजरा के अन्तर्गत 15.5 प्रतिशत क्षेत्र विपुल उत्पादन के अन्तर्गत थे। 1995-96 में इसके क्षेत्र बढ़कर क्रमशः 58.3, 78.9 तथा 73.4 प्रतिशत हो गये। 1965-1999 में इन फसलों का प्रतिशत उत्पादन बढ़कर मक्का (131) ज्वार (10) एवं बाजरा (89) हो गये। विगत 33 वर्षों में दलहन खाद्यान्न का उत्पादन सदैव स्थिर रहा है।

यह विषय गहन अध्ययन की तरफ इंगित करता है कि भारत में भोज्य पदार्थों में प्रोटीन की कमी होती है।

1987-88 तक तिलहन फसलों का विपुल उत्पादन नहीं प्राप्त किया जा सका। भारतीय प्रायद्वीप के वृष्टिशाया बाले क्षेत्रों में सूरजमुखी की कृषि पर एकाएक प्रसार हुआ है।

भारतवर्ष की कृषि में हरित क्रान्ति के प्रभाव को निम्नानुसार सक्षेपित किया जा सकता है, यथा -

1. हरित क्रान्ति सघन कृषि विकास का घोतक है। इस कार्यक्रम से तीव्र दर से विकास होता है, परिणामतः देश खाद्यान उत्पादन में आत्म-निर्भर हो जाता है।
2. हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतीय पारम्परिक कृषि व्यवस्था बाजारोन्मुख तथा व्यापारिक कृषि की ओर अग्रसर हो रही है।
3. हरित क्रान्ति के क्षेत्रों में उन्नत तकनीक के प्रयोग से कृषि क्षेत्र में रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त हुए हैं।

4. हरित क्रान्ति से कृषि एवं उद्योग के सम्बन्ध मजबूत हुए हैं, फलतः अग्रकड़ियों के साथ पश्च कड़ियाँ मजबूत हुई हैं।

5. कृषि निवेश बढ़ जाने से कृषि उत्पादन अधिक होने लगा है।

6. इस व्यवस्था के अन्तर्गत कृषकों ने कृषि क्षेत्र में नवीकरण को स्वीकार किया है।

7. हरित क्रान्ति से ग्रामीण क्षेत्रों में खुशहाली आई है।

उपरोक्त सकारात्मक पक्षों के विपरीत नकारात्मक पक्ष कम नहीं है, यथा ---

1. हरित क्रान्ति से देश में पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था का विस्तार होता है।

2. कृषक परिवारों में असमानताएं बढ़ी है, यह असमानताएं ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक दिखालाई देती है।

3. नई व्यूह-रचना से भारती कृषि में संस्थागतक पुनः रचना आवश्यक हो गई है।

4. हरित क्रान्ति के परिणाम स्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में --- बढ़े छोटे कृषकों के बीच, भू-स्वामी - किरायेदार के बीच एवं श्रमिक - नियोक्ता के बीच झगड़े बढ़े हैं।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में वृहद स्तर पर जनप्रवास बढ़ा है, जो बेरोजगारी को दर्शाती है।

6. वर्तमान अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि कृषि क्रान्ति के फलस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन स्थिर हो गया है या उत्पादन हासमान प्रवृत्ति को प्रदर्शित करता है।

7. हरित क्रान्ति का प्रभाव गेहूँ, चावल, मक्का एवं बाजरा जैसे खाद्यान फसलों में सर्वाधिक देखा जा सकता है। परन्तु दलहन, तिलहन जैसी मुद्रा दायिनी फसलों में तथा चारे की फसलों के हरित क्रान्ति का प्रभाव नगण्य है।

8. हरित क्रान्ति के बेअसर होने की व्याख्या करते हुए लेसर ब्रॉन और हॉकिन ने अपनी पुस्तक फुल हाऊस में



भविष्यवाणी की है कि 2030 तक भारत को 40 मिलियन टन खाद्यान्व वार्षिक आयात करना होगा। यह आयात 1966 की तुलना में चार गुना होगा।

7. वृहद फर्मों में, हरित क्रान्ति के प्रकाश में, नई तकनीक के प्रयोग से मानव श्रम बेकार हुआ है। भूमिहीन श्रमिक अधिक प्रभावित हुए हैं परिणामतः महानगरों में गंदी बस्तियों का विस्तार तथा सामाजिक-आर्थिक तनाव बढ़े हैं।

नया विकल्प :

हरित क्रान्ति के विकल्प निम्नांकित हैं, यथा --

1. कृषि के नए क्षेत्रों में हरित क्रान्ति प्रचलित होनी चाहिए। विपुल उत्पादन देने वाले बीजों की खोज, सूक्ष्म परिस्थिकीय दशाओं के अनुरूप होनी चाहिए। ये क्षेत्र मोटे अनाज, दलहन, तिलहन एवं मुद्रादायिनी फसलों के क्षेत्र हो सकते हैं।

2. वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप दलहन तथा तिलहन फसलों का अधिकाधिक उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

3. विकासमान राष्ट्रों में जिसमें भारत एक है अति जनसंख्या से पीड़ित है, कृषि क्षेत्र में मानव श्रम के साथ हरित क्रान्ति का आगमन होना चाहिए।

4. हरित क्रान्ति को अधिक प्रभावी बनाने कृषि क्षेत्र में नई व्यूह रचना की आवश्यकता है। यह व्यूह खना कृषि जलवायु प्रदेश एवं कठित प्रदेश की वातावरणीय दशाओं के अनुरूप होनी चाहिए।

5. सिंचाई हेतु जल प्रबंधन की नई नीतिकी आवश्यकता होगी। सिंचाई कार्य हेतु ड्रिप-सिंचाई विधि को वरीयता दी जानी चाहिए। जिससे फसलों की खेती में कम से कम जल की खपत हो।

6. रासायनिक उर्वरक के स्थान पर कम्पोस्ट खाद का अधिकाधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। हरी खाद प्रचलित होनी चाहिए।

7. शुष्क क्षेत्रों में भी हरित क्रान्ति आनी चाहिए। भारत में लगभग 70 प्रतिशत क्षेत्र शुष्क कृषि के अधीन हैं।

8. कृषि की नई तकनीक से जैव विविधता बढ़ाइ जानी चाहिए।

9. सहकारी समितियों की भूमिका व्यापक होनी चाहिए। समितियाँ कृषकों को न केवल कृषि ऋण प्रदान करें, बल्कि किसानों को किराये पर कृषि उपकरण उपलब्ध कराये।

10. कृषि उत्पादों के लिये सन्तुलित मूल्य नीति अपनायी जानी चाहिए। कृषि लाभदायक हो तथा अधिकाधिक निवेश को आकर्षित करें।

11. डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन जो हरितक्रान्ति के पिता माने जाते हैं, पंजाब के बारे में विचार है कि नई कृषि क्रान्ति की दिशा में संरचनात्मक सुधार होनी चाहिए। संरचनात्मक सुधार के अन्तर्गत - भूमि सुधार, काश्तकारी में सुधार, ग्रामीण यातायात एवं संवादवाहन, ग्रामीण विद्युतीकरण, ऋण प्रशिक्षण एवं कृषि क्षेत्र में सतत् शोध महत्वपूर्ण हैं।



2018-19

शताब्दी स्मरण

2018-19 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है। उन्हें स्मरण करने का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है। हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है। इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं।

2018-19

कैफी आज़मी



कैफी आज़मी

14 जनवरी 1919 - 10 मई 2002

कैफी आज़मी का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में मिजांग ग्राम में 14 जनवरी 1919 को हुआ था। उनका मूल नाम अब्दुर हुसैन रिज़वी था। कैफी तखल्लसुस करते थे। उडू के प्रसिद्ध प्रगतिशील शायर और गीतकार हैं। उन्होंने लखनऊ और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई और उडू, अब्दी और फ़ारसी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। कैफी का ख्वानदान एक जर्मीदार खुशहाल खननदान था। कैफी जब कानपुर आए उस वक्त मजूदरों का आनंदोलन जोरों पर था, कैफी उस आनंदोलन से सम्बद्ध हो गये। कैफी को कानपुर की फ़िज़ा बहुत रास आयी। वहाँ उन्होंने कार्त्त मार्कर्ट के साहित्य का बहुत गहराई से अध्ययन किया। छोटी उम्र में ही वे शायरी करने लगे थे। 1951 में वे फ़िल्मों से जुड़े। कैफी आज़मी ने कहानी लेखक के रूप में फ़िल्मों में प्रवेश किया। यहाँ की बेटी और 'ईद का चाँद' उनकी लिखी आरम्भिक फ़िल्में थीं। उन्होंने हीर रंगा, मंथन और गर्म हवा फ़िल्मों का लेखन किया। उन्होंने गर्म हवा और मंथन जैसी फ़िल्मों में संवाद भी लिखे। शाहिद लतीफ़ की फ़िल्म 'बुज़दिल' में उन्होंने पहली बार गीत लिखे। बाद में उन्होंने अनेक फ़िल्मों के गीत लिखे जिनमें कुछ प्रमुख हैं - 'काशज के फूल', 'हकीकत' 'हिन्दुस्तान की कसम' 'हसते ज़ख' 'आखरी खत' और 'हीर रंगा'। कैफी आज़मी ने सईज मिर्ज़ा की फ़िल्म नसीम (1997) में अभिनय किया। यह किरदार पहले दिलीप कुमार निभाने वाले थे। वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे और तात्प्र प्रगतिशील अंदोलन से जुड़े रहे। मशहूर अभिनेत्री शबाना आज़मी और बाबा आज़मी इनकी दो संतानें हैं।

संग्रह : कैफी आज़मी का पहला संग्रह 'झंकार' 1943 में आया। कैफी आज़मी की नस्तों और गज़लों के चार संग्रह हैं :- 1. झंकार 2. अखिर-शब 3. आवार संजदे 4. इब्लीस की मजिलसे शूरा। इसके अलावा लेखों के भी संग्रह हैं।

सम्मान और पुरस्कार - 1975 में कैफी आज़मी को आवरा सज्जदे पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और सेवियत लैंड नेहर अवार्ड से सम्मानित किया गया। फ़िल्म सात हिन्दुस्तानी (1969) के लिए सर्वश्रेष्ठ गीतकार के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1975 में गरम हवा फ़िल्म के लिए फ़िल्म फ़ेयर पुरस्कार दिया गया। उन्हें 1974 में पदाधी सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्रभाकर 09425506574

मजरूह सुल्तानपुरी

मजरूह सुल्तानपुरी
1 अक्टूबर 1919- 24 मई 2000

मजरूह सुल्तानपुरी का जन्म उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर शहर में 1 अक्टूबर 1919 को हुआ था। वे प्रामाणिक आंदोलन से जुड़े रहे। अपनी वामपंथी विचारधारा के कारण मजरूह सुल्तानपुरी को कई कठिनाइयों का सापना करना पड़ा। यहां तक कि इसके कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। मजरूह सुल्तानपुरी को सरकार ने सलाह दी के अगर वे माफी मांग लेते हैं, तो उन्हें जेल से आजाद कर दिया जाएगा, लेकिन मजरूह सुल्तानपुरी इस बात के लिए राजी नहीं हुए और उन्हें दो वार्ष के लिए जेल में दिया गया। लगभग दो वर्ष तक जेल में रहने के बाद मजरूह सुल्तानपुरी ने एक बार फिर से नए जोशो-ख्येश के साथ काम करना शुरू कर दिया। बचपन के दौरान से ही मजरूह सुल्तानपुरी को शेख-शायरी करने का कामपी शौक था और वे अवसर सुल्तानपुरी में ही है मुशायरों में विस्ता लिया करते थे। मुशायरों और महाफिलों में मिलनी शोहरत तथा कामयाबी ने एक यूनानी छक्कीम असगरूल हप्तन खान को फिल्म जगत का एक अजीम शायर और संगीतकार मजरूह सुल्तानपुरी बना दिया। एक मुशायरे में हिस्सा लेने मजरूह सुल्तानपुरी मुबर्दू आए थे तब मशहूर ने मार्ता ए.आर.कारदार ने अपनी फिल्म के लिए गीत लिखने की पेशकश की। मजरूह सुल्तानपुरी ने कारदार साहब की इस पेशकश को उकड़ा दिया क्योंकि फैलमों के लिए गीत लिखना वे अच्छी बात नहीं समझते थे। फिर जिगर मुगदाबादी की सलाह पर मजरूह सुल्तानपुरी फिल्म में गीत लिखने के लिए राजी हो गए। इसके बाद मजरूह सुल्तानपुरी और संगीतकार नौशाद की सुपरहिट जोड़ी ने 'अंदाज़', 'सारी', 'पाकीजा', 'तांगेवाला', 'धर्मकाटा' और 'गुड़इू' जैसी फैलमों में एक साथ काम किया। मजरूह सुल्तानपुरी ने चार दशक से भी ज्यादा लंबे सिने करियर में लगभग 300 फिल्मों के लिए लगभग 4000 गीतों की रचना की। मजरूह सुल्तानपुरी के सिने करियर में उनकी जोड़ी संगीतकार एस.डी.बर्मन के साथ भी खूब जानी। एस.डी.बर्मन और मजरूह सुल्तानपुरी की जोड़ी वाली फैलमों में 'पेंग गेस्ट' 'नौ दो घ्यारह', 'सोलवां साल', 'काला पानी', 'चलती का नाम गाड़ी', 'मुजाता', 'बंबई का बाबू', 'बात एक गत की', 'तीन देवियाँ', 'जैलथीफ' और 'अभिमान' जैसी सुपरहिट फिल्में शामिल हैं।

सम्मान और पुरस्कार- वर्ष 1993 में उन्हें फिल्म जगत के सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' से नवाजा गया।



नौशाद



नौशाद

25 दिसम्बर, 1919 - 5 मई 2006

हिन्दी फ़िल्मों के प्रतिष्ठित व सुप्रसिद्ध संगीतकार नौशाद का मूल नाम नौशाद अली था। उन्हें संगीत से लगाव बचपन में ही हो गया था। नौशाद का घर लखनऊ के अकबरी गेट के कांधरी बाजार, झंवाइ टोला में था। वे उस्ताद उमर अंसारी से संगीत सीखने लगे, इस बात से उनके बालिद नाराज रहते थे। अंत में बात यहाँ तक ही गई कि बालिद ने कह दिया कि अगर संगीत को अपनाऊंगे तो घर छोड़ दो। मैट्रिक पास करने के बाद लखनऊ के बिंदसर एंटरनेनमेंट्स क्लिकल ग्रुप के साथ दिल्ली मुगदबाद, जयपुर, जोधपुर और सिरोही की यात्रा पर निकले। जब कुछ समय बाद वह यूजिकल ग्रुप विदेश गया। नौशाद का मन तो पूरी तरह संगीत में बसता था। नौशाद बहुत कम उम्र में लखनऊ से मुबांद चले गये। चौथे दशक के में वे फ़िल्मों से जुड़े। आरंतब है कि लगभग 65 साल तक अपने साज संगीत का जादू बिखरते रहने के बावजूद नौशाद ने केवल 67 फ़िल्मों में ही संगीत दिया, लेकिन उनका कौशल इस बात की जीती जागती मिसाल है कि गुणवत्ता संख्याबल से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। सन् 1940 से 2006 तक उन्होंने अपनी संगीत का सफर जारी रखा। उन्होंने अंतिम बार 2006 में बनी ताजमहल के लिये संगीत दिया। संगीत के अलावा नौशाद उर्दू शायरी, नज़म व ग़ज़लें भी लिखते रहे। संग्रह- उर्दू नज़में, शायरी व ग़ज़ल संग्रह आठवां सुर।

सम्मान और पुरस्कार - सन् 1954 में बैजू बावरा फ़िल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार - 1982 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार - 1984 में लता मंगेशकर सम्मान - 1984 में अपीर खुसरो पुरस्कार महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार तथा संगीत में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिये 1982 में प्रतिष्ठित दादा साहेब फ़ालके अवार्ड के साथ साथ उन्हें भारत सरकार ने पद्म भूषण सम्मान से नवाचा।

अमृता प्रीतम

अमृता प्रीतम

31 अगस्त 1919 - 31 अक्टूबर, 2005

प्रसिद्ध कवियत्री, उपन्यासकार और निबंधकार अमृता प्रीतम का जन्म गुजरातीवाला पंजाब (पाकिस्तान) में अगस्त 1919 को हुआ था। बचपन लाहौर में बीता और शिक्षा भी वहीं पर हुई। इहोंने पंजीयनी में लेखन से शुरूआत की और किशोरावस्था से ही कविता, कहानी और निबंध लिखना शुरू किया। इनकी रचनाओं में महिला पत्रों की पीड़ा और वैवाहिक जीवन के कटु अनुभवों का अहसास को महसूस किया जा सकता है। विभाजन की पीड़ा को लेकर इनके उपन्यास पिंजर पर एक फिल्म भी बनी थी, जो काफी चर्चा में रही। अमृता प्रीतम ने लगभग 100 पुस्तकें लिखीं और इनकी काफी रचनाएं विदेशी भाषाओं में भी अनूदित हुई हैं।

उपन्यास, रसीदी टिकट (आत्म कथा), पिंजर, पांच बरस लंबी सड़क, कोरे कागज, सीपियां आदि

संस्मरण - कच्चा अंगन, एक थी सारा, अशरों के साए

कहानी संग्रह - सत्रह कहानियाँ, सात सौ बीस कदम, दो-खिड़कियाँ, चूहे और आदमी में फर्क, ये कहानियाँ जो कहानियाँ नहीं हैं। आदि पंजाबी से हिन्दी में अनुदित संग्रह

कविता संग्रह : -लोक पीड़, मैं जमा तूलमिया वतन, कस्तूरी कागज ते कैनवास सहति लगभग 18 कविता संग्रह

सम्मान और पुरस्कार - साहित्य अकादमी पुरस्कार (1956), बलगारिया वैरोच पुलस्कार (बुलगारिया - 1988), भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982), डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (विश्व भारती शांतिनिकेतन - 1987), फ्रांस सरकार द्वारा सम्मान (1987)। भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री (1969) व पद्म विभूषण (2004) से भी सम्मानित किया।

